CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

B-1

॥ श्रीः ॥

राशरस्मृतिः

(धर्मशास्त्रम्)

डितवरश्यामसुन्दरलालत्रिपाठिकृतया

भाषाटीकया समेता.

पं० प्रेम दत्त शर्मा
जहांगीराबाद
बुलन्दशहर (उ०प्र०)

सेयं

मुम्बय्यां

क्षेमराजश्रीकृष्णदासश्रेष्ठिना

स्वीये "श्रीवेङ्कटेश्वर" (स्टीम्) मुद्रणालये

मुद्रयित्वा प्रकाशिता।

कृते तु मानवा धर्मास्त्रेतायां गौतमाः स्मृताः।
द्वापरे शङ्खलिखिताः कलौ पाराशराः स्मृताः ॥ १ ॥

संवत् १९६५, शके १८३०.

नियमानुसार पुनर्मुद्रणादिसर्वाधिकार "श्रीवेंकटेश्वर" यन्त्रालयाधीशने स्वाधीन रक्खाहै.

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

॥ श्रीः ॥

पाराशरस्मृतिः

(धर्मशास्त्रम्)

पंडितवरश्यामसुन्दरलालत्रिपाठिकृतया

भाषाटीकया समेता.

सैषा

मुम्बय्यां

क्षेमराजश्रीकृष्णदासश्रेष्ठिना

स्वकीये "श्रीवेङ्कटेश्वर" (स्टीम्) मुद्रणालये

मुद्रयित्वा प्रकाशिता ।

कृते तु मानवा धर्मास्त्रेतायां गौतमाः स्मृताः ।

द्वापरे शङ्खलिखिताः कलौ पाराशराः स्मृताः ॥ १ ॥

संवत् १९६५, शके १८३०.

सर्कारीनियमानुसार पुनर्मुद्रणादिसर्वाधिकार "श्रीवेङ्कटेश्वर" यन्त्रालयाधीशने स्वाधीन रक्खाहै.

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भूमिका।

"कलौ पाराशराः स्मृताः" के अनुसार कलिकालमें पाराशरस्मृतिका प्राधान्य होना किसी-को अमान्य नहीं क्योंकि सैकडों वर्ष अनशन करके तपकरना सत्ययुगमें सुशक्य था, त्रेतामें सांसारिक विषयोंको एक ओर छोड, सांख्य योगादि ज्ञानहीमें लोग लवलीन रहतेथे, द्वापरमें वडे बडे यज्ञोंमें मनुष्य तत्पर रहतेथे। सत्यादियुगोंमें क्रमसे अस्थि मांस और रुधिरगत प्राण होनेसे मनुष्योंको इस पापी पेटकी चिन्ता नहीं रहतीथी केवल आत्मतत्त्वका चिन्तन करना ही उस समय सवोंका प्रधान कार्य होताथा पर इस घोर कलिमें तो सभी विपरीत है।

अन्नमें प्राण हैं, जव तक अन्न है तभी तक मनुष्योंका जीवन; अन्न न हुआ तो बस मनुष्य-लीला ही संवरण। हुई अन्नमें भी शुद्धाशुद्धका विचार न होसकनेसे और भी कठिनता इस समय आ पडीहै। ऐसी विषम व्यवस्था देखकर दीन कलियुगी मनुष्योंकी स्थिति पर दया कर ऋषिमण्डल श्रीवेदव्यासजीसे धर्म पूछनेलगा। उन्होंने जव देखा कि अल्पसत्त्व धर्मविमुख लोगोंके लिये कठिन धर्मव्यवस्था सहसा करना ठीक नहीं, यह समझ उस ऋषिमण्डल सहित अपने पूज्य पिता महर्षि पराशरके पास गये।

धर्मजिज्ञासु ऋषियोंके प्रति कलिमें जो जो धर्म भगवान् पराशरने विर्दिष्ट कियेहैं वे ही इस पाराशर धर्मशास्त्रमें सन्निविष्टहैं।

इसमें १२ अध्याय हैं, जिनमें सामान्यतासे चारों वर्णोंका कर्तव्य कृषि आदि करनेका विधान वाग्दानके पीछे सप्तपदीकर्मके पूर्व यदि वर मरजाय तो स्त्रीका विवाह दूसरे पुरुषसे होस-कताहै इत्यादि कितने ही सामयिक धर्मोंका निरूपण कियाहै। इसमें कुछ संशय नहीं कि कलिकालमें जैसी मुख्य स्मृति यह पाराशरी है ऐसी दूसरी नहीं; बल्कि यों कहना चाहिये कि इसको प्रधान कर और स्मृतियोंके भी आचार व्यवहार आदि मनुष्य यथाशक्ति पालन करसकैं तो उत्तम बातहै।

सर्वसाधारण विना परिश्रम इस पाराशर धर्मशास्त्रका आशय समझ जाँय इससे हमने मुरादा-बादनिवासी पण्डित श्यामसुन्दरलालजीसे इसकी भाषाटीका करवाकर मुद्रित कियाहै। आशाहै कि प्रत्येक गृहस्थ इस धर्मशास्त्रको लेकर इस युगधर्मके अनुसार आचरण करेंगे।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

॥ श्रीः ॥

भाषाटीकासमेत

पाराशरस्मृतिकी विषयानुक्रमणिका ।

विषय.	पृष्ठाङ्क.
अध्याय १.	
षट्कर्म करनेसे ब्राह्मणोंको सौख्यलाभ, अतिथिसत्कारका फल और सामान्यतासे वर्णचतुष्टयका कर्म ...	१
अध्याय २.	
कलियुगमें गृहस्थके आवश्यककर्मोंका साधारणतासे कथन	९
अध्याय ३.	
जननमरणके अशौचकी शुद्धिका कथन	११
अध्याय ४.	
अतिमानसे वा अतिक्रोधादिसे मरेहुये स्त्रीपुरुषोंका दाह आदिकरनेमें प्रायश्चित्त, तप्तकृच्छ्रका लक्षण और परिवेदनादिदोषका विचार	१७
अध्याय ५.	
भेडिया कुत्ते आदिसे काटनेमें शुद्धि, चांडालादिसे मारेहुये ब्राह्मणके देहका स्पर्श करनेमें प्रायश्चित्त और अग्निहोत्रीका देशांतरमें मरण होय तो उसकी क्रियाका विचार ...	२१
अध्याय ६.	
प्राणियोंकी हिंसाका प्रायश्चित्तकथन....	२३
अध्याय ७.	
काठ आदिके बनाये पात्रोंकी शुद्धि और रजस्वलास्त्री परस्परस्पर्श करें तो उसका प्रायश्चित्त	३१
अध्याय ८.	
अकामसे बंधन आदिमें गौ मरजाय तो उसका प्रायश्चित्त	३६
अध्याय ९.	
भलीभांति गौकी रक्षा करनेकी इच्छासे बांधने या रोकनेमें गोहत्या होय तो उसका प्रायश्चित्त	४१
अध्याय १०.	
अगम्यस्त्रीगमनका चारों वर्णोंको योग्य प्रायश्चित्त	४८
अध्याय ११.	
अशुद्ध वीर्यआदि पदार्थके भक्षणमें प्रायश्चित्त और शूद्रान्नभक्षणमें ब्राह्मणको प्रायश्चित्त	५२
अध्याय १२.	
विष्ठा मूत्र आदि भक्षणमें प्रायश्चित्त और ब्रह्महत्याका प्रायश्चित्त ...	५७

इति पाराशरस्मृतिविषयानुक्रमणिका समाप्ता ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पं० प्रेम दत्त शास्त्री
जहांगीराबाद २०२३८४
बुलन्दशहर (उ०प्र०)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

॥ श्रीः ॥

पाराशरस्मृतिः ।

भाषाटीकासमेता ।

श्रीगणेशायनमः ।

अथातो हिमशैलाग्रे देवदारुवनालये ॥ व्यासमेकाग्रमासीनमपृच्छन्नृषयः पुरा ॥ १ ॥ मानुषाणां हितं धर्मं वर्तमाने कलौ युगे ॥ शौचाचारं यथावच्च वद सत्यवतीसुत ॥ २ ॥

एकसमय पूर्वकालमें हिमाचलपर्वतके ऊपर देवदारोंके वृक्षोंसे अलंकृत वनके आश्रममें श्रीव्यासजी महाराज एकाग्रचित्तसे बैठेथे उससमय ऋषियोंने उनसे प्रश्न किया ॥ १ ॥ कि हे सत्यवतीनंदन! कलियुगके समयमें जो धर्म, शौच, तथा आचार मनुष्यों के हितका करनेवाला है वह हमसे विधिपूर्वक कहिये ॥ २ ॥

तच्छ्रुत्वा ऋषिवाक्यं तु सशिष्योऽग्न्यर्कसन्निभः ॥ प्रत्युवाच महातेजाः श्रुतिस्मृतिविशारदः ॥ ३ ॥ न चाहं सर्वतत्त्वज्ञः कथं धर्मं वदाम्यहम् ॥ अस्मत्पितैव प्रष्टव्य इति व्यासः सुतोऽवदत् ॥ ४ ॥

इसके उपरान्त प्रज्वलित अग्नि और सूर्यकी समान तेजस्वी श्रुति और स्मृति शास्त्रमें पंडित श्रीव्यासजी ऋषियोंके ऐसे वचन सुनकर बोले ॥ ३ ॥ कि मैं तौ सब तत्त्वोंको नहीं जानतां किस प्रकार धर्मको कहूं, इसकारण मेरे पिता (पराशर) से पूछना उचित है, ऐसा उत्तर व्यासजीने दिया ॥ ४ ॥

ततस्त ऋषयः सर्वे धर्मतत्त्वार्थकांक्षिणः ॥ ऋषिं व्यासं पुरस्कृत्य गता वदरिकाश्रमम् ॥ ५ ॥ नानापुष्पलताकीर्णं फलपुष्पैरलंकृतम् ॥ नदीप्रस्रवणोपेतं पुण्यतीर्थोपशोभितम् ॥ ६ ॥ मृगपक्षिनिनादाढ्यं देवतायतनावृतम् ॥ यक्षगंधर्वसिद्धैश्च नृत्यगीतैरलंकृतम् ॥ ७ ॥ तस्मिन्नृषिसभामध्ये शक्तिपुत्रं पराशरम् ॥ सुखासीनं महातेजा मुनिमुख्यगणावृतम् ॥ ८ ॥ कृतांजलिपुटो भूत्वा व्यासस्तु ऋषिभिः सह ॥ प्रदक्षिणाभिवादैश्च स्तुतिभिः समपूजयत् ॥ ९ ॥

तब धर्मके तत्त्वकी अभिलाषा करनेवाले वह सम्पूर्ण ऋषि यह सुनकर श्रीव्यासजीको आगे कर बदरिकाश्रमको गये ॥ ५ ॥ यह आश्रम अनेक भांति पुष्पोंकी लताओंसे पूर्ण फल पुष्पोंसे शोभायमान नदी और झरनोंसे विभूषित पवित्र तीर्थोंसे शोभायमान ॥ ६ ॥ मृग और पाक्षियोंके शब्दसे शब्दायमान, देवमंदिरोंसे आवृत, यक्ष और गंधर्वोंके नृत्यगानसे शोभायमान और सिद्धगणों से अलंकृत था ॥ ७ ॥ उस आश्रममें शक्तिऋषिके पुत्र मुनिवर पराशरजी प्रधान २ मुनियों से युक्त होकर ऋषियोंकी सभामें सुखपूर्वक बैठेथे इस समय में ॥ ८ ॥ व्यासजीने ऋषियोंके साथ जाकर हाथ जोडकर उनकी प्रदक्षिणाकर प्रणामपूर्वक स्तुति करके पूजन किया ॥ ९ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अथ संतुष्टहृदयः पराशरमहामुनिः ॥
आह सुस्वागतं ब्रूहीत्यासीनो मुनिपुंगवः ॥ १० ॥

इसके उपरान्त महामुनि पराशरजीने संतुष्ट मन होकर पूछा कि तुम भली प्रकार कुशल पूर्वक आये कुशल कहो ॥ १० ॥

कुशलं सम्यगित्युक्त्वा व्यासः पृच्छत्यनंतरम् ॥ यदि जानासि मे भक्तिं स्नेहाद्वा भक्तवत्सल ॥ ११ ॥ धर्मं कथय मे तात अनुग्राह्यो ह्यहं तव ॥ श्रुता मे मानवा धर्मा वासिष्ठाः काश्यपास्तथा ॥ १२ ॥ गार्गीया गौतमीयाश्च तथा चौशनसाः स्मृताः ॥ अत्रेर्विष्णोश्च संवर्ताद्दक्षादंगिरसस्तथा ॥ १३ ॥ शातातपाच्च हारीताद्याज्ञवल्क्यात्तथैव च ॥ आपस्तंबकृता धर्माः शंखस्य लिखितस्य च ॥ १४ ॥ कात्यायनकृताश्चैव तथा प्राचेतसान्मुनेः ॥ श्रुता ह्येते भवत्प्रोक्ताः श्रौतार्था मे न विस्मृताः ॥ १५ ॥ अस्मिन्मन्वंतरे धर्माः कृतत्रेतादिके युगे ॥ सर्वे धर्माः कृते जाताः सर्वे नष्टाः कलौ युगे ॥ १६ ॥ चातुर्वर्ण्यसमाचारं किंचित्साधारणं वद ॥ चतुर्णामपि वर्णानां कर्तव्यं धर्मकोविदैः ॥ १७ ॥ ब्रूहि धर्मस्वरूपज्ञ सूक्ष्मं स्थूलं च विस्तरात् ॥

कुशलप्रश्नके उपरान्त सबभांति कुशल है ऐसा कहकर व्यासजीने पूछा कि हे भक्तवत्सल ! आपके ऊपर मेरी कैसी भक्तिहै यदि आप इस बातको जानतेहैं अथवा मेरे ऊपर यदि आपका स्नेह है ॥ ११ ॥ तौ हे पितः ! मुझसे स्नेहपूर्वक धर्मका वर्णन कीजिये, कारण कि मैं आपकी कृपाका पात्र हूं, इस कारण मुझपर अवश्यही कृपा करनी चाहिये, कारण कि मैंने स्वायंभुवमनु, वशिष्ठ, कश्यप ॥ १२ ॥ तथा गर्गाचार्य, गौतम, शुक्राचार्य, अत्रि, तथा विष्णुऋषि, संवर्त, दक्ष, अंगिरा ॥ १३ ॥ शातातप, हारीत, याज्ञवल्क्य, आपस्तंब, तथा शंख, लिखित ॥ १४ ॥ कात्यायन, वाल्मीकि इत्यादि ऋषियोंके कहेहुए धर्मशास्त्र और आपके कहेहुए वेदोक्त धर्म श्रवण कियेहैं और वह मुझे स्मरणभी हैं ॥ १५ ॥ परन्तु इस मन्वन्तरके विषय कृतयुग और त्रेतादि युगोंके जो २ धर्म थे उन २ युगोंमें शक्तिकी विशेषता होनेके कारण वह धर्म स्थित रहे; और अब कलियुगमें शक्तिकी हानि होगई है, इस कारण वह सम्पूर्ण धर्म लोप होगये ॥ १६ ॥ इस कारण चारोंवर्णोंका पृथक् २ मुख्य धर्म तथा चारोंवर्णोंका मिश्रित धर्म वर्णन कीजिये ॥१७॥ हे धर्मस्वरूपके जाननेवाले ! चारों वर्णोंमें जो धर्म धर्मके जाननेवालोंको करने योग्य सूक्ष्म और स्थूल हैं उनका वर्णन विस्तारसहित कीजिये.

व्यासवाक्यावसानेषु मुनिमुख्यः पराशरः ॥ १८ ॥
धर्मस्य निर्णयं प्राह सूक्ष्मं स्थूलं च विस्तरात् ॥

व्यासजीके ऐसा कहनेपर मुनिश्रेष्ठ पराशरजी ॥ १८ ॥ सूक्ष्म और स्थूल इन दोनों धर्मोंका निर्णय विस्तारसहित कहनेलगे ॥

वक्ष्यमाणधर्मतत्त्वग्रहणाय श्रोतृसावधानतां विधत्ते ॥
शृणु पुत्र प्रवक्ष्यामि शृण्वंतु मुनयस्तथा ॥ १९ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इन धर्मोंको सुननेके लिये श्रोताओंको सावधान होना उचित है। इसवास्ते प्रथमतः कहतेहैं कि, हे पुत्र ! तथा हे मुनियों ! श्रवण करो ॥ १९ ॥

कल्पे कल्पे क्षये सत्या ब्रह्मविष्णुमहेश्वराः ॥ २० ॥
श्रुतिस्मृतिसदाचारनिर्णेतारश्च सर्वदा ॥

कल्प २ में प्रलय होनेपरभी ब्रह्मा, विष्णु, और महेश यह तीनों विद्यमान रहतेहैं ॥२०॥ और वह सर्वदा श्रुति, स्मृति और सदाचारका निर्णय करतेहैं.

न कश्चिद्वेदकर्ता च वेदं स्मृत्वा चतुर्मुखः ॥ २१ ॥
तथैव धर्मान्स्मरति मनुः कल्पांतरेऽतरे ॥

कोई वेदका कर्ता नहींहै. कल्पकी आदिमें पूर्वकी समान वेदको स्मरणकर ब्रह्माजी चतुर्मुखोंके द्वारा प्रकाशित करतेहैं ॥ २१ ॥ और जो मनु कल्प २ में होतेहैं वह भी उसी प्रकार प्रथमकी समान धर्मोंको स्मरण कर प्रवृत्त करतेहैं;

अन्ये कृतयुगे धर्मास्त्रेतायां द्वापरे युगे ॥ २२ ॥
अन्ये कलियुगे नृणां युगरूपाऽनुसारतः ॥

शक्तिकी वृद्धि और हानि युगोंके अनुसारही हैं. उसीकारणसे कृतयुगमें मनुष्योंका धर्म और प्रकारका रहा, त्रेतामें और प्रकारका और द्वापरमें और प्रकारका रहा ॥ २२ ॥ इस समय कलियुगमें ऋषियोंनें मनुष्योंकी शक्तिके अनुसारही और प्रकारके धर्म वर्णन कियेहैं ॥

तपः परं कृतयुगे त्रेतायां ज्ञानमुच्यते ॥ २३ ॥
द्वापरे यज्ञमेवाहुर्दानमेव कलौ युगे ॥

कृतयुगमें शक्ति विशेष थी इसकारण उसमें तप श्रेष्ठ रहा; त्रेतामें ज्ञान रहा ॥ २३ ॥ द्वापरमें यज्ञ अधिक रहा, और अब कलियुगमें शारीरिक शक्ति न्यून है इस कारण इसमें दानकीही अधिकता है ॥

कृते तु मानवा धर्मास्त्रेतायां गौतमाः स्मृताः ॥ २४ ॥
द्वापरे शंखलिखिताः कलौ पाराशराः स्मृताः ॥

सतयुगमें तौ मनुजीके धर्म मुख्य थे त्रेतामें गौतमके ॥ २४ ॥ शंख और लिखित ऋषियोंके धर्म द्वापरमें मुख्य रहे; और इससमय कलियुगमें मुनि पराशरजीके कहेहुए धर्म अत्यन्तही उपयोगी हैं ॥

त्यजेद्देशं कृतयुगे त्रेतायां ग्राममुत्सृजेत् ॥ २५ ॥
द्वापरे कुलमेकं तु कर्तारं तु कलौ युगे ॥

सतयुगमें संसर्गके दोष लगनेके कारण पाप करनेवालेके देशकोभी त्याग देतेथे; ग्रामको त्रेतामें ॥ २५ ॥ और द्वापरमें पाप करनेवालेके कुलतककोभी छोड देतेथे; अब कलियुगमें केवल पापकर्त्ताकोही छोड देतेहैं ॥

कृते संभाषणादेव त्रेतायां स्पर्शनेन च ॥ २६ ॥
द्वापरे त्वन्नमादाय कलौ पतति कर्मणा ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सतयुगमें तौ मनुष्य पापीके साथ वार्तालाप करनेसेही पतित होजाताथा, और त्रेतामें स्पर्शसे पतित होताथा ॥ २६ ॥ अन्नके लेनेसे द्वापरमें पतित होताथा; और कलियुगमें कर्म-करनेसे पतित होताहै ॥

कृते तात्क्षणिकः शापस्त्रेतायां दशभिर्दिनैः ॥ २७ ॥
द्वापरे चैकमासेन कलौ संवत्सरेण तु ॥

सतयुगमें शाप तत्कालही फलताथा, दशदिनमें त्रेतामें ॥ २७ ॥ और द्वापरमें एकमहीनेमें शाप फलीभूत होताथा, और अत्र कलियुगमें एकवर्षमें शापका फल होताहै ॥

अभिगम्य कृते दानं त्रेतास्वाहूय दीयते ॥ २८ ॥ द्वापरे याचमानाय सेवया दीयते कलौ ॥ अभिगम्योत्तमं दानमाहूयैव तु मध्यमम् ॥ २९ ॥ अधमं याचमानाय सेवादानं तु निष्फलम् ॥

कृतयुगमें श्रद्धा अधिक थी इसकारण दान आप जाकर देतेथे, श्रद्धासहित बुलाकर त्रेतामें देतेथे ॥ २८ ॥ याचना करनेवालेको द्वापरमें श्रद्धायुक्त हो देतेथे, और अब कलि-युगमें दान सेवा कराकर देतेहैं । जो दान आप जाकर दिया जाताहै वह उत्तम है; बुलाकर जो दान दियाजाताहै वह मध्यम है ॥ २९ ॥ और जो दान याचना करनेपर दिया जाताहै वह निकृष्ट है; और जो सेवा कराकर दान दिया जाताहै वह निष्फल है ॥

जितो धर्मो ह्यधर्मेण सत्यं चैवानृतेन च ॥ ३० ॥ जिताश्चोरैश्च राजानः स्त्रीभिश्च पुरुषा जिताः ॥ सीदंति चाऽग्निहोत्राणि गुरुपूजा प्रणश्यति ॥ ३१ ॥ कुमार्यश्च प्रसूयंते तस्मिन्कलियुगे सदा ॥

कलियुगमें धर्मकी पराजय अधर्मसे होजातीहै, और सत्यकी पराजय झूंठसे होतीहै ॥ ३० ॥ बहुधा राजोंकी पराजय चोरोंसे होजातीहै; और स्त्रियें पुरुषोंका तिरस्कार करती-हैं; कलिमें अग्निहोत्र और गुरुपूजन यह नष्टहुए जातेहैं ॥ ३१ ॥ कुमारीकन्याभी कलिके प्रभावसे सन्तान उत्पन्न करतीहैं ॥

कृते त्वस्थिगताः प्राणास्त्रेतायां मांसमाश्रिताः ॥ ३२ ॥
द्वापरे रुधिरं चैव कलौ त्वन्नादिषु स्थिताः ॥

सतयुगमें प्राण अस्थिगत थे, मांसके आश्रयसे त्रेतायुगमें रहे ॥ ३२ ॥ द्वापरमें रुधिरमें प्राण रहतेहैं; और कलियुगमें अन्नादिकमेंही प्राण स्थिति करतेहैं, अर्थात् अन्नके विनामिले प्राण नष्ट होजातेहैं ॥

युगे युगे च ये धर्मास्तत्र तत्र च ये द्विजाः ॥ ३३ ॥
तेषां निंदा न कर्तव्या युगरूपा हि ते द्विजाः ॥

जो २ धर्म प्रत्येक युगमें हैं और उन युगोंमें जो २ ब्राह्मण युगानुरूप हैं ॥ ३३ ॥ उनकी निन्दा करनी उचित नहीं कारण कि आचरण करनेवाले वह ब्राह्मण युगकेही अनुसार हैं ॥

युगे युगे तु सामर्थ्यं शेषं मुनिविभाषितम् ॥ ३४ ॥ पराशरेण चाप्युक्तं प्रायश्चित्तं विधीयते ॥ अहमद्यैव तत्सर्वमनुस्मृत्य ब्रवीमि वः ॥ ३५ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जैसी २ सामर्थ्य जिस २ युगमें रही वैसै २ ही प्रायश्चित्तादि धर्मोंका वर्णन मनु गौतमादि मुनीश्वरोंनें किया ॥ ३४ ॥ मैं अब पराशरजीके कहेहुए सम्पूर्ण प्रायश्चित्तआदि धर्मोंको स्मरणकर तुमसे कहताहूं ॥ ३५ ॥

चातुर्वर्ण्यसमाचारं शृण्वंतु ऋषिपुंगवाः ॥ पराशरमतं पुण्यं पवित्रं पापनाशनम् ॥ ३६ ॥ चिंतितं ब्राह्मणार्थाय धर्मसंस्थापनाय च ॥

हे मुनीश्वरो ! परमपवित्र सम्पूर्ण पापोंका नाश करनेवाला मुनि पराशरजीका मत चारों वर्णोंका आचार जो ॥ ३६ ॥ ब्राह्मणोंके निमित्त तथा धर्मको स्थापन करनेके लिये चिंतवन किया गयाहै; उसीको श्रवण करो ॥

चतुर्णामपि वर्णानामाचारो धर्मपालकः ॥ ३७ ॥
आचारभ्रष्टदेहानां भवेद्धर्मः पराङ्मुखः ॥

आचारही चारों वर्णोंके धर्मोंका पालन करनेहारा है. कारण कि आचारके विना किये केवल धर्मके कथनमात्रसेही धर्मका पालन नहीं होसकता ॥ ३७ ॥ जो मनुष्य आचारसे भ्रष्ट हैं, और जिन्होंनें धर्माचरण करना छोडदिया उनसे धर्म विमुख होजाताहै ॥

षट्कर्माभिरतो नित्यं देवतातिथिपूजकः ॥
हुतशेषं तु भुंजानो ब्राह्मणो नावसीदति ॥ ३८ ॥

और जो ब्राह्मण पट्कर्ममें निरत और नित्य देवता अतिथियोंकी पूजा करता और हवनक शेषका भोजन करताहै उसको कभी दुःख प्राप्त नहीं होता ॥ ३८ ॥

संध्या स्नानं जपो होमो देवतानां च पूजनम् ॥
आतिथ्यं वैश्वदेवं च षट्कर्माणि दिनेदिने ॥ ३९ ॥

प्रतिदिन सन्ध्या, स्नान, जप, हवन, वेदाध्ययन, देवताओंका पूजन, अतिथिसेवा और बलिवैश्वदेव यह छैः प्रकारके कर्म करने उचित हैं ॥ ३९ ॥

इष्टो वा यदि वा द्वेष्यो मूर्खः पण्डित एव वा ॥ संप्राप्तो वैश्वदेवांते सोऽतिथिः स्वर्गसंक्रमः ॥ ४० ॥ दूराच्चोपगतं श्रांतं वैश्वदेव उपस्थितम् ॥ अतिथिं तं विजानीयान्नातिथिः पूर्वमागतः ॥ ४१ ॥ नैकग्रामीणमतिथिं संगृह्णीत कदाचन ॥ अनित्यमागतो यस्मात्तस्मादतिथिरुच्यते ॥ ४२ ॥ अतिथिं तत्र संप्राप्तं पूजयेत्स्वागतादिना ॥ तथासनप्रदानेन पादप्रक्षालनेन च ॥ ४३ ॥ श्रद्धया चान्नदानेन प्रियप्रश्नोत्तरेण च ॥ गच्छतश्चानुयानेन प्रीतिमुत्पादयेद्गृही ॥ ४४ ॥ अतिथिर्यस्य भग्नाशो गृहात्प्रतिनिवर्तते ॥ पितरस्तस्य नाश्नंति दश वर्षाणि पंच च ॥ ४५ ॥ काष्ठभारसहस्रेण घृतकुंभशतेन च ॥ अतिथिर्यस्य भग्नाशस्तस्य होमो निरर्थकः ॥ ४६ ॥ सुक्षेत्रे वापयेद्बीजं सुपात्रे निक्षिपेद्धनम् ॥ सुक्षेत्रे च सुपात्रे च ह्युप्तं दत्तं न नश्यति ॥ ४७ ॥ न पृच्छेद्गोत्रचरणे न स्वाऽध्यायं श्रुत तथा ॥ हृदये कल्पयेदेवं सर्वदेवमयो हि सः ॥ ४८ ॥ अपूर्वः सुव्रती विप्रो ह्यपूर्वश्चातिथिस्तथा ॥ वेदाभ्यासरतो नित्यं त्रयोऽपूर्वे दिने दिने ॥ ४९ ॥ वैश्व-

२

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

देवे तु संप्राप्ते भिक्षुके गृहमागते ॥ उद्धृत्य वैश्वदेवार्थं भिक्षां दत्त्वा विसर्जयेत् ॥ ५० ॥

मित्र हो या शत्रु हो, पंडित हो या मूर्ख हो अतिथिके लक्षणोंसे युक्त जो पुरुष बलिवैश्वदेवके अंतमें आजाय उसकी सेवाके करनेसे स्वर्ग प्राप्त होताहै ॥ ४० ॥ दूरसे आयाहुआ और थकित हुआ जो पुरुष बलिवैश्वदेवके समयमें आजाय, उसको अतिथिही जानना; जो कभी पहले भी आया हो वह अतिथि नहींहै ॥ ४१ ॥ एक ग्रामके रहनेवालेको आतिथ्यमें ग्रहण कभी न करै कारण कि, पहले जिसका दर्शन कभी नहीं हुआ, इसलिये उसे अतिथि कहतेहैं ॥ ४२ ॥ जो अतिथि अपने स्थानपर आवै तौ उसकी कुशल पूछकर आसन दे चरण धोकर पूजन करै ॥ ४३ ॥ जिस समय अतिथि अपने स्थानको जानेलगै तौ गृहस्थको उचित है कि, श्रद्धासहित अन्न देकर प्रेमसहित कुशल प्रश्न करै और कुछ दूरतक पहुंचा आकर प्रीति उत्पन्न करै ॥ ४४ ॥ जिसके यहांसे अतिथि निराश होकर जाताहै उसके पितर पंद्रह वर्षतक उसके दिये हुए श्राद्धसम्बन्धीय अन्नको ग्रहण नहीं करते ॥ ४५ ॥ जिसके यहांसे अतिथि निराश होकर जाताहै उसका सहस्रभार काष्ठ और सौ कलश घृतसे हवन करना निरर्थक है ॥ ४६ ॥ अच्छे खेतमें बीज बोवे और सुपात्रको धन दान करै; अच्छे क्षेत्रमें जो अन्न बोया जाताहै और सुपात्रको जो दान दिया जाताहै वह कभी नष्ट नहीं होता ॥ ४७ ॥ अतिथिसे गोत्र आचरण तथा आपने किन २ शास्त्रोंको पढा या श्रवण कियाहै इत्यादि बातैं न पूछै; कारण कि अतिथि देवस्वरूप है उसे देवताकी समान जानकर उसका सन्मान करना उचित है ॥ ४८ ॥ व्रतमें रत ब्राह्मण, और नित्य वेदाभ्यासी ब्राह्मण और अतिथि यह तीनों दिन २ अपूर्वही हैं अर्थात् इन तीनोंका सन्मान नित्य करना उचित है ॥ ४९ ॥ वैश्वदेवके आरंभ करनेके समयमें यदि कोई भिक्षुक, संन्यासी, ब्रह्मचारी और अतिथि आजाय तौ बलिवैश्वदेवके निमित्त अन्नको अलग करकै शेष अन्नमेंऽसे भिक्षुकको भिक्षा देकर बिदाकरै ॥ ५० ॥

यतिश्च ब्रह्मचारी च पक्वान्नस्वामिनावुभौ ॥ तयोरन्नमदत्त्वा च भुक्त्वा चांद्रायणं चरेत् ॥ ५१ ॥ दद्याच्च भिक्षात्रितयं परिव्राड्ब्रह्मचारिणाम् ॥ इच्छया च ततो दद्याद्विभवे सत्यवारितम् ॥ ५२ ॥

यति और ब्रह्मचारी यह दोनों पक्वान्नकी भिक्षाके अधिकारी हैं, इनको विना अन्न दिये हुए जो भोजन करताहै उसकी शुद्धि चांद्रायण व्रतके करनेसे होती है॥ ५१ ॥ तीन भिक्षा संन्यासी और ब्रह्मचारियोंको अवश्य देनी उचित है; यदि अधिक ऐश्वर्यवान् हो तौ निरंतर इच्छानुसार भिक्षा दे ॥ ५२ ॥

यतिहस्ते जलं दद्याद्भैक्षं दद्यात्पुनर्जलम् ॥ तद्भैक्षं मेरुणा तुल्यं तज्जलं सागरोपमम् ॥ ५३ ॥ यस्य छत्रं हयश्चैव कुंजरारोहमृद्धिमत् ॥ ऐंद्रस्थानमुपासीत तस्मात्तं न विचारयेत् ॥ ५४ ॥

प्रथम यतिके हाथमें जल दे इसके पीछे भिक्षा दे फिर जल दे, यह क्रम है, वह भिक्षाका अन्न सुमेरु पर्वतके तुल्य होजाताहै; और वह जल समुद्रके समान होजाताहै ॥ ५३ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जहांगीराबाद २०२३६४ बुलन्दशहर

जिस संन्यासीके पास छत्र हाथी घोडा आदि वाहन हों और वह बुद्धिमान् इन्द्रके स्थानका अनुभव करताहो ऐसाभी संन्यासी हो तौ भी उसका संमान करनेयोग्यही है ॥ ५४ ॥

वैश्वदेवकृतं पापं शक्तो भिक्षुर्व्यपोहितुम् ॥ नहि भिक्षुकृतं दोषं वैश्वदेवो व्यपोहति ॥ ५५ ॥

बलि वैश्वदेवके सम्बन्धमें जो पाप हुआहो उसको वह दूर करसकताहै; भिक्षुकके सन्मान करनेसे बलिवैश्वदेवकी विधिमें यदि कुछ त्रुटि रहजाय तौ वह पाप भिक्षुकके सन्मान करनेसे शांत होजाताहै; परन्तु यदि बलि वैश्वदेवके कारण भिक्षुकका सन्मान न होसके तौ इस दोषको बलिवैश्वदेव दूर नहीं करसकता ॥ ५५ ॥

अकृत्वा वैश्वदेवं तु ये भुंजंते द्विजातयः ॥ तेषामन्नं न भुंजीत काकयोनिं व्रजंति ते ॥ ५६ ॥ अकृत्वा वैश्वदेवं तु भुंजते ये द्विजाधमाः ॥ सर्वे ते निष्फला ज्ञेयाः पतंति नरकेऽशुचौ ॥ ५७ ॥ वैश्वदेवविहीना ये आतिथ्येन वहिष्कृताः ॥ सर्वे ते नरकं यांति काकयोनिं व्रजंति च ॥ ५८ ॥

जो ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, विना बलिवैश्वदेवके किये भोजन करतेहैं उनको काककी योनि मिलतीहै, इसी कारण उनके अन्नका भोजन करना उचित नहीं है ॥ ५६॥ जो अधम ब्राह्मण बलिवैश्वदेवके विना किये भोजन करतेहैं उनके सम्पूर्ण कर्म निष्फल होजाते हैं; और वह अशुचिनामक नरकमें जाकर पडतेहैं ॥ ५७ ॥ जो बलिवैश्वदेवको नहीं करते, जो अतिथिकी सेवा नहीं करते वह सम्पूर्ण मनुष्य नरकगामी होतेहैं; और इसके पश्चात् उनको कौये की योनि मिलतीहै ॥ ५८ ॥

**शिरो वेष्ट्य तु यो भुंक्ते दक्षिणाभिमुखस्तु यः ॥
वामपादकरः स्थित्वा तद्वै रक्षांसि भुंजते ॥ ५९ ॥**

जो मनुष्य वस्त्रादिसे शिरको ढककर तथा बाँये चरण पर हाथ धरकर दक्षिण दिशाको मुख करकै भोजन करते वह राक्षसी भोजन है, अर्थात् वह भोजन तामसी होजाताहै॥५९॥

**यतये कांचनं दत्त्वा तांबूलं ब्रह्मचारिणे ॥
चौरेभ्योऽप्यभयं दत्त्वा दातापि नरकं व्रजेत् ॥ ६० ॥**

जो दाता संन्यासीको सुवर्णआदिक धन दान करताहै, तथा ब्रह्मचारीको ताम्बूल और चोरोंको अभय देताहै वह नरक को जाताहै ॥ ६० ॥

**शुक्लवस्त्रं च यानं च तांबूलं धातुमेव च ॥
प्रतिगृह्य कुलं हन्यात्प्रतिगृह्णाति यस्य च ॥ ६१ ॥**

जो संन्यासी श्वेत वस्त्र, वाहन, तांबूल तथा धन आदिका प्रतिग्रह लेते हैं, तो जिससे प्रतिग्रह लेते हैं उसके भी कुलका नाश करतेहैं ॥ ६१ ॥

**चोरो वा यदि चंडालः शत्रुर्वा पितृघातकः ॥
वैश्वदेवे तु संप्राप्ते सोऽतिथिः स्वर्गसंक्रमः ॥ ६२ ॥**

चोर वा चांडाल, शत्रु या पितृघातीहो जो भी बलिवैश्वदेवके समयमें आजाय तौ वह अतिथि स्वर्ग प्राप्ति करानेवाला है ॥ ६२ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

न गृह्णाति तु यो विप्रो अतिथिं वेदपारगम् ॥
अदत्तं चान्नपात्रं तु भुक्त्वा भुंक्ते तु किल्बिषम् ॥ ६३ ॥

जो ब्राह्मण वेदके जाननेवाले अतिथिको अन्न जल न देकर स्वयं भोजनकरतेहैं वे पापका भोजन करतेहैं ॥ ६३ ॥

ब्राह्मणस्य मुखं क्षेत्रं निरुपममकंटकम् ॥ वापयेत्सर्वबीजानि सा कृषिः सर्वकामिका ॥ ६४ ॥ सुक्षेत्रे वापयेद्बीजं सुपात्रे निक्षिपेद्धनम् ॥ सुक्षेत्रे च सुपात्रे च ह्युप्तं तन्न विनश्यति ॥ ६५ ॥

ब्राह्मणका मुख अनुपम कंटकादिरहित उत्तम क्षेत्र है उसमें सम्पूर्ण बीजोंको बोवै, ब्राह्मण की मुखरूपी खेती सम्पूर्ण कामनारूप फलोंकी देनेवाली है ॥ ६४ ॥ मनुष्यको उचित है कि श्रेष्ठक्षेत्रमें बीज बोवै, सुपात्रको धनका दान करै, वह सुपात्रको धनका दान दिया और श्रेष्ठ क्षेत्रमें बीज बोयाहुआ कभी नष्ट नहीं होता ॥ ६५ ॥

अव्रता ह्यनधीयाना यत्र भैक्षचरा द्विजाः ॥
तं ग्रामं दंडयेद्राजा चोरभक्तप्रदो हि सः ॥ ६६ ॥

जिस ग्राममें व्रतसे रहित और वेदाध्ययनसे हीन ब्राह्मण भिक्षा मांगते हैं, राजा उन ग्रामवासियोंको दंड दे, नहीं तौ वह राजाही चोरोंको भात देनेवाला है, कारण कि, जिस भांति धर्मके अनुसार प्रजा राजाको छठा अंश भाग देती है, उसी प्रकार तपस्वी ब्राह्मणोंको क्षत्रियआदिकोंसे भाग मिलना चाहिये; यदि क्षत्रिय आदिकही ब्राह्मणोंकी आजीविका और उनकी सेवा न करैंगे; तौ अवश्यही ब्राह्मण भिक्षावृत्ति करैंगे; इसकारण वह क्षत्रियादिके ग्रामके निवासी राजाके दंड देने योग्य हैं; ॥ ६६ ॥

क्षत्रियो हि प्रजा रक्षञ्छस्त्रपाणिः प्रदंडवान् ॥ निर्जित्य परसैन्यानि क्षितिं धर्मेण पालयेत् ॥६७ ॥ न श्रीः कुलक्रमायाता भूषणोल्लिखितापि वा ॥ खड्गेनाक्रम्य भुंजीत वीरभोग्यां वसुंधराम् ॥ ६८॥ पुष्पं पुष्पं विचिनुयान्मूलच्छेदं न कारयेत ॥ मालाकार इवाऽऽरामे न यथांगारकारकः ॥ ६९ ॥

क्षत्रिय प्रजाकी रक्षाकरै, और हाथ में शस्त्र लेकर शत्रुओंको पराजय करै, और धर्मके अनुसार पृथ्वीका पालन करै ॥ ६७ ॥ जो लक्ष्मी अपने कुलके क्रमानुसार प्राप्त हुईहै वह लक्ष्मी वीरता न होनेके कारण स्थिर नहीं रहती, और क्षत्रियोंकी शोभा विना भूषण धारण किये नहीं होती, परन्तु पृथ्वी शूरवीर राजाओंके भोगने योग्य है; इसकारण खड्गसे जीतीहुई पृथ्वीको भोगै ॥ ६८ ॥ जिसभांति माली उपवनमेंसे फूल फलादिकोंको ग्रहण करता है परन्तु अग्नि लगानेवालेकी समान वृक्षोंकी जडको नहीं काटता उसी भांति राजाओंको उचित है कि अपना भाग प्रजाओंसे थोडा २ लेकर प्रजाकी रक्षाकर सर्वापहारी न हो ॥ ६९ ॥

लाभकर्म तथा रत्नं गवां च परिपालनम् ॥
कृषिकर्म च वाणिज्यं वैश्यवृत्तिरुदाहृता ॥ ७० ॥

व्याज लेना, रत्नोंका क्रय विक्रय, गौका पालन, गौओंकी रक्षा और उनके बछडे आदिकोंको बेचकर जीविका करना, खेती और व्यापार यह वैश्यकी वृत्ति है ॥ ७० ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शूद्रस्य द्विजशुश्रूषा परमो धर्म उच्यते ॥
अन्यथा कुरुते किंचित्तद्भवेत्तस्य निष्फलम् ॥ ७१ ॥

ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य इन तीनोंकी सेवासे निर्वाह करना परम धर्म है, इसके अतिरिक्त करनेमें शूद्रका अधिकार नहींहै ॥ ७१ ॥

लवणं मधु तैलं च दधि तक्रं घृतं पयः ॥
न दुष्येच्छूद्रजातीनां कुर्यात्सर्वेषु विक्रयम् ॥ ७२ ॥

लवण, मधु, तेल, दही, मट्ठा और घृत दुग्धादि सम्पूर्ण रसोंके बेचनेका शूद्रको अधिकार है, ऐसा करनेसे शूद्रको दोष नहीं लगता ॥ ७२ ॥

विक्रीणन्मद्यमांसानि ह्यभक्ष्यस्य च भक्षणम् ॥ कुर्वन्नगम्यागमनं शूद्रः पतति तत्क्षणात् ॥ ७३ ॥ कपिलाक्षीरपानेन ब्राह्मणीगमनेन च ॥ वेदाक्षरविचारेण शूद्रस्य नरकं ध्रुवम् ॥ ७४ ॥

इति पाराशरीये धर्मशास्त्रे प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

मदिरा, और मांसको शूद्र न बेचे, अभक्ष्य वस्तुका भक्षण न करै, और अगम्या स्त्रीके साथ गमन न करै, इन सम्पूर्ण कामोंके करनेसे शूद्र तत्काल पतित होताहै ॥ ७३ ॥ कपिला गौका दूध पीनेसे, ब्राह्मणीके साथ गमन करनेसे तथा वेदके अक्षरका विचार करनेसे शूद्र निश्चयही नरकको जाताहै ॥ ७४ ॥

इति श्रीपाराशरीये धर्मशास्त्रे भाषाटीकायां प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

द्वितीयोऽध्यायः २.

अतः परं गृहस्थस्य कर्माचारं कलौ युगे ॥ सधर्मं साधारणं शक्त्या चातुर्वर्ण्याश्रमागतम् ॥ १ ॥ तं प्रवक्ष्याम्यहं पूर्वं पाराशरवचो यथा ॥

इसके उपरान्त कलियुगमें गृहस्थके कर्म, आचार, और यथाशक्ति चारों वर्ण तथा चारों आश्रमोंका मिश्रित धर्म ॥ १ ॥ जिसभांति पराशरजीने कहाहै उसे वर्णन करतेहैं ॥

षट्कर्मसहितो विप्रः कृषिकर्मः च कारयेत् ॥ २ ॥ क्षुधितं तृषितं श्रांतं बलीवर्दं न योजयेत् ॥ हीनांगं व्याधितं क्लीबं वृषं विप्रो न वाहयेत् ॥ ३ ॥ स्थिरांगं नीरुजं तृप्तं सुनर्दं षंढवर्जितम् ॥ वाहयेद्दिवसस्यार्द्धं पश्चात्स्नानं समाचरेत् ॥ ४ ॥

षट्कर्ममें नियुक्तहुआ ब्राह्मण खेती करताहो ॥ २ ॥ वह क्षुधा. तृषासे व्याकुल हुए बैलको हलमें न जोडै; और जो बैल अंगहीन हो रोगी हो उसे भी हलमें न जोतै नपुंसक बैलकोभी हलमें न जोतै ॥ ३ ॥ जिसकें अंग दृढ हों, रोमहीन, तृप्त, पुष्ट और नपुंसकतारहित ऐसे बैलको मध्याहतक जोतकर कार्य ले अधिक कार्य न ले इसके पीछे स्नानादिक करै ॥ ४ ॥

जपं देवार्चनं होमं स्वाध्यायं चैवमभ्यसेत् ॥ एकद्वित्रिचतुर्विप्रान्भोजयेत्स्नातकान्द्विजः ॥ ५ ॥ स्वयं कृष्टे तथा क्षेत्रे धान्यैश्च स्वयमर्जितः ॥ निर्वपेत्पंचयज्ञांश्च क्रतुदीक्षां च कारयेत् ॥ ६ ॥

इसके उपरान्त जप, देवपूजा, होम, वेदाध्ययनका अभ्यास करता रहै; और एक दो तीन वा चार स्नातक ब्राह्मणोंको भोजन करावै ॥ ५ ॥ जो धान्य अपने जोतेहुए खेतमें उत्पन्न

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हुए हों या जिन्हें अपने परिश्रमसे संचय किया हो; उन धान्योंसे पंचयज्ञोंको करै; और विशेष यज्ञादिकोंकोभी करले ॥ ६ ॥

तिला रसा न विक्रेया विक्रेया धान्यतत्समाः ॥
विप्रस्यैवंविधा वृत्तिस्तृणकाष्ठादिविक्रयः ॥ ॥७ ॥

ब्राह्मणोंको उचितहै कि तिल सम्पूर्ण प्रकारके रस तथा, लोह, लाक्षादिक, फल, पुष्प, नील वा रक्तवर्णके वस्त्रोंको न बेचै ॥ ७ ॥

ब्राह्मणश्चेत्कृषिं कुर्यात्तन्महादोषमाप्नुयात् ॥ अष्टागवं धर्महलं षड्गवं वृत्तिलक्षणम् ॥ ८ ॥ चतुर्गवं नृशंसानां द्विगवं गोजिघांसुवत् ॥ द्विगवं वाहयेत्पादं मध्याह्ने तु चतुर्गवम् ॥ ९ ॥ षड्गवं तु त्रियामाहेऽष्टाभिः पूर्णं तु वाहयेत् ॥ न याति नरकेष्वेवं वर्तमानस्तु वै द्विजः ॥ १० ॥ दानं दद्याच्च वै तेषां प्रशस्तं स्वर्गसाधनम् ॥

ब्राह्मणको खेती करनेसे बडा पाप होताहै, परन्तु आठ बैलोंवाला हल धर्मपूर्वक उत्तम है, छैः बैलोंका हल मध्यम है ॥ ८ ॥ जो मनुष्य चार बैलोंको हलमें जोतते हैं वह दयाहीन हैं, और जो दो बैलोंका हल जोततेहैं वह गोहिंसक हैं; दो बैलोंवाले हलको पहरभर दिन चढेतक जोतना उचित है; और चार बैलवाले हलको मध्याह्नतक जोतै ॥ ९ ॥ हलमें छैः बैलोंको जोतकर तीसरे पहरतक कार्यले; और आठ बैलवाले हलको सायंकालतक जोतै, इस भांति आचरण करनेसे ब्राह्मण नरकमें नहींजाता ॥ १० ॥ इस ब्राह्मणको दियाहुआ दान प्रशंसनीय और स्वर्गका देनेवाला है ॥

संवत्सरेण यत्पापं मत्स्यघाती समाप्नुयात् ॥ ११ ॥ अयोमुखेन काष्ठेन तदेकाहेन लाङ्गली ॥ पाशको मत्स्यघाती च व्याधः शाकुनिकस्तथा ॥ १२ ॥ अदाता कर्षकश्चैव पंचैते समभागिनः ॥

जो पाप वर्षदिनमें मत्स्यघात करनेसे होताहै ॥ ११ ॥ वही पाप एकही दिनमें हलके काष्ठके अग्रभागमें लोहा लगाकर जोतनेसे होताहै । जो विना अपराध फांसी देताहै, जो मत्स्यघाती मृगादिकोंकी हिंसा करताहै तथा पक्षियोंको मारताहै ॥ १२ ॥ और जो खेती करनेवाला ब्राह्मण दान न करताहो, यह पांचोंजने पापकरनेमें बराबर हैं ॥

कंडनी पेषणी चुल्ली उदकुंभी च मार्जनी ॥ १३ ॥ पंच सूना गृहस्थस्य अहन्यहनि वर्तते ॥ वैश्वदेवो बलिर्भिक्षा गोग्रासो हंतकारकः ॥ १४ ॥ गृहस्थः प्रत्यहं कुर्यात्सूनादोषैर्न लिप्यते ॥

ओखली, चक्की, चूल्हा, तथा जलसे भरेहुए पात्रोंके स्थान बुहारी ॥ १३ ॥ इन पांचो वस्तुओंसे नित्यप्रति हिंसा होतीहै, यदि गृहस्थी, नित्य नेमसे बलिवैश्वदेव और देवताका पूजन करता रहै; अतिथियोंको भिक्षा दे, और भोजन करनेसे पहले रसोईमेंके सम्पूर्ण पदार्थोंको थोडा २ गौग्रासभी आदरसहित देतारहै, तथा देवपितरोंके निमित्तभी सोलह ग्रासकी हंतकार निकालकर सुपात्र ब्राह्मण तथा गौआदिकको दे ॥ १४ ॥ तौ उस गृहस्थको उपरोक्त हिंसाओंके दोष नहीं लगते ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जहांगीराबाद २०२३६४ बलन्दशहर

वृक्षं छित्त्वा महीं भित्त्वा हत्वा च कृमिकीटकान् ॥ १५ ॥
कर्षकः खलयज्ञेन सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥

खेतीकरनेसे वृक्षोंका छेदन और पृथ्वीका भेदन होताहै; और हलसे कृमिआदिक असंख्यों जीव मरतेहैं ॥१५॥ इन पापोंसे मुक्त होनेके निमित्त खेतीकरनेवालेको खलयज्ञआदि अवश्य करने चाहिये ॥

यो न दद्याद्द्विजातिभ्यो राशिमूलमुपागतः ॥ १६ ॥
स चोरः स च पापिष्ठो ब्रह्मघ्नं तं विनिर्दिशेत् ॥

जो खेतीकरनेवाला मनुष्य अन्नके ढेरमेंसे प्रथम भाग सुपात्र ब्राह्मणको नहीं देता ॥१६॥ वह चोर, पापी, और ब्रह्महत्या करनेवालेकी समान है ॥

राज्ञे दत्त्वा तु षड्भागं देवानां चैकविंशकम् ॥ १७ ॥
विप्राणां त्रिंशकं भागं सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥

राजाको छठा भाग, और देवताओंको इक्कीसवां भाग खेती करनेवालेको देना उचित है ॥ १७ ॥ और ब्राह्मणको तीसवां भाग दे, तौ वह समस्त पापोंसे मुक्त होजाताहै ॥

क्षत्रियोऽपि कृषिं कृत्वा देवान्विप्रांश्च पूजयेत् ॥ १८ ॥
वैश्यः शूद्रस्तथा कुर्यात्कृषिवाणिज्यशिल्पकम् ॥

यदि खेतीकरनेवाला क्षत्रिय हो तौ वहभी इसी भांतिकरै, अर्थात् देवता ब्राह्मणादिको भाग दे ॥ १८ ॥ वैश्य और शूद्रभी खेती वाणिज्य और शिल्प कर्मको करैं ॥

विकर्म कुर्वते शूद्रा द्विजशुश्रूषयोज्झिताः ॥ १९ ॥
भवंत्यल्पायुषस्ते वै निरयं यांत्यसंशयम् ॥

जो शूद्र ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य इनकी सेवाको छोड़कर निषिद्ध कर्म करतेहैं ॥ १९ ॥ उनकी अवस्था अल्प होतीहै, और वह निःसन्देह नरकको जातेहैं ॥

चतुर्णामपि वर्णानामेष धर्मः सनातनः ॥ २० ॥
इति पाराशरीये धर्मशास्त्रे द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

चारों वर्णोंका सनातन धर्म यही है ॥ २० ॥

इति श्रीपाराशरीये धर्मशास्त्रे भाषाटीकायां द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

तृतीयोऽध्यायः ३.

अतः शुद्धिं प्रवक्ष्यामि जनने मरणे तथा ॥ दिनत्रयेण शुद्ध्यंति ब्राह्मणाः प्रेतसूतके ॥ १ ॥ क्षत्रियो द्वादशाहेन वैश्यः पंचदशाहकैः ॥ शूद्रः शुद्ध्यति मासेन पराशरवचो यथा ॥ २ ॥

इसके उपरान्त जन्ममरणके अशौचकी शुद्धि कहते हैं; मृतक आशौच में ब्राह्मण तीन दिनमें शुद्ध होताहै ॥ १ ॥ बारहदिन में क्षत्रिय शुद्ध होते हैं; वैश्य पंद्रह दिन से शुद्ध होताहै; और शूद्र एकमास से शुद्ध होता है ॥ २ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उपासने तु विप्राणामंगशुद्धिश्च जायते ॥
ब्राह्मणानां प्रसूतौ तु देहस्पर्शो विधीयते ॥ ३ ॥

आशौचकालमें ब्राह्मणोंकी अग्नि उपासनाके समयतक अंगशुद्धी होजातीहै; और जननाशौचमें ब्राह्मणोंके देहका स्पर्श कहाहै, (वह अस्पर्शनीय नहीं होता) ॥ ३ ॥

जातौ विप्रो दशाहेन द्वादशाहेन भूमिपः ॥
वैश्यः पंचदशाहेन शूद्रो मासेन शुद्धयति ॥ ४ ॥

एकाहाच्छुद्धयते विप्रो योऽग्निवेदसमन्वितः ॥ त्र्यहात्केवलवेदस्तु द्विहीनो दशभिर्दिनैः ॥ ५ ॥ जन्मकर्मपरिभ्रष्टः सन्ध्योपासनवर्जितः ॥ नामधारक विप्रस्तु दशाहं सूतकी भवेत् ॥ ६ ॥ ॥

जननाशौचमें ब्राह्मण दशदिन से शुद्ध होजाताहै, क्षत्रिय बारहदिनसे शुद्धहोताहै; वैश्य पंद्रह दिनसे शुद्ध होता है, और शूद्र एकमहीनेमें शुद्ध होता है ॥ ४ ॥ वेदपाठी ब्राह्मण और जो नित्य अग्निहोत्र करनेवाले हैं वह एकदिनमेंही शुद्ध होजातेहैं, और जो केवल वेदकरकेही युक्त हैं वह तीन दिनमें शुद्ध होतेहैं, और जो वेद तथा अग्निहोत्र इन दोनोंको नहीं करते वह दशदिनतक अशुद्ध रहतेहैं ॥ ५ ॥ जो ब्राह्मण जन्मसेही नित्य नैमित्तिक कर्मोंको नहीं करते, और संध्यावंदनभी नहीं करते वह नाममात्रके ब्राह्मण हैं, वह दशदिनतक अशुद्ध रहतेहैं ॥ ६ ॥

अजा गावो महिष्यश्च ब्राह्मणी नवसूतिका ॥
दशरात्रेण संशुद्धयेद्भूमिष्ठं च नवोदकम् ॥ ७ ॥

बकरी, गाय, भैंस तथा प्रसूता स्त्री; और भूमिपर स्थित वर्षाका जल इनकी शुद्धि दश दिनमें होतीहै ॥ ७ ॥

एकपिंडास्तु दायादाः पृथग्दारनिकेतनाः ॥ जन्मन्यपि विपत्तौ च तेषां तत्सूतकं भवेत् ॥ ८॥ तावत्तत्सूतकं गोत्रे चतुर्थपुरुषेण तु ॥ दायाद्विच्छेदमाप्नोति पंचमो वात्मवंशजः ॥ ९ ॥ चतुर्थे दशरात्रं स्यात्षण्निशाः पुंसि पंचमे॥ षष्ठे चतुरहाच्छुद्धिः सप्तमे तु दिनत्रयात् ॥ १० ॥

सपिंड दायाद अर्थात् बेटे पोते धनादिका भागलेनेवाले होतेहैं, चाहैं वह पृथक् २ भी रहतेहों परन्तु तौभी उनको जन्ममरणमें अशौच होताहै ॥ ८ ॥ गोत्रमें दशदिनतकही सूतक रहताहै, चौथी पीढीतककी संतान अर्थात् एक प्रपितामहतककी संतान एकगोत्र में कहलातीहै और पांचवीं पीढीका मनुष्य धनादिके भागका अधिकारी नहीं होता; इसकारण उसे दश दिनतक सूतक नहीं होता कारणकि चौथी पीढीके उपरान्त वंश संज्ञा होतीहै ॥ ९ ॥ चौथी पीढीवाला पुरुष दशदिनमें, छैः दिनमें पांचवीं पीढीवाला, छठी पीढीका पुरुष चार दिनमें और सातवीं पीढीवाला मनुष्य तीन दिनमें शुद्ध होताहै ॥ १० ॥

भृग्वग्निमरणे चैव देशांतरमृते तथा ॥
बाले प्रेते च संन्यस्ते सद्यः शौचं विधीयते ॥ ११ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जो पुरुष पर्वतसे गिरकर या अग्नि में गिरकर मरजाय या जो परदेश में मरगयाहो उसके सूतक में और बालक या संन्यासीकी मृत्यु होजानेपर शीघ्रही शुद्धि होजातीहै ॥ ११ ॥

देशांतरमृतः कश्चित्सगोत्रः श्रूयते यदि ॥
न त्रिरात्रमहोरात्रं सद्यः स्नात्वा शुचिर्भवेत् ॥ १२ ॥

यदि कोई गोत्रकाही परदेशमें मरजाय तौ तीनदिनका अशौच नहा होता; परन्तु जब मृत्युका समाचार सुनले तब शीघ्र स्नान करनेसे एक दिनरातमेंही शुद्धि होजाती है ॥१२॥

देशांतरगतो विप्रः प्रयासात्कालकारितात् ॥ देहनाशमनुप्राप्तस्तिथिर्न ज्ञायते यदि ॥ १३ ॥ कृष्णाष्टमी त्वमावास्या कृष्णा चैकादशी च या ॥ उदक पिंडदानं च तत्र श्राद्धं च कारयेत् ॥ १४ ॥

यदि जो ब्राह्मण परदेशमें जाकर कालवश मृत्युको प्राप्त होगया हो और उसके मृत्युकी तिथि ज्ञात न हो ॥ १३ ॥ तौ कृष्णपक्षकी अष्टमी वा अमावस्या तथा कृष्णपक्षकी एकादशीको उसके निमित्त जलदान पिंडदान और श्राद्ध करना उचित है ॥ १४ ॥

अजातदंता ये बाला ये च गर्भाद्विनिःसृताः ॥
न तेषामग्निसंस्कारो नाशौचं नोदकक्रिया ॥ १५ ॥

जिन बालकोंके दांत न निकले हों और जो गर्भमें से उत्पन्न होतेही मरजांय उनका अग्निसंस्कार और अशौच तथा जलदान नहीं होता ॥ १५ ॥

यदि गर्भो विपद्येत स्रवते वापि योषितः ॥ यावन्मासं स्थितो गर्भो दिनं तावत्तु सूतकम् ॥ १६ ॥ आचतुर्थाद्भवेत्स्रावः पातः पंचमषष्ठयोः ॥ अत ऊर्ध्वं प्रसूतिः स्याद्दशाहं सूतकं भवेत् ॥ १७ ॥

यदि गर्भस्राव तथा गर्भपात होजाय तौ जितने महीनेंका गर्भ गिरैगा उतनेही दिनोंका सूतक होगा ॥ १६ ॥ चार महीनेका गर्भ गिरजानेपर उसे गर्भस्राव कहतेहैं, और पांच या छठेमहीनेमें गर्भ गिरनेको "गर्भपात" कहतेहैं । इसके पीछे छठे या दशमें महीनेतक प्रसव कहाताहै; प्रसवकालमें दशदिनका सूतक मानना उचित है ॥ १७ ॥

दंतजातेऽनुजाते च कृतचूडे च संस्थिते ॥ अग्निसंस्कारणं तेषां त्रिरात्रमशुचिर्भवेत् ॥ १८॥ आदंताज्जन्मतः सद्य आचूडान्नैशिकी स्मृता ॥ त्रिरात्रमाव्रतादेशाद्दशरात्रमतः परम् ॥ १९ ॥

दांत जमनेपर या चूडाकर्म हाजानेपर यदि बालक मरजाय तौ उसका अग्निसंस्कार करना चाहिये और तीनदिनतक आशौच मानना कर्तव्य है ॥ १८ ॥ और बिना दांतोंके जमेही यदि बालक मरजाय तौ स्नान करनेसेही शीघ्र शुद्धि होजातीहै; चूडाकरणसे प्रथमही बालक मरजाय, तौ एक दिनरातमें शुद्धि होतीहै । यज्ञोपवीत विनाहुए जिसकी मृत्यु होजाय तौ तीन दिनतक आशौच रहताहै; इसके पीछे यज्ञोपवीत होजानेपर दशदिनमें शुद्धि होतीहै ॥ १९ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ब्रह्मचारी गृहे येषां हूयते च हुताशनः ॥ संपर्कं चेन्न कुर्वंति न तेषां सूतकं भवेत्॥ २० ॥ संपर्काद्दुष्यते विप्रो जनने मरणे तथा ॥ संपर्काच्च निवृत्तस्य न प्रेतं नैव सूतकम् ॥ २१ ॥

जिसके घरमें कोई मनुष्य ब्रह्मचारी हो और अग्निहोत्र करताहो, और वह प्रसूता स्त्रीसे स्पर्श न करताहो तौ उसे अशौच नहीं होता ॥ २० ॥ ब्राह्मणको जन्म मरणमें स्पर्श करनेसे सूतक लगताहै, और जो स्पर्श नहीं करता उसे जन्म वा मरणका सूतक नहीं होता॥२१॥

शिल्पिनः कारुका वैद्या दासीदासाश्च नापिताः ॥
राजानः श्रोत्रियाश्चैव सद्यःशौचाः प्रकीर्तिताः ॥ २२ ॥

(शिल्प कार्य करनेवाले, कारुक, हलवाई इत्यादि) वैद्य, दासी, दास, नाई, राजा और वेदपाठी इन सबकी शुद्धि शीघ्र होजातीहै ॥ २२ ॥

सव्रतो मंत्रपूतश्च आहिताग्निश्च यो द्विजः ॥
राज्ञश्च सूतकं नास्ति यस्य चेच्छति पार्थिवः ॥ २३ ॥

जो ब्राह्मण पवित्रभावसे व्रत और यज्ञ करताहै, और नित्य अग्निहोत्र करताहै उस ब्राह्मणको, राजाको तथा राजा चाहे उसको सूतक नहीं लगता वह स्नानमात्रसेही शुद्ध होजातेहैं ॥ २३ ॥

उद्यतो निधने दाने आर्तो विप्रो निमंत्रितः ॥
तदैव ऋषिभिर्दृष्टं यथा कालेन शुद्ध्यति ॥ २४ ॥

मृत्यु और दानमें नियुक्त, दुःखार्त होकर किसीसे निमंत्रण दिया हुआ ब्राह्मण समयके अनुसार शुद्ध होताहै ऐसा ऋषियोंका वचन है ॥ २४ ॥

प्रसवे गृहमेधी तु न कुर्यात्संकरं यदि ॥
दशाहाच्छुद्ध्यते माता त्ववगाह्य पिता शुचिः ॥ २५ ॥

गृहस्थी ब्राह्मण अपने यहां सन्तान पैदाहोनेमें मेल (संकर) न करै अर्थात् विजातीय स्त्रीको छोडकर स्वजातीय स्त्रीसेही सन्तान उत्पन्न होनेमें उस उत्पन्नहुए बालककी माता तौ दशदिनमें शुद्ध होती है, और उस सन्तानका पिता केवल स्नान करने मात्रहीसे शुद्ध होजाताहै ॥ २५ ॥

सर्वेषां शावमाशौचं मातापित्रोस्तु सूतकम् ॥
सूतकं मातुरेव स्यादुपस्पृश्य पिता शुचिः ॥ २६ ॥

मृतकका अशौच तौ सारे कुटुम्बको होताहै; और जन्म सूतकका अशौच माता, पिता दोनोंको होताहै; इसमें सूतक केवल माताकोही लगताहै, कारण कि पिता तौ केवल आचमन करनेसेही शुद्ध होजाताहै ॥ २६ ॥

यदि पत्न्यां प्रसूतायां संपर्कं कुरुते द्विजः ॥ सूतकं तु भवेत्तस्य यदि विप्रः षडंगवित् ॥ २७ ॥ संपर्काज्जायते दोषो नान्यो दोषोऽस्ति वै द्विजे ॥ तस्मात्सर्वप्रयत्नेन संपर्कं वर्जयेद्बुधः ॥ २८ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रसूता स्त्रीका संसर्ग होनेसे ब्राह्मणको अवश्य सूतक लगताहै; चाहै वह ब्राह्मण वेदोंका जाननेवालाभी हो ॥ २७ ॥ ब्राह्मणको संसर्गमात्रसे ही दोष लगताहै; संसर्गके बिनाहुए दोष नहीं लगता; इसकारण सम्पूर्ण यत्नसहित विद्वानोंको संसर्गकाही त्यागकरना उचितहै॥२८॥

विवाहोत्सवयज्ञेषु त्वंतरा मृतसूतके ॥
पूर्वसंकल्पितं द्रव्यं दीयमानं न दुष्यति ॥ २९ ॥

यदि विवाह, उत्सव, और यज्ञादिके समय किसी सपिंडादिकी मृत्यु होनेके कारण सूतक होजाय; तौ प्रथम संकल्प कियाहुआ जो द्रव्य किसीको देनेके निमित्त रक्खाहै वह दूषित नहीं होता ॥ २९ ॥

अंतरा तु दशाहस्य पुनर्मरणजन्मनी ॥
तावत्स्यादशुचिर्विप्रो यावत्पूर्वं न गच्छति ॥ ३० ॥

यदि दशदिनके बीचमेंही किसी दूसरे मनुष्यका जन्म वा मृत्यु होजाय तौ ब्राह्मण उसी समयतक अशुद्ध रहताहै कि जिस समयतक पहले मनुष्यके जन्ममृत्युसे अशुद्धि रहतीहै॥३०॥

ब्राह्मणार्थे विपन्नानां बंदीगोग्रहणे तथा ॥
आहवेषु विपन्नानामेकरात्रमशौचकम् ॥ ३१ ॥

जिसकी मृत्यु गौब्राह्मणके निमित्त हुईहो अथवा जो संग्राममें माराहो उनको अशौच एक दिनरातमें होताहै ॥ ३१ ॥

द्वाविमौ पुरुषौ लोके सूर्यमंडलभेदिनौ ॥
परिव्राड् योगयुक्तश्च रणे चाभिमुखो हतः ॥ ३२ ॥

संसारमें यह दो मनुष्यही सूर्य मंडलको भेदकर ब्रह्मलोकको जातेहैं; एक तौ योगी संन्यासी और दूसरा रणभूमिमें सन्मुख होकर जो माराहो ॥ ३२ ॥

यत्र यत्र हतः शूरः शत्रुभिः परिवेष्टितः ॥
अक्षयाँल्लभते लोकान्यदि क्लीबं न भाषते ॥ ३३ ॥

शत्रुओंसे घेरे जानेपरभी जो शूरवीर नपुंसकताके वचन नहीं कहते; उनकी मृत्यु चाहै जिस स्थानमें हुईहो परन्तु वह निश्चयही अक्षय लोकोंको प्राप्त होतेहैं ॥ ३३ ॥

संन्यस्तं ब्राह्मणं दृष्ट्वा स्थानाच्चलति भास्करः ॥
एष मे मंडलं भित्त्वा परं स्थानं प्रयास्यति ॥ ३४ ॥

सूर्य भगवान् भी संन्यासी ब्राह्मणको देखकर अपने स्थानसे चलायमान होजातेहैं; वह यह विचारतेहैं कि, यह मेरे मण्डलकी भेदन करके परमपदको प्राप्त होगा ॥ ३४ ॥

यस्तु भग्नेषु सैन्येषु विद्रवत्सु समंततः ॥
परित्राता यदा गच्छेत्स च क्रतुफलं लभेत् ॥ ३५ ॥

जो रणमें भागतीहुई सेनाकी रक्षा करताहै, वह यज्ञके फलको पाताहै ॥ ३५ ॥

यस्य च्छेदक्षतं गात्रं शरमुद्गरयष्टिभिः ॥ देवकन्यास्तु तं वीरं हरंति रमयंति च ॥ ३६ ॥ देवांगनासहस्राणि शूरमायोधने हतम् ॥ त्वरमाणाः प्रधावंति मम भर्ता ममेति च ॥ ३७ ॥ यं यज्ञसंघैस्तपसा च विप्राः स्वर्गैषिणो वात्र

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यथैव यांति ॥ क्षणेन यांत्येव हि तत्र वीराः प्राणान्सुयुद्धेन परित्यजंति ॥ ३८ ॥ जितेन लभ्यते लक्ष्मीर्मृतेनापि वरांगना ॥ क्षणध्वंसिनि कायेऽस्मिन्का चिंता मरणे रणे ॥ ३९ ॥ ललाटदेशे रुधिरं स्रवच्च यस्याहवे तु प्रविशेत वक्त्रम् ॥ तत्सोमपानेन किलास्य तुल्यं संग्रामयज्ञे विधिवच्च दृष्टम् ॥ ४० ॥

जिसका शरीर रणस्थानमें शूल, मुद्गर, और लाठी आदिकोंसे क्षत हुआहो उस वीरको देवकन्या लेजातीहैं ॥ ३६ ॥ जिसकी संग्राममें मृत्यु होतीहै उस वीरको देखकर सहस्रों देवांगना "यह मेरा पति हो" ऐसा कहतीहुई शीघ्र उसके पासको जातीहैं ॥ ३७ ॥ स्वर्गकी इच्छा करनेवाले ब्राह्मण अनेक यज्ञ और तपकरके जिस भांति जिस स्थानको प्राप्त होतेहैं; उसी प्रकार उस स्थानको रणमें प्राणत्यागन करनेवाले वीर क्षणमात्रमें प्राप्त होजातेहैं ॥ ३८ ॥ लक्ष्मीकी प्राप्ति रणमें विजय प्राप्त होनेसे होतीहै; और देवांगनाओंकी प्राप्ति मृत्यु होनेसे होतीहै. फिर यदि यह शरीर युद्धमें प्राप्त होजाय तौ इसकी चिन्ताही क्या है कारण कि यह क्षणमें भंग होनेवाला है ॥ ३९ ॥ संग्रामभूमिमें जिस वीरपुरुषके मस्तकसे रुधिर वहकर मुखमें चलाजाय, उसके निमित्त वह रुधिरका पान संग्रामरूपी यज्ञमें विधिपूर्वक सोमपान करनेकी समान है इसमें संदेह नहीं ॥ ४० ॥

अनाथं ब्राह्मणं प्रेतं ये वहंति द्विजातयः ॥ पदे पदे यज्ञफलमानुपूर्व्याल्लभंति ते ॥ ४१ ॥ न तेषामशुभं किंचित्पापं वा शुभकर्मणाम् ॥ जलावगाहनात्तेषां सद्यः शौचं विधीयते ॥ ४२ ॥ असगोत्रमबंधुं च प्रेतीभूतं द्विजोत्तमम् ॥ वहित्वा च दहित्वा च प्राणायामेन शुद्ध्यति ॥ ४३ ॥ अनुगम्येच्छया प्रेतं ज्ञातिमज्ञातिमेव वा ॥ स्नात्वा सचैलं स्पृष्ट्वाग्निं घृतं प्राश्य विशुद्ध्यति ॥ ४४ ॥

जो ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, अनाथ ब्राह्मणके मरजाने पर उसे अपने कंधेपर लेजातेहैं; उनको एक २ पगपर एक २ यज्ञका फल मिलताहै ॥ ४१ ॥ जो मनुष्य मृतक हुए अनाथब्राह्मणको अपने कंधेपर रखकर स्मशानमें लेजाते हैं; उन श्रेष्ठकर्मकरनेवाले मनुष्योंको कुछ पाप या अमंगल नहीं होता, केवल जलमें स्नानकरनेसेही उनकी शुद्धि होजातीहै ॥ ४२ ॥ अपने गोत्रसे पृथक् श्रेष्ठ ब्राह्मणके मरजानेपर जो उसे कंधेपर लेजाकर दाह करतेहैं उनकी शुद्धि केवल प्राणायामसेही होजातीहै ॥ ४३ ॥ जो मनुष्य अपनी इच्छानुसार मृतक मनुष्यके पीछे जाय, वह अपनी जातिका हो या अन्यजातिका हो तौ उसके पीछे जानेसे वस्त्रसहित स्नानकर अग्निका स्पर्श कर घृतके चाखनेसेही उसकी शुद्धि होतीहै ॥ ४४ ॥

क्षत्रियं मृतमज्ञानाद्ब्राह्मणो योऽनुगच्छति ॥
एकाहमशुचिर्भूत्वा पंचगव्येन शुद्ध्यति ॥ ४५ ॥

जो ब्राह्मण अज्ञानतासे क्षत्रियके मृतक शरीरके पीछे जाय, तौ उसको एक दिन अशौच रहताहै और पंचगव्यके पीनेसे उसकी शुद्धि होतीहै ॥ ४५ ॥

शवं च वैश्यमज्ञानाद्ब्राह्मणो ह्यनुगच्छति ॥
कृत्वा शौचं द्विरात्रं च प्राणायामान्षडाचरेत् ॥ ४६ ॥

वैश्यके पीछे अज्ञानतासे जानेपर तीनरात अशौच रहताहै और छैः प्राणायाम करनेसे उसकी शुद्धि होतीहै ॥ ४६ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE Grant-2

जहाँगीराबाद बुलन्दशहर

प्रेतीभूतं तु यः शूद्रं ब्राह्मणो ज्ञानदुर्बलः ॥ अनुगच्छेन्नीयमानं त्रिरात्रमशुचिर्भवेत् ॥ ४७ ॥ त्रिरात्रे तु ततः पूर्णे नदीं गत्वा समुद्रगाम् ॥ प्राणायामशतं कृत्वा घृतं प्राश्य विशुद्ध्यति ॥ ४८ ॥

जो अज्ञानी ब्राह्मण शूद्रके मृतक देहके पीछे जाताहै वह तीन दिनतक अशुद्ध रहताहै ॥ ४७ ॥ इसके उपरान्त समुद्रगामिनी नदीके किनारे जाकर सौ प्राणायामकर घृतका भोजन करै तब उसकी शुद्धि होतीहै ॥ ४८ ॥

विनिवर्त्य यदा शूद्रा उदकांतमुपस्थिताः ॥ द्विजैस्तदानुगंतव्या एष धर्मः सनातनः ॥ ४९ ॥ तस्माद्द्विजो मृतं शूद्रं न स्पृशेन्न च दाहयेत् ॥ दृष्टे सूर्यावलोकेन शुद्धिरेषा पुरातनी ॥ ५० ॥

इति पाराशरीये धर्मशास्त्रे तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

जिससमय श्मशानसे लौटकर शूद्र जलके निकट आवे उस समय ब्राह्मण उनके समीप जाँय यही सनातन धर्म है ॥ ४९ ॥ इसकारण ब्राह्मण मृतक शूद्रका स्पर्श तथा उसकी दाह क्रिया न करै। जो मृतक शूद्रका दर्शन करताहै उसकी शुद्धि सूर्य नारायणके दर्शन करनेसे होतीहै यही पुरातन शुद्धि है ॥ ५० ॥

इति श्रीपाराशरीये धर्मशास्त्रे भाषाटीकायां तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

चतुर्थोऽध्यायः ४.

अतिमानादतिक्रोधात्स्नेहाद्वा यदि वा भयात् ॥ उद्बध्नीयात्स्त्री पुमान्वा गतिरेषा विधीयते ॥ १ ॥ पूयशोणितसंपूर्णे त्वंधे तमसि मज्जति ॥ षष्टिवर्षसहस्राणि नरकं प्रतिपद्यते ॥ २ ॥ नाशौचं नोदकं नाग्निं नाश्रुपातं च कारयेत् ॥ वोढारोऽग्निप्रदातारः पाशच्छेदकरास्तथा ॥ ३ ॥ तप्तकृच्छ्रेण शुद्ध्यंतीत्येवमाह प्रजापतिः ॥

जो स्त्री पुरुष अत्यन्त क्रोध, द्वेष वा लोकभयादिके कारण अपनेको फाँसी खाकर मारडालैं तौ उसकी गति इसप्रकार होतीहै ॥ १ ॥ वह मनुष्य रुधिर और पीवसे भरे हुए अंधतामिस्रनामक नरकमें डूबता है और फिर साठसहस्र वर्षतक निवास करताहै ॥ २ ॥ उसका अशौच न माने अग्निसंस्कार न करै, उसको जलदान न करै, वरन उसके लिये आंसुओंका जलभी न डालै; जो मनुष्य उस मृतकको लेजातेहैं, या जो दाह करतेहैं, या जो पाश छेदन करतेहैं ॥ ३ ॥ उनकी शुद्धि तप्तकृच्छ्रके करनेसे होतीहै, यह प्रजापति ब्रह्माजीने कहाहै ॥

गोभिर्हतं तथोद्बद्धं ब्राह्मणेन तु घातितम् ॥ ४ ॥ संस्पृशंति तु ये विप्रा वोढारश्चाग्निदाश्च ये ॥ अन्ये ये चारगंतारः पाशच्छेदकराश्च ये ॥ ५ ॥ तप्तकृच्छ्रेण शुद्धास्ते कुर्युर्ब्राह्मणभोजनम् ॥ अनडुत्सहितां गां च दद्युर्विप्राय दक्षिणाम् ॥ ६ ॥

जिसको गौने या ब्राह्मणने माराहै अथवा जो फाँसी खाकर मरा है ॥ ४ ॥ जो ब्राह्मण उस मृतकका स्पर्श करतेहैं वा श्मशानमें लेजाते हैं तथा उसका दाह करते हैं, या जो उसके

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पीछे जातेहैं वा उसकी पाश छेदन करतेहैं ॥ ५ ॥ उनकी शुद्धि तप्तकृच्छ्र व्रत कर सुपात्र ब्राह्मणको भोजन कराकर एक बैल और गौ दक्षिणामें देनेसे होतीहै ॥ ६ ॥

त्र्यहमुष्णं पिबेद्वारि त्र्यहमुष्णं पयः पिबेत् ॥ त्र्यहमुष्णं पिबेत्सर्पिर्वायुभक्षो दिनत्रयम् ॥ ७ ॥ षट्पलं तु पिबेदंभस्त्रिपलं तु पयः पिबेत् ॥ पलमेकं पिबेत्सर्पिस्तप्तकृच्छ्रं विधीयते ॥ ८॥

अत्र तप्तकृच्छ्रव्रतकी विधि कहतेहैं; तप्तकृच्छ्र करनेवाला पुरुष तीन दिनतक छैः पल उष्ण जलको पियै; इसके पीछे तीन दिनतक प्रतिदिन चार २ पल उष्ण दुग्ध पान करै; उसके पीछे तीन दिनतक एक पल उष्ण घृत पान करै; और तीन दिनतक वायु भक्षण करै अर्थात् निर्जल व्रत करै यह तप्तकृच्छ्रका विधान है ॥ ७ ॥ ८ ॥

यो वै समाचरेद्विप्रः पतितादिष्वकामतः ॥ पंचाहं वा दशाहं वा द्वादशाहमथापि वा ॥ ९ ॥ मासार्द्धमासमेकं वा मासद्वयमथापि वा ॥ अष्टार्द्धमर्द्धमेकं वा भवेदूर्ध्वं हि तत्समः ॥ १० ॥

जो ब्राह्मण विना इच्छाके पतितादिकोंसे ५ दिन १० दिन १२ दिन ॥ ९ ॥ अथवा १५ दिन तथा एक महीना वा दो महीना, या चार महीने तथा एक वर्ष संसर्ग करताहै, वह ब्राह्मण उसीके समान पतित होजाताहै ॥ १० ॥

त्रिरात्रं प्रथमे पक्षे द्वितीये कृच्छ्रमाचरेत् ॥ तृतीये चैव पक्षे तु कृच्छ्रं सांतपनं चरेत् ॥ ११ ॥ चतुर्थे दशरात्रं स्यात्पराकः पंचमे मतः ॥ कुर्याच्चांद्रायणं षष्ठे सप्तमे त्वैंदवद्वयम् ॥१२॥ शुद्ध्यर्थमष्टमे चैव षण्मासात्कृच्छ्रमाचरेत् ॥ पक्षसंख्याप्रमाणेन सुवर्णान्यपि दक्षिणा ॥ १३ ॥

यदि पांच दिनतक पतितोंका संसर्ग कियाहो तौ उसकी शुद्धि तीन दिनतक उपवास करनेसे होतीहै; और जो दसदिन संसर्ग करताहै उसकी शुद्धि कृच्छ्रव्रतके करनेसे होतीहै, और जो बारह दिन संसर्ग करताहै वह तप्तकृच्छ्र करनेसे शुद्ध होताहै ॥ ११ ॥ पंद्रह दिन संसर्ग करनेसे दशदिनतक उपवास करै, और एक महीनेतक संसर्ग होनेसे पराकव्रतकरै दोमहीने संसर्ग होनेपर चांद्रायणव्रत करै; और चार महीने संसर्ग होनेसे दो चांद्रायणव्रत करै ॥१२॥ यदि एक वर्षतक संसर्ग रहाहो तौ छैः महीनेतक कृच्छ्रव्रत करै; और जितने पक्षतक संसर्ग रहाहो उतनीही सुवर्णकी दक्षिणा देनेसे शुद्धि होतीहै; पूर्वोक्त प्रकारसे पहला पक्ष ५ दिनका है ऐसेही १० । १२ । १५ दिन । १ मास । २ मास । ४ मास । और एक वर्षके क्रमसे ८ पक्षका जानना ॥ १३ ॥

ऋतुस्नाता तु या नारी भर्तारं नोपसर्पति ॥
सा मृता नरकं याति विधवा च पुनः पुनः ॥ १४ ॥

जो ऋतुमती होनेके पीछे स्नान करके स्त्री अपने स्वामीके समीप नहीं जाती वह मृत्युके उपरान्त नरकको जातीहै, और नरक भोगनेके उपरान्त वारंवार विधवा होतीहै ॥ १४ ॥

ऋतुस्नातां तु यो भार्यां सन्निधौ नोपगच्छति ॥
घोरायां भ्रूणहत्यायां युज्यते नात्र संशयः ॥ १५ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

और जो मनुष्य अपनी ऋतुस्नाता स्त्रीके समीप नहीं जाता वह घोर गर्भहिंसाके पापसे युक्त होताहै इसमें किंचित्भी संदेह नहीं ॥ १५ ॥

दरिद्रं व्याधितं धूर्तं भर्तारं यावमन्यते ॥ सा शुनी जायते मृत्वा सूकरी च पुनः पुनः ॥ १६ ॥ पत्यौ जीवति या नारी उपोष्य व्रतमाचरेत् ॥ आयुष्यं हरते भर्तुः सा नारी नरकं व्रजेत् ॥ १७ ॥ अपृष्ट्वा चैव भर्त्तारं या नारी कुरुते व्रतम् ॥ सर्वं तद्राक्षसान्गच्छेदित्येवं मनुरब्रवीत् ॥ १८ ॥ बांधवानां सजातीनां दुर्वृत्तं कुरुते तु या॥गर्भपातं च या कुर्यान्न तां संभाषयेत्क्वचित् ॥१९॥ यत्पापं ब्रह्महत्याया द्विगुणं गर्भपातने ॥ प्रायश्चित्तं न तस्यास्ति तस्यास्त्यागो विधीयते ॥ २० ॥

जो स्त्री अपने दरिद्री, रोगी, वा धूर्त पतिके होने पर उसका तिरस्कार करती है वह मृत्युके उपरान्त वारंवार कूकरी वा शूकरीकी योनिको प्राप्त होती है ॥ १६ ॥ जो स्त्री अपने पतिके जीवित रहते हुए निराहार व्रत करतीहै, वह पतिकी आयु हरण करतीहै, और मरनेके उपरान्त नरकको जातीहै ॥ १७ ॥ जो स्त्री विना पतिकी आज्ञाके व्रतकरतीहै उसका फल राक्षस लेजातेहैं, और वह व्रत निष्फल होजाताहै मनुजीका यह वचन है ॥ १८ ॥ जो स्त्री अपने बंधुबांधवोंसे अथवा अपनी जातिवालोंसे दुराचरण करतीहै, या जो गर्भपात करती है उस स्त्रीसे कभी वार्तालाप न करे ॥ १९ ॥ जो पाप ब्रह्महिंसामें होताहै उससे दुगना पाप गर्भ गिरानेमें होताहै उसका प्रायश्चित्त नहीं है इस कारण उस स्त्रीका त्यागही करना उचित है ॥ २० ॥

न कार्यमावसथ्येन नाग्निहोत्रेण वा पुनः ॥
स भवेत्कर्मचांडालो यस्तु धर्मपराङ्मुखः ॥ २१ ॥

जो मनुष्य गृहस्थीके कर्मोंको नहीं करताहै अथवा जो अग्निहोत्र नहीं करताहै या जो धर्मसे विमुख रहकर कर्म करताहै वह चांडाल होताहै ॥ २१ ॥

ओघवाताहृतं बीजं यस्य क्षेत्रे प्ररोहति ॥ स क्षेत्री लभते बीजं न बीजी भागमर्हति ॥ २२ ॥ तद्वत्परस्त्रियः पुत्रौ द्वौ सुतौ कुंडगोलकौ ॥ पत्यौ जीवति कुंडस्तु मृते भर्तरि गोलकः ॥ २३ ॥

यदि जल और पवनके वेगसे किसी मनुष्यका बीज दूसरे मनुष्यके खेतमें जाकर उत्पन्न होजाय तौ उस बीजके फलका भागी खेतवाला ही होताहै, बीजवालेको भाग नहीं मिलता ॥ २२ ॥ इसी भांति कुंड और गोलक दो पुत्र जो परस्त्रीसे उत्पन्न होते हैं वह स्त्रीकेही पुत्र हैं, वीर्य देनेवालेके नहीं पतिके जीवित रहतेहुए जारसे उत्पन्न हुए पुत्रको कुंड कहतेहैं और पतिकी मृत्यु होनेके पीछे उत्पन्न हुए पुत्रको गोलक कहते हैं ॥ २३ ॥

औरसः [illegible]श्चैव दत्तः कृत्रिमकः सुतः ॥
दद्या[illegible] पिता वापि स पुत्रो दत्तको भवेत् ॥ २४ ॥

औरस, क्षेत्रज, तथा दत्तक और कृत्रिम यहभी पुत्र हैं; जो पुत्र माता और पिताने किसीको दियाहो वह दत्तक कहलाताहै ॥ २४ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

परिवित्तिः परिवेत्ता यया च परिविद्यते ॥ सर्वे ते नरकं यांति दातृयाजकपंचमाः ॥ २५ ॥ द्वौ कृच्छ्रौ परिवित्तेस्तु कन्यायाः कृच्छ्र एव च ॥ कृच्छ्रातिकृच्छ्रौ दातुस्तु होता चांद्रायणं चरेत् ॥ २६ ॥ कुब्जवामनषंढेषु गद्गदेषु जडेषु च ॥ जात्यंधे बधिरे मूके न दोषः परिविंदतः ॥ २७ ॥ पितृव्यपुत्रः सापत्नः परनारीसुतस्तथा ॥ दाराग्निहोत्रसंयोगे न दोषः परिवेदने ॥ २८ ॥ ज्येष्ठो भ्राता यदा तिष्ठेदाधानं नैव कारयेत् ॥ अनुज्ञातस्तु कुर्वीत शंखस्य वचनं यथा ॥ २९ ॥

परिवित्ति, और परिवेत्ता, तथा जो कन्या परिवेत्तासे विवाही जाय, कन्यादान करनेवाला और याजक यह पांचों नरकमें जातेहैं, यदि बडे भाईसे पहले छोटे भाईका विवाह होगयाहो, तौ वह दोनों भाई दो कृच्छ्रव्रत करैं तब उनकी शुद्धि होतीहै, और विवाहिता कन्या एक कृच्छ्रव्रत करै, और कन्यादान करनेवाला कृच्छ्र और अतिकृच्छ्र व्रतकरै; और होता (हवनका करनेवाला) चांद्रायण व्रतके करनेसे शुद्ध होताहै ॥ २५ ॥ २६ ॥ जो बडा भाई, कुबडा, बौना, नपुंसक अथवा तोतला, मूर्ख, जन्मसे अंधा, बहिरा वा गूंगा हो तौ वह छोटा भाई परिवेदनके दोषका भागी नहींहै ॥ २७ ॥ यदि चचेरा व तपेरा भाई अथवा सपत्नीका पुत्र या दूसरी स्त्रीसे उत्पन्न हुआ पुत्र बडाभाई हो तौ सन्तान उत्पत्ति वा अग्निहोत्रके लिये विवाह करनेमें कुछ दोष नहींहै ॥ २८ ॥ बडे भाईके होतेहुए छोटाभाई अग्निहोत्रको ग्रहण न करै वरन शंखके वचनानुसार उसकी आज्ञा लेकर अग्निहोत्रके ग्रहणकरनेका अधिकारी है ॥ २९ ॥

नष्टे मृते प्रव्रजिते क्लीबे च पतिते पतौ ॥
पंचस्वापत्सु नारीणां पतिरन्यो विधीयते ॥ ३० ॥

जिस कन्याका वाग्दान होगयाहो और विवाह न हुआहो यदि इसी समयमें उसका पति मरजाय, या नष्ट होजाय अथवा संन्यासी या नपुंसक होजाय तौ उस कन्याका विवाह दूसरे पतिके साथ करदेना चाहिये ॥ ३० ॥

मृते भर्तरि या नारी ब्रह्मचर्यव्रते स्थिता ॥ सा मृता लभते स्वर्गं यथा ते ब्रह्मचारिणः ॥ ३१ ॥ तिस्रः कोटयोऽर्धकोटी च यानि लोमानि मानवे ॥ तावत्कालं वसेत्स्वर्गे भर्तारं याऽनुगच्छति ॥ ३२ ॥ व्यालग्राही यथा व्यालं बलादुद्धरते बिलात् ॥ एवं स्त्री पतिमुद्धृत्य तेनैव सह मोदते ॥ ३३ ॥

॥ इति पाराशरे धर्मशास्त्रे चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

पतिके मरजानेपर जो स्त्री ब्रह्मचर्य नियममें स्थित हो, वह मरनेके उपरान्त ब्रह्मचारीकी समान स्वर्गमें जातीहै ॥ ३१ ॥ और स्वामीके मरनेके उपरान्त जो स्त्री अपने पतिके साथ सती होजातीहै वह स्त्री मनुष्यके शरीरमें जितने रोम हैं उतनेही वर्षतक स्वर्गमें निवास करतीहै; अर्थात् सती स्त्री साढे तीन करोड वर्षतक स्वर्गमें वास करतीहै ॥ ३२ ॥ सर्पका पकडनेवाला जिसभांति सर्पको गड्ढेमेंसे बलपूर्वक निकालताहै उसी प्रकार वह स्त्री अपने पतिका पापोंसे उद्धार कर उसके साथ आनंद करतीहै ॥ ३३ ॥

इति श्रीपाराशरीये धर्मशास्त्रे भाषाटीकायां चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पंचमोऽध्यायः ५.

वृकश्वानशृगालादिदष्टो यस्तु द्विजोत्तमः ॥
स्नात्वा जपेत्स गायत्रीं पवित्रां वेदमातरम् ॥ १ ॥

जिस ब्राह्मणको भेडिये, कुत्ते, तथा गीदड आदिने काटाहो वह स्नानकर गायत्रीका जप करै, कारण कि गायत्री परम पवित्र और वेदोंकी माता है ॥ १ ॥

गवां शृंगोदकस्नानान्महानद्योस्तु संगमे ॥ समुद्रदर्शनाद्वापि शुना दष्टः शुचिर्भवेत् ॥ २ ॥ वेदविद्याव्रतस्नातः शुना दष्टो द्विजो यदि ॥ सहिरण्योदके स्नात्वा घृतं प्राश्य विशुद्ध्यति ॥ ३ ॥ सव्रतस्तु शुना दष्टो यस्त्रिरात्रमुपावसेत् ॥ घृतं कुशोदकं पीत्वा व्रतशेषं समापयेत् ॥ ४ ॥ अव्रतः सव्रतो वापि शुना दष्टो भवेद्द्विजः ॥ प्रणिपत्य भवेत्पूतो विप्रैश्चक्षुर्निरीक्षितः ॥ ५ ॥ शुना घ्राताऽवलीढस्य नखैर्विलिखितस्य च ॥ अद्भिः प्रक्षालनं प्रोक्तमग्निना चोपचूलनम् ॥ ६ ॥

जिसको श्वानआदिकोंने काटा हो वह गोशृंगसे शुद्ध कियेहुए जलसे स्नान करनेसे तथा पवित्र नदियोंके संगममें स्नान करनेसे अथवा समुद्रका दर्शन करनेसेही शुद्ध होजाताहै ॥ २ ॥ यदि व्रतानुष्ठायी ब्राह्मणको कुत्तेने काटा हो, तौ वह सुवर्णसे शुद्ध किये जलसे स्नान करै और घृतका भोजन करनेसे शुद्ध होताहै ॥ ३ ॥ जो ब्राह्मण तीन दिनका व्रत कररहाहो यदि उसको कुत्ता काटै तौ वह घृत और कुशोदकके पानकरनेसे शुद्ध होताहै ॥ ४ ॥ जिस ब्राह्मणको कुत्तेने काटाहो वह व्रती हो या व्रतहीन हो परन्तु ब्राह्मणोंको प्रणाम करकै उनकी दृष्टिमात्रसेही शुद्ध होजाताहै ॥ ५ ॥ जिसको श्वानने चाटाहो या सूंघा हो वा नखोंसे आघात कियाहो तो उसको जलसे धोकर अग्निसे तप्त करै तव उसकी शुद्धि होतीहै ॥ ६ ॥

ब्राह्मणी तु शुना दष्टा जंबुकेन वृकेण वा ॥ उदितं ग्रहनक्षत्रं दृष्ट्वा सद्यः शुचिर्भवेत् ॥ ७ ॥ कृष्णपक्षे यदा सोमो न दृश्येत कदाचन ॥ यां दिशं व्रजते सोमस्तां दिशं चाऽवलोकयेत् ॥ ८ ॥

जिस ब्राह्मणीको श्वान, शृगाल तथा वृकादिने काटाहो तौ वह उदय होते हुए सूर्य चन्द्रमादि ग्रह और नक्षत्रोंका दर्शन करै तव उसकी शुद्धि होजातीहै ॥ ७ ॥ कदाचित् चन्द्रमाका दर्शन कृष्णपक्षमें न भी हो तौ उस दिन जिस दिशामें चन्द्रमा उदयहो उस दिशाकाही दर्शन करले ॥ ८ ॥

असद्ब्राह्मणके ग्रामे शुना दष्टो द्विजोत्तमः ॥
वृषं प्रदक्षिणीकृत्य सद्यः स्नात्वा शुचिर्भवेत् ॥ ९ ॥

श्रेष्ठ ब्राह्मण जिस ग्राममें न हो और किसी ब्राह्मणको कुत्ता काटै तौ वह स्नानकरकै वृषभकी प्रदक्षिणा करनेसे शीघ्रही शुद्ध होजाताहै ॥ ९ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चंडालेन श्वपाकेन गोभिर्विप्रैर्हतो यदि ॥ आहिताग्निर्मृतो विप्रो विषेणात्मा हतो यदि ॥ १० ॥ दहेत्तं ब्राह्मणं विप्रो लोकाग्नौ मंत्रवर्जितम् ॥ स्पृष्ट्वा चोह्य च दग्ध्वा च सपिंडेषु च सर्वदा ॥ ११ ॥ प्राजापत्यं चरेत्पश्चाद्विप्राणामनुशासनात् ॥ दग्ध्वास्थीनि पुनर्गृह्य क्षीरैः प्रक्षालयेद्द्विजः ॥ १२ ॥ स्वेनाऽग्निना स्वमंत्रेण पृथगेतत्पुनर्दहेत् ॥

जिस अग्निहोत्री ब्राह्मणको चांडाल वा श्वपचने मारडालाहो या उसे गौ वा ब्राह्मणोंने माराहो; या स्वयं विष खाकर मरगयाहो ॥ १० ॥ तौ उसका सपिंडी पुरुष जो उसकी क्रिया करै वह उस ब्राह्मणको विना मन्त्रके लौकिक अग्निमें दाह करै; और उसे स्पर्श करके तथा उसके विमानको उठाकर उसे दाह करै तौ ॥ ११ ॥ ब्राह्मणोंकी आज्ञासे प्राजापत्य व्रत करले और दाह करनेके उपरान्त उसकी अस्थियोंको दूधमें धोवै ॥ १२ ॥ फिर इसके पीछे उन अस्थियोंको मंत्रपूर्वक अग्निमें पृथक् दाह करै ॥

आहिताग्निर्द्विजः कश्चित्प्रवसन्कालचोदितः ॥ १३ ॥ देहनाशमनुप्राप्तस्तस्याऽग्निर्वसते गृहे ॥ प्रेताग्निहोत्रसंस्कारः श्रूयतां मुनिपुंगवाः ॥ १४ ॥ कृष्णाजिनं समास्तीर्य कुशैस्तु पुरुषाकृतिम् ॥ षट्शतानि शतं चैव पलाशानां च वृंततः ॥ १५ ॥ चत्वारिंशच्छिरे दद्याच्छतं कंठे तु विन्यसेत् ॥ बाहुभ्यां दशकं दद्यादंगुलीषु दशैव तु ॥ १६ ॥ शतं तु जघने दद्याद्द्विशतं तूदरे तथा ॥ दद्यादष्टौ वृषणयोः पंच मेढ्रे तु विन्यसेत् ॥ १७ ॥ एकविंशतिमूरुभ्यां द्विशतं जानुजंघयोः ॥ पादांगुष्ठेषु दद्यात्षट् यज्ञपात्रं ततो न्यसेत् ॥ १८ ॥ शम्यां शिश्ने विनिक्षिप्य अरणिं मुष्कयोरपि ॥ जुहूं च दक्षिणे हस्ते वामे तूपभृतं न्यसेत्॥१९॥पृष्ठे तूलूखलं दद्यात्पृष्ठे च मुशलं न्यसेत्॥उरसि क्षिप्य दृषदं तंडुलाज्यतिलान्मुखे ॥२०॥ श्रोत्रे च प्रोक्षणीं दद्यादाज्यस्थालीं च चक्षुषोः ॥ कर्णे नेत्रे मुखे घ्राणे हिरण्यशकलं न्यसेत् ॥ २१ ॥ अग्निहोत्रोपकरणमशेषं तत्र विन्यसेत् ॥ असौ स्वर्गाय लोकाय स्वाहेत्येकाहुतिं सकृत॥२२॥ दद्यात्पुत्रोऽथवा भ्राताऽप्यन्यो वापि च बांधवः ॥ यथा दहनसंस्कारस्तथा कार्यं विचक्षणैः ॥२३॥ ईदृशं तु विधिं कुर्याद्ब्रह्मलोके गतिः स्मृता ॥ दहंति ये द्विजास्तं तु ते यांति परमां गतिम् ॥ २४ ॥ अन्यथा कुर्वते कर्म त्वात्मबुद्ध्या प्रचोदिताः ॥ भवंत्यल्पायुषस्ते वै पतंति नरकेऽशुचौ ॥ २५ ॥

इति पराशरीये धर्मशास्त्रे पंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

हे मुनीश्वरो ! जो अग्निहोत्री ब्राह्मण परदेशमें कालके वशसे ॥ १३ ॥ मरजाय और उसकी अग्निहोत्रकी अग्नि उसके घरपर स्थित हो, तौ उसका अग्निसंस्कार जिस भांति होना कर्तव्य है उसे श्रवण करो ॥ १४ ॥ चिताकी भूमिपर काली मृगछाला विछाकर उसके ऊपर पुरुषके आकारकी भांति कुशाओंको विछावै; और उस कुशाके पुरुषके ऊपर सातसौ

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डाककी डालियें इस प्रकार स्थापित करै ॥ १५ ॥ चालीस तौ शिरपर रक्खै, सौ कंठमें, दश भुजाओंमें और दश अंगुलियोंपर रक्खै ॥ १६ ॥ सौ नाभिपर, दोसौ उदरपर और आठ डालियें दोनों वृषणोंपर, और पांच लिंगपर स्थापित करै ॥ १७ ॥ इक्कीस ऊरुके ऊपर दो सौ जानु और जंघाओंके ऊपर और छैः पैरोंके अंगूठेके ऊपर रक्खै; इसके पीछे अग्निहोत्र के पात्रोंको स्थापित करै ॥ १८ ॥ शमीको शिश्नके ऊपर, और अंडकोशके ऊपर अरणिको स्थापित करै, दहिने हाथमें स्रुवा, बांये हाथमें उपभृत्‌को स्थापित करै ॥ १९ ॥ पीठके नीचे ऊखल और मूशल रक्खै, हृदयमें सिल, मुखमें चावल, घृत और तिल ॥ २० ॥ कानमें प्रोक्षणी, आंखोंमें आज्यस्थाली, कान और नेत्र और मुखमें सुवर्णके टुकडे रक्खै॥२१॥ इसप्रकार अग्निहोत्रकी सम्पूर्ण वस्तुएँ स्थापित कर मृतक अग्निहोत्रीका पुत्र वा भ्राता तथा जो कोई उसका बांधव हो वह "असौ स्वर्गाय लोकाय स्वाहा" इस मंत्रसे एक आहुति दे इसके उपरान्त दाहसंस्कारकी विधिके अनुसार दाहक्रिया करै ॥ २२ ॥ २३ ॥ इस भांति विधिके अनुसार करनेसे उस मृतकको ब्रह्मलोककी प्राप्ति होतीहै; और जो ब्राह्मण इस मृतकका दाह करते हैं वहभी परम गतिको पातेहैं ॥ २४॥ और जो अपनी बुद्धिके अनुसार इसके विपरीत करतेहैं वह अल्पायु होतेहैं, और अन्तमें अशुचिनामक नरकको जातेहैं ॥ २५ ॥

इति श्रीपराशरीये धर्मशास्त्रे भाषाटीकायां पञ्चमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

षष्ठोऽध्यायः ६.

अतः परं प्रवक्ष्यामि प्राणिहत्यासु निष्कृतिम् ॥
पराशरेण पूर्वोक्तां मन्वर्थेपि च विस्तृताम् ॥ १ ॥

इसके उपरान्त सम्पूर्ण प्राणियोंकी हिंसाका प्रायश्चित्त वर्णन करतेहैं; पराशरजीने जो पहले वर्णन कियाहै, और मनुने भी विस्तारसहित वर्णन कियाहै ॥ १ ॥

क्रौंचसारसहंसांश्च चक्रवाकं च कुक्कुटम् ॥ जालपादं च शरभं हत्वाऽहोरात्रतः शुचिः ॥ २ ॥ बलाकाटिट्टिभौ वापि शुकपारावतावपि ॥ अटीनबकघाती च शुद्ध्यते नक्तभोजनात् ॥ ३ ॥ वृककाककपोतानां सारीतित्तिरघातकः ॥ अंतर्जले उभे संध्ये प्राणायामेन शुद्ध्यति ॥ ४ ॥ गृध्रश्येनशशादीनामुलूकस्य च घातकः ॥ अपक्वाशी दिनं तिष्ठेत्रिकालं मारुताशनः ॥ ५ ॥ वल्गुलीटिट्टिभानां च कोकिलाखंजरीटके ॥ लाविकारक्तपक्षेषु शुद्ध्यते नक्तभोजनात् ॥६॥ कारंडवचकोराणां पिंगलाकुररस्य च ॥ भारद्वाजादिकं हत्वा शिवं संपूज्य शुद्ध्यति ॥ ७ ॥ भेरुंडचाषभासांश्च पारावतकपिंजलौ ॥ पक्षिणां चैव सर्वेषामहोरात्रमभोजनम् ॥ ८ ॥

क्रुंज, सारस, हंस, चकवा, कुक्कुट और जालपाद, तथा जिन पक्षियोंके चरण जुडे हैं, जिनके हड्डी हो इनका मारनेवाला एकदिनरातके उपवास करनेसेही शुद्ध होजाताहै ॥ २ ॥ बगली, टटीरी, तोता तथा पारावत, मछली, और बगला इनका मारनेवाला नक्तभोजन व्रतके करनेसे शुद्ध होजाता है ॥ ३ ॥ भेडिया, काक, कबूतर, मैना, तीतर इनका मारनेवाला

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दोनों संध्याओंके समय जलमें स्थित होकर प्राणायामकरनेसे शुद्ध होजाताहै ॥ ४ ॥ जिस मनुष्यने गिद्ध, बाज, खरगोश तथा उल्लू इन जीवोंकी हिंसा की हो वह सारेदिन कुछ न खाय केवल वायुभक्षण करकेही रहै ॥ ५ ॥ चटका, मोर, कोकिला, ममोला, तथा बटेर और लाल पंखवाले पक्षियोंकी हिंसा करनेवाला मनुष्य नक्तभोजनव्रतसे शुद्ध होताहै ॥ ६ ॥ मुर्गावी, चकोर, चिमगादर, टटीरी, पपीहा इनमें किसीकी भी हिंसा हुई हो तो वह शिवजीका पूजन करनेसेही शुद्धहोजाताहै ॥७ ॥ भेरुंड, नीलकंठ, भास, और पारावत तथा कपिंजल इन समस्त पक्षियोंमें से जिस किसीने एककीभी हिंसा कीहो उसकी शुद्धि एक दिनरात निराहार व्रत करनेसे होतीहै ॥ ८ ॥

हत्वा मूषकमार्जारसर्पाऽजगरडुंडुभान् ॥ कृसरं भोजयेद्विप्राँल्लोहदंडं च दक्षिणाम् ॥ ९ ॥ शिशुमारं तथा गोधां हत्वा कूर्मं च शल्लकम् ॥ वृंताकफलभक्षी वाप्यहोरात्रेण शुद्धयति ॥ १० ॥

चूहा, बिल्ली, सर्प, अजगर तथा जलसर्प इनकी हिंसाकरनेवाला मनुष्य सुपात्र ब्राह्मणको खिचडीका भोजन कराने और लोहदंडकी दक्षिणा देनेसे शुद्ध होजाताहै ॥ ९॥ शिशुमार, गोह, तथा कच्छप, और शिल्लू साँप इनकी हिंसा करनेवाला मनुष्य और बैंगनके फलको खानेवाला अहोरात्र व्रतकरनेसे शुद्ध होताहै ॥ १० ॥

वृकजंबुकऋक्षाणां तरक्षूणां च घातकः ॥ तिलप्रस्थं द्विजे दद्याद्वायुभक्षो दिनत्रयम् ॥ ११ ॥ गजस्य च तुरंगस्य महिषोष्ट्रनिपातने ॥ प्रायश्चित्तमहोरात्रं त्रिसंध्यमवगाहनम्॥ १२॥ कुरंगं वानरं सिंहं चित्रं व्याघ्रं च घातयन् ॥ शुद्धयते स त्रिरात्रेण विप्राणां तर्पणेन च ॥ १३ ॥ मृगरोहिद्वराहाणामवेर्बस्तस्य घातकः ॥ अफालकृष्टमश्नीयादहोरात्रमुपोष्य सः ॥ १४ ॥

भेडिया, गादड, रीछ तथा व्याघ्रको मारनेवाला सुपात्र ब्राह्मणको एकप्रस्थ (१ सेर छः तोले.) तिल देकर तीन दिनतक निर्जल व्रतकरनेसे शुद्ध होता है ॥ ११ ॥ हाथी, घोडा, भैंसा तथा ऊंटकी हिंसाकरनेवाला अहोरात्र व्रतकर तीनों संध्याओंमें स्नान करनेसे शुद्ध होता है ॥ १२ ॥ मृग, वानर, तथा सिंह, चीता और व्याघ्रकी हिंसा करनेवाला मनुष्य तीन दिनतक उपवासकर सुपात्र ब्राह्मणोंको भोजन जिमावै ॥ १३ ॥ मृग, रोहित, सूकर, तथा भेड और बकरीकी हिंसा करनेवाला अहोरात्र उपवास कर विनाहलसे जुतेहुए अन्नको खाकर शुद्ध होता है ॥ १४ ॥

एवं चतुष्पदानां च सर्वेषां वनचारिणाम् ॥
अहोरात्रोषितस्तिष्ठेज्जपन्वै जातवेदसम् ॥ १५ ॥

इसी भांति चौपाये और वनचर जन्तुओंकी हिंसा करनेवाला गायत्रीका जप करता हुआ अहोरात्र व्रत करै ॥ १५ ॥

शिल्पिनं कारुकं शूद्रं स्त्रियं वा यस्तु घातयेत् ॥ प्राजापत्यद्वयं कृत्वा वृषैकादश दक्षिणा ॥ १६ ॥ वैश्यं वा क्षत्रियं वापि निर्दोषं योऽभिघातयेत् ॥ सोति-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जहांगीराबाद (बुलन्दशहर)

कृच्छ्रद्वयं कुर्याद्गोविंशद्दक्षिणां ददेत् ॥ १७ ॥ वैश्यं शूद्रं क्रियासक्तं विकर्मस्थं द्विजोत्तमम् ॥ हत्वा चांद्रायणं तस्य त्रिंशद्गाश्चैव दक्षिणा ॥ १८ ॥ चंडालं हतवान्कश्चिद्ब्राह्मणो यदि कंचन ॥ प्राजापत्यं चरेत्कृच्छ्रं गोद्वयं दक्षिणां ददेत् ॥ १९ ॥

जो मनुष्य, शिल्पी, कारीगर, शूद्र, तथा स्त्रीको मारताहै वह दो प्राजापत्य करके ग्यारह बैलोंका दान करै तब उसकी शुद्धि होती है ॥ १६ ॥ निरपराधी वैश्य वा क्षत्रियकी हिंसा करनेवाला मनुष्य दो अतिकृच्छ्रव्रतकर बीस गौ दक्षिणा में देनेसे शुद्ध होता है ॥ १७ ॥ और जो मनुष्य अपने धर्मकी क्रियामें आसक्त हुए वैश्य वा शूद्रको तथा कुकर्मी ब्राह्मणको मारता है उसकी शुद्धि चांद्रायण व्रतके करने और तीस गौयें दान करनेसे होती है ॥ १८॥ जिस ब्राह्मणने चांडालकी हिंसा की हो तौ वह कृच्छ्र और प्राजापत्य व्रतकर दो गौयें दाक्षिणामें दे तब शुद्ध होता है ॥ १९ ॥

क्षत्रियेणापि वैश्येन शूद्रेणैवेतरेण च ॥
चंडालस्य वधे प्राप्ते कृच्छ्रार्द्धेन विशुद्ध्यति ॥ २० ॥

क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, तथा किसी अन्यजातिने यदि चांडालकी हिंसा की हो तो वह अर्द्धकृच्छ्रव्रत करनेसे शुद्ध होजाताहै ॥ २० ॥

चोरः श्वपाकश्चंडालो विप्रेणाभिहतो यदि ॥
अहोरात्रोषितः स्नात्वा पंचगव्येन शुद्ध्यति ॥ २१ ॥

यदि चोरीकरनेवाले श्वपच या चांडालकी हिंसा ब्राह्मणने की हो तो वह अहोरात्र व्रत कर पंचगव्यके पीनेसे शुद्ध होता है ॥ २१ ॥

श्वपाकं चापि चडालं विप्रः संभाषते यदि ॥ द्विजसंभाषणं कुर्यात्सावित्रीं च सकृज्जपेत् ॥ २२ ॥ चंडालैः सह सुप्तं तु त्रिरात्रमुपवासयेत् ॥ चंडालकपथं गत्वा गायत्रीस्मरणाच्छुचिः ॥ २३ ॥ चंडालदर्शने सद्य आदित्यमवलोकयेत् ॥ चंडालस्पर्शने चैव सचैलं स्नानमाचरेत् ॥ २४ ॥ चंडालखातवापीषु पीत्वा सलिलमग्रतः ॥ अज्ञानाच्चैकनक्तेन त्वहोरात्रेण शुद्ध्यति ॥ २५ ॥ चंडालभांडं संस्पृष्ट्वा पीत्वा कूपगतं जलम् ॥ गोमूत्रयावकाहारस्त्रिरात्राच्छुद्धिमाप्नुयात् ॥ २६ ॥ चंडालघटसंस्थं तु यत्तोयं पिबते द्विजः ॥ तत्क्षणात्क्षिपते यस्तु प्राजापत्यं समाचरेत् ॥ २७ ॥ यदि न क्षिपते तोयं शरीरे यस्य जीर्यति॥प्राजापत्यं न दातव्यं कृच्छ्रं सांतपनं चरेत्॥ ॥ २८ ॥ चरेत्सांतपनं विप्रः प्राजापत्यमनंतरः ॥ तदर्धं तु चरेद्वैश्यः पादं शूद्रस्य दापयेत् ॥ २९ ॥ भांडस्थमंत्यजानां तु जलं दधि पयः पिबेत् ॥ ब्राह्मणः क्षत्रियो वैश्यः शूद्रश्चैव प्रमादतः ॥ ३० ॥ ब्रह्मकूर्चोपवासेन द्विजातीनां तु निष्कृतिः ॥ शूद्रस्य चोपवासेन तथा दानेन शक्तितः ॥ ३१ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भुंक्तेऽज्ञानाद्द्विजश्रेष्ठश्चंडालान्नं कथंचन ॥ गोमूत्रयावकाहारो दशरात्रेण शुद्ध्यति ॥ ३२ ॥ एकैकं ग्रासमश्नीयाद्गोमूत्रे यावकस्य च ॥ दशाहं नियमस्थस्य व्रतं तत्तु विनिर्दिशेत् ॥ ३३ ॥

यदि श्वपच या चांडाल से ब्राह्मण वार्तालाप करै तौ वह दूसरे ब्राह्मणसे वार्तालापकर एकवारही गायत्रीका जप करनेसे शुद्ध होजाता है ॥ २२ ॥ जो मनुष्य चांडालोंके साथ एकस्थान वा एकवृक्षकी छायामें शयन करता है तो उसकी शुद्धि एक दिनरात उपवास करनेसे होती है; और जो चांडालके साथ मार्ग चलता है और स्नानकरता है वह जितने पग चलाहो उतने गायत्री मंत्रोंका स्मरण करनेसे शुद्ध होजाता है ॥ २३ ॥ चांडालका दर्शन करनेवाला सूर्यभगवान्का शीघ्रही दर्शन करले; और चांडालको छूनेवाला मनुष्य वस्त्रोंसहित स्नान करनेसे शुद्ध होता है ॥ २४ ॥ यदि ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य यह अज्ञानतासे चांडालकी बनाई हुई बावडी में जल पीले तौ सारेदिन निराहार रहकर एकदिनमें शुद्ध होजातेहैं॥ २५॥ जिस कुएमें चांडालके पात्रका जल गिरगयाहो उस कुएके जलको पीनेसे तीनदिन तक गोमूत्र पिवै और जौका भोजन करनेसे शीघ्र शुद्ध होता है; यदि कोई ब्राह्मण विना जानेहुए चांडालके घडेका जल पीलेता है; यदि उसने जल पीकर उसी समय उगलदिया या वमनकर दीहै तो वह प्राजापत्य व्रतके करनेसे शुद्धि प्राप्त करसकता है ॥ २६ ॥ २७ ॥ परन्तु उस जलको न उगलकर वह जल शरीरमेंही पचजाय तो प्राजापत्यव्रतके करनेसे उसकी शुद्धि नहीं होगी वह सातपनव्रतके करनेसे शुद्ध होगा ॥ २८ ॥ ब्राह्मण सांतपन व्रत करै, क्षत्रिय प्राजापत्य व्रत करै, वैश्य अर्द्धप्राजापत्य करै और शूद्र चौथाई प्राजापत्य व्रतके करनेसे शुद्ध होजाताहै ॥ २९ ॥ यदि ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, वा शूद्र यह विनाजानेहुए अन्त्यजोंके पात्रका जल, दही, दूध यह पीलें ॥ ३० ॥ तो ब्रह्मकूर्चके उपवास करनेसे उनकी शुद्धि होती है; और शूद्र एक दिन उपवास करनेसे और यथाशक्ति ब्राह्मणों को दान देनेसे शुद्ध होता है ॥ ३१ ॥ जिस ब्राह्मणने अज्ञानतासे चांडालके यहांका अन्न भोजन कियाहो, उसकी शुद्धि दश दिन गोमूत्र और यवका भोजन करनेसे होतीहै ॥ ३२ ॥ वह प्रतिदिन दशदिनतक गोमूत्र और यवका एक २ ग्रास भक्षणकर नियमसहित व्रत करै तब दशदिनमें शुद्ध होता है ॥ ३३ ॥

अविज्ञातस्तु चंडालो यत्र वेश्मनि तिष्ठति ॥ विज्ञाते उपसंन्यस्य द्विजाः कुर्युरनुग्रहम् ॥ ३४ ॥ मुनिवक्त्रोद्गतान्धर्मान्गायंतो वेदपारगाः ॥ पतंतमुद्धरेयुस्तं धर्मज्ञाः पापसंकरात् ॥ ३५ ॥ दध्ना च सर्पिषा चैव क्षीरगोमूत्रयावकम् ॥ भुंजीत सह भृत्यैश्च त्रिसंध्यमवगाहनम् ॥ ३६ ॥ त्र्यहं भुंजीत दध्ना च त्र्यहं भुंजीत सर्पिषा ॥ त्र्यहं क्षीरेण भुंजीत एकैकेन दिनत्रयम् ॥ ३७ ॥ भावदुष्टं न भुंजीत नोच्छिष्टं कृमिदूषितम् ॥ दधिक्षीरस्य त्रिपलं पलमेकं घृतस्य तु ॥ ३८ ॥

यदि किसी ब्राह्मणके घर चांडाल विना जाने रहजाय, और इसके उपरान्त वह घरवाल उसे निकालदे; तौ जिसके घर चांडाल रहा था उसपर ब्राह्मण कृपा करैं ॥ ३४ ॥ अर्थात्

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पारंगत धर्मज्ञ ब्राह्मण मुनियोंके मुखसे कहे हुए धर्मोको गाकर उस पतित होतेहुए पुरुषका उद्धार करैं ॥ ३५ ॥ अब उस पतितहुएका प्रायश्चित्त कहते हैं; वह पुरुष अपने कुटुम्ब और सेवकोंके साथ दही, घृत और दूधके साथ यवान्नका भोजन करै; और गोमूत्रका पान करै, तथा त्रिकालमें स्नान करनेसे शुद्ध होता है ॥ ३६ ॥ तीन दिनतक दहीसे खाय, और तीन दिनतक घृतके साथ भोजन करै, और तीन दिनतक दुग्धके साथ भोजन करै इसी भांति एक २ वस्तुसे एक २ दिन भोजन करै ॥ ३७ ॥ जिस मनुष्यका अंतःकरण दुष्ट हो उसका अन्न, उच्छिष्ट अन्न, और जो कृमिआदिकोंसे दूषित होगयाहो ऐसे अन्नका भोजन न करै; तीनपल दही और दूध और एकपल घृत इसभांति भोजन करै ॥ ३८ ॥

भस्मना तु भवेच्छुद्धिरुभयोः कांस्यताम्रयोः ॥ जलशौचेन वस्त्राणां परित्यागेन मृन्मयम् ॥ ३९ ॥ कुसुंभगुडकार्पासलवणं तैलसर्पिषी ॥ द्वारे कृत्वा तु धान्यानि दद्याद्वेश्मनि पावकम् ॥ ४० ॥ एवं शुद्धस्ततः पश्चात्कुर्याद्ब्राह्मणतर्पणम् ॥ त्रिशतं गा वृषं चैकं दद्याद्विप्रेषु दक्षिणाम् ॥ ४१ ॥ पुनर्लेपनखातेन होमजाप्येन शुद्ध्यति ॥ आधारेण च विप्राणां भूमिदोषो न विद्यते ॥ ४२ ॥

अब जिस स्थानमें चांडालने निवास कियाहो उस स्थानकी तथा उस स्थानमें स्थित द्रव्योंकी शुद्धि कहतेहैं । काँसीके पात्र और ताँवेके पात्रोंकी शुद्धि भस्मद्वारा माँजनेसे ही होजाती है; और मिट्टीके पात्रोंका त्याग करना उचित है; और वस्त्रोंको जलसे धोडालै ॥ ३९ ॥ कुसुंभ, गुड, कपास, लवण, तेल तथा धान्यादिकोंको घरमेंसे बाहर निकालकर घरमें अग्नि लगादे; अर्थात् घरकी सम्पूर्ण भूमिको अग्निसे तपावै ॥ ४० ॥ इसके उपरान्त घरको गोमयादिसे शुद्ध करके आप पूर्वोक्त व्रतोंसे शुद्ध हो उस घरमें सुपात्र ब्राह्मणोंको भोजन करावै; पीछे तीनसौ गौ और एक बैल उनको दक्षिणामें दे ॥ ४१ ॥ इसके उपरान्त उस घरको लीपपोतकर उसमें हवन करै तब उस पृथ्वीकी शुद्धि होती है; ब्राह्मणोंके आधारसे भूमिदोष नहीं होता, अर्थात् लिपीहुई पृथ्वीके ऊपर ब्राह्मण बैठजाय तौ वह पृथ्वी अशुद्ध नहीं रहती; अन्य जातिके बैठनेसे पृथ्वी अशुद्ध होजाती है, इसकारण उसे फिर शुद्ध करना उचित है ॥ ४२ ॥

चंडालैः सह संपर्कं मासं मासार्द्धमेव वा ॥
गोमूत्रयावकाहारो मासार्द्धेन विशुद्ध्यति ॥ ४३ ॥

यदि चांडालके साथ एक महीने या एकपक्षतक संसर्ग रहाहो तो पंद्रह दिनतक गोमूत्र पान करै और यवका भोजन करनेसे उसकी शुद्धि होतीहै ॥ ४३ ॥

रजकी चर्मकारी च लुब्धकी वेणुजीविनी ॥ चातुर्वर्ण्यस्य तु गृहे त्वविज्ञातानुतिष्ठति ॥ ४४ ॥ ज्ञात्वा तु निष्कृतिं कुर्यात्पूर्वोक्तस्यार्द्धमेव तु ॥ गृहदाहं न कुर्वीत शेषं सर्वं च कारयेत् ॥ ४५ ॥

यदि ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, और शूद्रके घरमें धोबन, चमारी, लुब्धकी, अथवा बांसका कार्य करनेवाली अज्ञानतासे रहजाय ॥ ४४ ॥ तौ जाननेके उपरान्त जो प्रायश्चित्त चांडा-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लकी स्थिति करनेपर पहले कह आये हैं उससे आधा प्रायश्चित्त करै, सारा प्रायश्चित्त और केवल गृहदाह न करै ॥ ४५ ॥

गृहस्याभ्यंतरं गच्छेच्चंडालो यदि कस्यचित् ॥ तमागाराद्विनिःसार्य मृद्भांडं तु विसर्जयेत् ॥ ४६ ॥ रसपूर्णं तु मृद्भांडं न त्यजेत्तु कदाचन ॥ गोमयेन तु संमिश्रैर्जलैः प्रोक्षेद्गृहं तथा ॥ ४७ ॥

यदि किसीके घरमें चांडाल चलाजाय, तौ उसे घरसे बाहर निकालकर मिट्टीके पात्रोंको त्याग दे ॥ ४६ ॥ जिन मिट्टीके पात्रोंमें घृतादि रस भराहो उनको न त्यागै । इसके ऊपर गोबरसे घरको लीपडालै ॥ ४७ ॥

ब्राह्मणस्य व्रणद्वारे पूयशोणितसंभवे ॥ कृमिरुत्पद्यते यस्य प्रायश्चित्तं कथं भवेत् ॥ ४८ ॥ गवां मूत्रपुरीषेण दधिक्षीरेण सर्पिषा ॥ त्र्यहं स्नात्वा च पीत्वा च कृमिदष्टः शुचिर्भवेत् ॥ ४९ ॥ क्षत्रियोपि सुवर्णस्य पंच माषान्प्रदाय तु ॥ गोदक्षिणां तु वैश्यस्याप्युपवासं विनिर्दिशेत् ॥ ५० ॥ शूद्राणां नोपवासः स्याच्छूद्रो दानेन शुद्ध्यति ॥

(प्रश्न) यदि ब्राह्मणके व्रणमें पीव और रुधिर होकर उसमें कृमी होजांय तौ उसका प्रायश्चित्त क्या है ? ॥ ४८ ॥ (उत्तर) जिस ब्राह्मणको व्रण में कृमि हो वह गौके मूत्र, गोबर, दही, दूध और घृतमें तीन दिनतक स्नान करै और इन्हीं पांचों वस्तुओंको मिलाकर पीनेसे शुद्ध होजाता है ॥ ४९ ॥ क्षत्रियके व्रणमें यदि कृमी पडगये हों तौ सुपात्र ब्राह्मणको पांच मासे सुवर्ण दान दे तथा वैश्य गोदान और उपवास करनेसे शुद्ध होता है ॥ ५० ॥ शूद्रको उपवास करनेकी आज्ञा नहीं है उसकी शुद्धि केवल दान देनेसेही होजाती है ॥

अच्छिद्रमिति यद्वाक्यं वदंति क्षितिदेवताः ॥ ५१ ॥ प्रणम्य शिरसा ग्राह्यमग्निष्टोमफलं हि तत् ॥ जपच्छिद्रं तपश्छिद्रं यच्छिद्रं यज्ञकर्मणि ॥ ५२ ॥ सर्वं भवति निश्छिद्रं ब्राह्मणैरुपपादितम् ॥

जब ब्राह्मण "अच्छिद्रमस्तु" यह वचन उच्चारण करै ॥ ५१ ॥ तब मस्तक नवाय प्रणाम कर उस वचनको ग्रहण करनेसे अग्निष्टोम यज्ञका फल मिलता है । यदि किसी जपमें छिद्र हो अथवा तपमें छिद्र हो अथवा जो कुछ यज्ञकर्ममें छिद्र हो ॥ ५२ ॥ तथापि यदि ब्राह्मण उसे "अच्छिद्रमस्तु" ऐसा कह दे तौ वह सम्पूर्ण कर्म निश्छिद्र होजातेहैं ॥

व्याधिव्यसनिनि श्रांते दुर्भिक्षे डामरे तथा ॥ ५३ ॥ उपवासो व्रतं होमो द्विजसंपादितानि वा ॥ अथ वा ब्राह्मणास्तुष्टाः सर्वे कुर्वंत्यनुग्रहम् ॥ ५४ ॥ सर्वान्कामानवाप्नोति द्विजसंपादितैरिह ॥

यदि व्याधि, व्यसन, थकावट तथा दुर्भिक्ष या किसीका भय हो तौ ॥ ५३ ॥ जो ब्राह्मणोंकी आज्ञासे उपवास,व्रत तथा हवन इत्यादिक किये जांय और वह विधिसहित न होसके तौ समस्त ब्राह्मण उपवास करनेवालेके ऊपर अनुग्रहकर प्रसन्नहो "अच्छिद्रमस्तु" ऐसा वचन कहदें ॥ ५४ ॥ तौ उन उपवासादिकोंसे सम्पूर्ण मनोरथोंकी प्राप्ति होजाती है;

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दुर्बलेऽनुग्रहः प्रोक्तस्तथा वै बालवृद्धयोः ॥ ५५ ॥ ततोऽन्यथा भवेद्दोषस्तस्मा-
न्नानुग्रहः स्मृतः ॥ स्नेहाद्वा यदि वा लोभाद्भयादज्ञानतोऽपि वा ॥ ५६ ॥
कुर्वंत्यनुग्रहं ये तु तत्पापं तेषु गच्छति ॥

दुर्बल तथा बालक और वृद्धके ऊपर कृपा करनी योग्य है ॥ ५५ ॥ इसके अतिरिक्त अन्यपुरुषके व्रत होम आदिकमें कृपाकरनेसे दोष होता है; स्नेह, लोभ, अथवा भय तथा अज्ञानसे ॥ ५६ ॥ जो मनुष्य अनुग्रह करते हैं वह पाप उन्हींको होता है;

शरीरस्याऽत्यये प्राप्ते वदंति नियमं तु ये ॥ ५७ ॥ महत्कार्योपरोधेन नास्व-
स्थस्य कदाचन ॥ स्वस्थस्य मूढाः कुर्वंति वदंति नियमं तु ये ॥ ५८ ॥ ते
तस्य विघ्नकर्तारः पतंति नरकेऽशुचौ ॥

अब शरीरके नाश प्राप्त होनेपर जो नियम कहते हैं ॥५७॥ महत्कार्यके अपराधसे स्वस्थको भी नियम कहते हैं और जो मंदबुद्धि पुरुष स्वस्थों के निमित्त नियमका उपदेश नहीं करते ॥ ५८ ॥ जो मनुष्य इनके प्रायश्चित्तमें विघ्नकरते हैं वह अशुचिनामक नरक में जातेहैं;

स्वयमेव व्रतं कृत्वा ब्राह्मणं योऽवमन्यते ॥ ५९ ॥
वृथा तस्योपवासः स्यान्न स पुण्येन युज्यते ॥

जो मनुष्य ब्राह्मणकी विना आज्ञालिये स्वयंही प्रायश्चित्तके निमित्त व्रत करते हैं ॥ ५९ ॥ उनका वह व्रत निष्फल होजाता है, उनको व्रत करनेका पुण्य नहीं होता;

स एव नियमो ग्राह्यो यमेकोऽपि वदेद्द्विजः ॥ ६० ॥
कुर्याद्वाक्यं द्विजानां तु अन्यथा भ्रूणहा भवेत् ॥

एक ब्राह्मणभी जिस नियमकरनेके लिये आज्ञा देदे ॥ ६० ॥ तौ वह नियम करना योग्य है; जो इनका वचन उल्लंघनकरता है उसको भ्रूणहिंसाका पाप होता है;

ब्राह्मणा जंगमं तीर्थं तीर्थभूता हि साधवः ॥ ६१ ॥ तेषां वाक्योदकेनैव
शुद्ध्यंति मलिना जनाः ॥ ब्राह्मणा यानि भाषंते मन्यंते तानि देवताः ॥
॥ ६२ ॥ सर्वदेवमयो विप्रो न तद्वचनमन्यथा ॥ उपवासो व्रतं चैव स्नानं
तीर्थं जपस्तपः ॥ ६३ ॥ विप्रैः संपादितं यस्य संपूर्णं तस्य तत्फलम् ॥

ब्राह्मण जंगमतीर्थस्वरूप है और साधुभी तीर्थस्वरूप है ॥ ६१ ॥ पापी पुरुष उन ब्राह्मणोंके वचनरूपी जलसे शुद्ध होजाते हैं; उत्तम ब्राह्मणोंके वचनको देवताभी मानते हैं ॥६२॥ वेदाभ्यासी सदाचारयुक्त सर्वदेवमय हैं, उनका वचन निष्फल नहींहोता; ब्राह्मण जिसके उपवास व्रत तथा स्नान तीर्थ अथवा जप तप: आदिको ॥ ६३ ॥ यह समाप्त होजाय इसभांति कहदें उन उपवासादिके करनेवालेको पूर्णफल प्राप्त होता है;

अन्नाद्ये कीटसंयुक्ते मक्षिकाकेशदूषिते ॥ ६४ ॥
तदंतरा स्पृशेच्चापस्तदन्नं भस्मना स्पृशेत् ॥

कृमि, और मक्खीआदिसे जो अन्न दूषित होजाय या जिसमें बाल पडजाँय तौ ॥ ६४ ॥ जलसे हाथ धो डाले, और अन्नपर किंचित्मात्रही भस्म डालदे तब शुद्धि होजाती है;

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भुंजानश्चैव यो विप्रः पादं हस्तेन संस्पृशेत् ॥ ६५ ॥
स्वमुच्छिष्टमसौ भुंक्ते यो भुंक्ते भुक्तभाजने ॥

जो ब्राह्मण भोजन करतेसमयमें अपने पैरोंको छुए तो ॥ ६५ ॥ और उच्छिष्ट पात्रमें जो भोजन करता है, वह अपने उच्छिष्ट को खाता है;

पादुकास्थो न भुंजीत पर्यंकस्थः स्थितोऽपि वा ॥ ६६ ॥
श्वानचण्डालदृक्चैव भोजनं परिवर्जयेत् ॥

खडाऊं पहरकर या पलंगपर बैठकर भोजन न करै ॥ ६६ ॥ कुत्ते और चांडालको देखताहुआ भोजन न करै;

यदन्नं प्रतिषिद्धं स्यादन्नशुद्धिस्तथैव च ॥ ६७ ॥
यथा पराशरेणोक्तं तथैवाहं वदामि वः ॥

जो अन्न निषिद्ध है उसकी शुद्धि ॥ ६७ ॥ जिसभांति पराशरजीने कही है उसीभांति मैं तुमसे कहताहूं;

शृतं द्रोणाढकस्यान्नं काकश्वानोपघातितम् ॥ ६८ ॥ केनेदं शुद्ध्यते चेति ब्राह्मणेभ्यो निवेदयेत् ॥ काकश्वानावलीढं तु द्रोणान्नं न परित्यजेत् ॥ ६९ ॥ वेदवेदांगविद्भिर्विप्रैर्धर्मशास्त्रानुपालकैः ॥ प्रस्थाद्वा त्रिंशतिर्द्रोणः स्मृतो विप्रस्य आढकः ॥७०॥ ततो द्रोणाऽऽढकस्यान्नं श्रुतिस्मृतिविदो विदुः॥ काकश्वानावलीढं तु गवाघ्रातं खरेण वा ॥ ७१ ॥ स्वल्पमन्नं त्यजेद्विप्रः शुद्धिर्द्रोणाढके भवेत् ॥ अन्नस्योद्धृत्य तन्मात्रं यच्च लालाहतं भवेत् ॥ ७२ ॥ सुवर्णोदकमभ्युक्ष्य हुताशेनैव तापयेत् ॥ हुताशनेन संस्पृष्टं सुवर्णसलिलेन च ॥ ७३ ॥ विप्राणां ब्रह्मघोषेण भोज्यं भवति तत्क्षणात् ॥

द्रोणकी बराबर अन्न और आढकभर शृत (पकायेहुए) अन्नको यदि काक श्वान दूषित करजाय ॥ ६८ ॥ तौ उस अन्नको ब्राह्मणोंके आगे धर उनसे पूछे कि इसकी शुद्धि किसभाँति होगी, फिर जिसभांति वह बतलावें उसीभांति करले और उस अन्नको न फेंकै ॥ ६९ ॥ वेद वेदांगके जाननेवाले, और धर्मशास्त्रके अनुकूल जो ब्राह्मण आचरण करते हैं, उनका कथन है कि बत्तीस प्रस्थका एक द्रोण होता है, और बत्तीस प्रस्थका एक आढक कहाताहै ॥ ७० ॥ इसभांति द्रोण और आढक अन्नको श्रुति और स्मृति के ज्ञाताही जानते हैं द्रोण और आढकभर अन्नको यदि कौये और कुत्तेने चाटाहो या गौ या गधेने सूंघ लिया हो ॥ ७१ ॥ तौ उसकी शुद्धि उसमेंसे किंचित् अन्नके निकालनेसेही होजाती है, जितने अन्नमें उनकी राल टपकी है उतने अन्नको निकालकर शेषको ॥ ७२ ॥ सुवर्णके जलसे छिडककर अग्निमें तपावै, कारण कि अग्निमें तपाने और सुवर्णका जल छिडकनेसे ॥ ७३ ॥ तथा ब्राह्मणोंके वेदमंत्र पढनेसे वह अन्न खानेके योग्य होजाता है,

स्नेहो वा गोरसो वापि तत्र शुद्धिः कथं भवेत् ॥ ७४ ॥ अल्पं परित्यजेत्तत्र स्नेहस्योत्पवनेन च ॥ अनलज्वालया शुद्धिर्गोरसस्य विधीयते ॥ ७५ ॥

इति पराशरीये धर्मशास्त्रे षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(प्रश्न) स्नेह (घृतआदि) गोरस अन्न (दुग्ध आदि) वह यदि अशुद्ध होजाँय तौ इनकी शुद्धि किसभाँति होती है ॥ ७४ ॥ (उत्तर) उनमें से थोडासा अलग निकालकर स्नेहादिक को उछालकर शुद्ध करले; और गोरसकी अग्नि में तप्तकरने से शुद्धि होजाती है ॥ ७५ ॥

इति श्रीपराशरीये धर्मशास्त्रे भाषाटीकायां षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

सप्तमोऽध्यायः ७.

अथातो द्रव्यशुद्धिस्तु पराशरवचो यथा ॥
दारवाणां तु पात्राणां तक्षणाच्छुद्धिरिष्यते ॥ १ ॥

इसके उपरान्त अब पराशरजीके वचनके अनुसार द्रव्योंकी शुद्धिका विधान कहते हैं, काठके बनायेहुए पात्रोंको छील डालनेसेही शुद्धि होजाती है ॥ १ ॥

मार्जनाद्यज्ञपात्राणां पाणिना यज्ञकर्मणि ॥ चमसानां ग्रहाणां च शुद्धिः प्रक्षालनेन च ॥ २ ॥ चरूणां स्रुक्स्रुवाणां च शुद्धिरुष्णेन वारिणा ॥ भस्मना शुद्ध्यते कांस्यं ताम्रमम्लेन शुद्ध्यति ॥ ३ ॥

और यज्ञके कर्ममें यज्ञपात्रोंकी केवल हाथके मांजनेसेही शुद्धि होजाती है; तथा चमस और ग्रहके पात्रोंकी शुद्धि जलसे धोनेपर होजाती है ॥ २ ॥ चरु, स्रुक्, और स्रुवेकी शुद्धि केवल गरम जलसेही होजाती है काँसीके पात्र भस्मसे और ताँबेके पात्र खटाईसे पवित्र होजाते हैं ॥ ३ ॥

रजसा शुद्ध्यते नारी विकलं या न गच्छति ॥
नदी वेगेन शुद्ध्येत लेपो यदि न दृश्यते ॥ ४ ॥

यदि जो स्त्री नीचजातिके साथ संगति न करे तो वह ऋतुमती होनेपर शुद्ध होजाती है; यदि नदीमें कोई अशुद्ध वस्तु नदीखती हो तौ वह प्रवाहसे पवित्र होजाती है ॥ ४ ॥

वापीकूपतडागेषु दूषितेषु कथंचन ॥
उद्धृत्य वै कुंभशतं पञ्चगव्येन शुद्ध्यति ॥ ५ ॥

वापी, कूप, तडागादि यदि यह किसी भांति अशुद्ध होगये हों, तो उनमेंसे सौ घडे जल निकालकर उनमें पंचगव्यके डालनेसे उनकी शुद्धि होजाती है ॥ ५ ॥

अष्टवर्षा भवेद्गौरी नववर्षा तु रोहिणी ॥ दशवर्षा भवेत्कन्या अत ऊर्ध्वं रजस्वला ॥ ६ ॥ प्राप्ते तु द्वादशे वर्षे यः कन्यां न प्रयच्छति ॥ मासि मासि रजस्तस्याः पिबंति पितरोऽनिशम् ॥ ७ ॥ माता चैव पिता चैव ज्येष्ठो भ्राता तथैव च ॥ त्रयस्ते नरकं यांति दृष्ट्वा कन्यां रजस्वलाम् ॥ ८ ॥ यस्तां समुद्वहेत्कन्यां ब्राह्मणो मदमोहितः ॥ असंभाष्यो ह्यपांक्तेयः स विप्रो वृषलीपतिः ॥ ९ ॥ यः करोत्येकरात्रेण वृषलीसेवनं द्विजः ॥ स भैक्ष्यभुग्जपन्नित्यं त्रिभिर्वर्षैर्विशुद्ध्यति ॥ १० ॥

आठ वर्षकी कन्याको गौरी और नौ वर्षकी कन्याको रोहिणी कहते हैं, और दशवर्षकी कन्या कन्याही कहाती है उसके उपरान्त रजस्वला होजाती है ॥ ६ ॥ कन्याके बारह

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वर्ष होनेपर यदि कन्याका दान न कियाजाय तो उस मनुष्यके पितर प्रत्येक महीनेमें उसके रजका पान करतेहैं ॥ ७ ॥ कन्याको (जिसका विवाह न हुआहो) रजस्वलाहुई देखकर माता, पिता, और बडाभाई यह तीनों नरकको जाते हैं ॥ ८ ॥ जो ब्राह्मण अज्ञानतासे मोहित होकर उस कन्याके साथ विवाह करताहै वह वृषलीपति कहाता है; उससे संभाषण करना उचित नहीं, और पंक्तिसे बाहर कर देना योग्य है ॥ ९ ॥ जो ब्राह्मण एकरात्रिभी वृषलीका सेवन करता है तौ वह तीनवर्षतक भिक्षान्नका भोजन करताहुआ गायत्री मन्त्रके जपनेसे शुद्ध होता है ॥ १० ॥

अस्तंगते यदा सूर्ये चंडालं पतितं स्त्रियः ॥ सूतिकां स्पृशते चैव कथं शुद्धिर्विधीयते ॥ ११ ॥ जातवेदं सुवर्णं च सोममार्गं विलोक्य च ॥ ब्राह्मणानुमतश्चैव स्नानं कृत्वा विशुद्ध्यति ॥ १२ ॥

(प्रश्न) सूर्यके अस्तहोनेपर जो ब्राह्मण पतित मनुष्यका वा सूतिका स्त्रीका स्पर्श करले तौ उसकी शुद्धि किसप्रकार होगी ॥ ११ ॥ (उत्तर) ब्राह्मणकी आज्ञासे स्नानके उपरान्त अग्नि, सुवर्ण और चन्द्रमाका दर्शन करै; यदि उससमय चन्द्रमा उदय न हुआहो तौ जिस दिशामें चन्द्रमा हो उसी दिशाका दर्शन करले तब शुद्ध होताहै ॥ १२ ॥

स्पृष्ट्वा रजस्वलान्योन्यं ब्राह्मणी ब्राह्मणीं तथा ॥ तावत्तिष्ठेन्निराहारा त्रिरात्रेणैव शुद्ध्यति ॥ १३ ॥ स्पृष्ट्वा रजस्वलान्योन्यं ब्राह्मणी क्षत्रियां तथा ॥ अर्द्धकृच्छ्रं चरेत्पूर्वा पादमेकं त्वनन्तरा ॥ १४ ॥ स्पृष्ट्वा रजस्वलान्योन्यं ब्राह्मणी वैश्यजां तथा ॥ पादहीनं चरेत्पूर्वा पादमेकमनंतरा ॥ १५ ॥ स्पृष्ट्वा रजस्वलान्योन्यं ब्राह्मणी शूद्रजां तथा ॥ कृच्छ्रेण शुद्ध्यते पूर्वा शूद्रा दानेन शुद्ध्यति ॥ १६ ॥

यदि दो ब्राह्मणी रजस्वला होकर परस्परमें स्पर्श करलें तौ प्रत्येक स्त्री तीन २ दिन व्रत करै तब शुद्ध होगी ॥ १३ ॥ यदि ब्राह्मणी और क्षत्रिया यह दोनों रजस्वला होकर परस्परमें स्पर्श करलें तौ ब्राह्मणी अर्द्धकृच्छ्र करै और क्षत्रिया चौथाई कृच्छ्र करनेसे शुद्ध होतीहै ॥ १४ ॥ यदि ब्राह्मणी और वैश्यकी स्त्री इन दोनोंके ऋतुमती होनेपर आपसमें एक दूसरीका स्पर्श करले, तौ ब्राह्मणी पादोन (पौन) कृच्छ्र व्रत करै, और वैश्यकी स्त्री चौथाई कृच्छ्र व्रत करनेसे शुद्ध होतीहै ॥ १५ ॥ यदि ब्राह्मणी और शूद्रकी पुत्री रजस्वला होकर परस्परमें एक दूसरेका स्पर्श करले तौ ब्राह्मणी पूर्ण कृच्छ्र व्रत करके शुद्ध होतीहै और शूद्रकी पुत्री दान करनेसे ही शुद्ध होजातीहै ॥ १६ ॥

स्नाता रजस्वला या तु चतुर्थेहनि शुद्ध्यति ॥
कुर्याद्रजोनिवृत्तौ तु दैवपित्र्यादिकर्म च ॥ १७ ॥

यद्यपि रजस्वला स्त्री चौथे दिन स्नान करनेसे शुद्ध होजातीहै परन्तु रजकी निवृत्ति होनेपरही देवकर्म तथा पितृकर्म करसकती है ॥ १७ ॥

रोगेण यद्रजः स्त्रीणामन्वहं तु प्रवर्त्तते ॥
नाऽशुचिः सा ततस्तेन तत्स्याद्वैकारिकं मलम् ॥ १८ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जहांगीराबाद (३३)४ बुलन्दशहर (उ० प्र०) शास्त्री

जिस स्त्रीको रोगके कारण प्रतिदिन रजःस्राव हो वह स्त्री उस रजसे अशुद्ध नहीं होती, कारण किं वह रज स्वाभाविक नहीं है ॥ १८ ॥

साध्वाचारा न तावत्स्याद्रजो यावत्प्रवर्त्तते ॥
रजोनिवृत्तौ गम्या स्त्री गृहकर्माणि चैव हि ॥ १९ ॥

जबतक स्त्रीको रजकी प्रवृत्ति रहती है तबतक उसका अधिकार सत्कर्ममें नहीं है; और पतिके साथ सहवास करने योग्य और घरके कामकाज करनेयोग्य भी नहीं होती ॥ १९ ॥

प्रथमेऽहनि चंडाली द्वितीये ब्रह्मघातिनी ॥
तृतीये रजकी प्रोक्ता चतुर्थेऽहनि शुद्ध्यति ॥ २० ॥

स्त्री रजस्वला होनेपर पहले दिन चांडाली और दूसरे दिन ब्रह्महत्यारी तीसरे दिन धोबिनि की समान होती है और चौथे दिन स्नान करनेसे शुद्ध होती है ॥ २० ॥

आतुरे स्नान उत्पन्ने दशकृत्वो ह्यनातुरः ॥
स्नात्वास्नात्वा स्पृशेदेनं ततः शुद्ध्येत्स आतुरः ॥ २१ ॥

पुरुष अथवा स्त्री रोगी होजाय और उसी अवस्था में उसको स्नानकी आवश्यकता हो तौ निरोग मनुष्य क्रमानुसार दशवार स्नान करकै उस रोगीको स्पर्श करले तब वह रोग युक्त पुरुष अथवा स्त्री शुद्ध होजाते हैं ॥ २१ ॥

उच्छिष्टोच्छिष्टसंस्पृष्टः शुना शूद्रेण वा पुनः ॥
उपोष्य रजनीमेकां पञ्चगव्येन शुद्ध्यति ॥ २२ ॥

यदि किसी उच्छिष्ट शूद्र अथवा श्वानसे कोई पुरुष स्पर्श करकै ब्राह्मणको स्पर्श करले तौ वह ब्राह्मण एक रात्रि उपवास कर पीछे पंचगव्य पीनेसे शुद्ध होता है ॥ २२ ॥

अनुच्छिष्टेन शूद्रेण स्पर्शे स्नानं विधीयते ॥
तेनोच्छिष्टेन संस्पृष्टः प्राजापत्यं समाचरेत् ॥ २३ ॥

अनुच्छिष्ट शूद्रके स्पर्श होजानेसे ब्राह्मणको स्नानकरना उचित है यदि कोई उच्छिष्ट पुरुष स्पर्शकरले तौ प्राजापत्य व्रत करै ॥ २३ ॥

भस्मना शुद्ध्यते कांस्यं सुरया यन्न लिप्यते ॥ सुरामात्रेण संस्पृष्टं शुद्ध्यतेऽग्न्युपलेपनैः ॥ २४ ॥ गवाघ्रातानि कांस्यानि श्वकाकोपहतानि च ॥ शुद्ध्यंति दशभिः क्षारैः शूद्रोच्छिष्टानि यानि च ॥ २५ ॥ गंडूषं पादशौचं च कृत्वा वै कांस्यभाजने ॥ षण्मासान्भुवि निक्षिप्य उद्धृत्य पुनराहरेत् ॥ २६ ॥

जिस कांसीके पात्रमें सुराका स्पर्श न हुआहो वह भस्मसे मार्जन करनेपर शुद्ध होजाता है और यदि जिसमें मदिराका स्पर्शभी होगयाहै वह वारंवार अग्नि डालकर मांजने से ही शुद्ध हो जाताहै ॥ २४ ॥ गौके सूंघेहुए, काकके चोंचलगाये हुए, कुत्तेके चाटेहुए तथा शूद्रके उच्छिष्ट काँसीके पात्र दशवार खटाई आदि क्षार पदार्थसे रगड़कर धोवै तब उनकी शुद्धि हो जातीहै ॥ २५ ॥ यदि काँसीके पात्रमें किसीने कुल्ला करदियाहो तौ उस पात्रको छैः महीनेतक पृथ्वीमें गाडदे इसके पीछे उखाड कर व्यवहारमें लावै ॥ २६ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आयसेष्वायसानां च सीसस्याग्नौ विशोधनम् ॥ दंतमस्थि तथा शृंगं रौप्यं सौवर्णभाजनम् ॥ २७ ॥ मणिपात्राणि शंखश्चेत्येतान्प्रक्षालयेज्जलैः ॥

लोहेके पात्रको त्यागदेनेसे और शीशेके पात्रको तपानेंसे तथा दांत, अस्थि, सींग, चांदी और सुवर्णका पात्र ॥ २७ ॥ मणि, रत्नोंके पात्र और शंखको जलसे धो लेनेपर उनकी शुद्धि होजातीहै,

पाषाणे तु पुनर्घर्ष एषा शुद्धिरुदाहृता ॥ २८ ॥

और पत्थरके पात्रको जलसे धोनेके उपरान्त मांज डालना और घर्षणकरना भी उचित है तब उसकी शुद्धि होतीहै ॥ २८ ॥

मृन्मये दहनाच्छुद्धिर्धान्यानां मार्जनादपि ॥

मट्टीके पात्रकी शुद्धि जलानेंसे होतीहै; और धान्योंको भलीभांति मलकर धोवै तब शुद्ध होजातेहैं,

वेणुवल्कलचीराणां क्षौमकार्पासवाससाम् ॥ २९ ॥
और्णनेत्रपटानां च प्रोक्षणाच्छुद्धिरिष्यते ॥ ३० ॥

वांस, वल्कल, फटेवस्त्र, रेशमी वस्त्र, सूतीवस्त्र ॥ २९ ॥ ऊनी वस्त्र, नेत्रपट: (सनके वस्त्र) यह धोनेसेही शुद्ध होजातेहैं ॥ ३० ॥

मुंजोपस्करशूर्पाणां शणस्य फलचर्मणाम् ॥
तृणकाष्ठस्य रज्जूनामुदकाभ्युक्षणं मतम् ॥ ३१ ॥

मूँज, उपस्कर, शूर्प, (छाज) सन, फल, चर्म, तृण, काठ, रस्सी इनकी शुद्धि केवल जल छिडकनेसेही होजातीह ॥ ३१ ॥

तूलिकाद्युपधानानि रक्तवस्त्रादिकानि च ॥
शोषयित्वार्कतापेन प्रोक्षणाच्छुद्धतामियुः ॥ ३२ ॥

तोसक, तकिया, शय्या, लालवस्त्र, इन्हें धूपमें सुखाकर जल छिडकनेसे इनकी शुद्धि होजाती है ॥ ३२ ॥

मार्जारमक्षिकाकीटपतंगकृमिदर्दुराः ॥
मेध्यामेध्यं स्पृशंतो ये नोच्छिष्टं मनुरब्रवीत् ॥ ३३ ॥

बिडाल, मक्खी, कीट, पतंग, कीडे, मैंडक यह सदा शुद्ध अशुद्ध वस्तुओंका स्पर्श करते रहतेहैं, इसकारण इनके स्पर्शसे कोई वस्तु अपवित्र नहीं होती, यह मनुजीका वचन है ॥ ३३ ॥

महीं स्पृष्ट्वा गतं तोयं याश्चाप्यन्योन्यविप्रुषः ॥
भुक्तोच्छिष्टं तथा स्नेहं नोच्छिष्टं मनुरब्रवीत् ॥ ३४ ॥

जो जल पृथ्वीको स्पर्श करकै अन्यत्र जलमें मिलगयाहै; और जो एकसे उछलकर दूसरेके ऊपर छीटे गई हैं, यदि भुक्तोच्छिष्ट होय तौ भी अपवित्र नहीं होता, इसी भांति भुक्तोच्छिष्ट तेलभी अशुद्ध नहीं होता, यह मनुजीका मत है ॥ ३४ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तांबूलेक्षुफलान्येव भुक्ते स्नेहानुलेपने ॥
मधुपर्के च सोमे च नोच्छिष्टं धर्मतो विदुः ॥ ३५ ॥

तांबूल, इक्षु, फल, तेल, अनुलेपन, मधुपर्क तथा सोमरस इनमें उच्छिष्टता नहीं होती यह मनुजीका कथन है ॥ ३५ ॥

रथ्याकर्दमतोयानि नावः पंथास्तृणानि च ॥
मारुतार्केण शुद्ध्यंति पक्केष्टकचितानि च ॥ ३६ ॥

मार्गकी कीच, और जल, नाव, मार्ग, तृण, तथा पक्की ईटोंकी चिनाई यह सब वायु और सूर्यके संयोगसे शुद्ध होजातेहैं ॥ ३६ ॥

अदुष्टा संतता धारा वातोद्धूताश्च रेणवः ॥
स्त्रियो वृद्धाश्च बालाश्च न दुष्यंति कदाचन ॥ ३७ ॥

पवनसे उडीहुई धूरि, और चारों ओर फैली हुई निर्मल धारा वृद्ध स्त्री और बालक यह कदापि दूषित नहीं होते ॥ ३७ ॥

क्षुते निष्ठीवने चैव दंतोच्छिष्टे तथानृते ॥
पतितानां च संभाषे दक्षिणं श्रवणं स्पृशेत् ॥ ३८ ॥

छींकनेपर, थूकनेपर, दांतोंसे किसी अंगके उच्छिष्ट होजानेपर, मिथ्या बोलने पर या पतितोंके साथ सम्भाषण करनेपर अपने दहिने कानका स्पर्श करै ॥ ३८ ॥

अग्निरापश्च वेदाश्च सोमसूर्यानिलास्तथा ॥ एते सर्वेपि विप्राणां श्रोत्रे तिष्ठंति दक्षिणे ॥ ३९ ॥ प्रभासादीनि तीर्थानि गंगाद्याः सरितस्तथा ॥ विप्रस्य दक्षिणे कर्णे सान्निध्यं मनुरब्रवीत् ॥ ४० ॥

कारण कि; अग्नि, जल, वेद, चन्द्रमा, सूर्य,पवन, यह सब ब्राह्मणोंके दहिने कानमें निवास करतेहैं ॥ ३९ ॥ प्रभासआदि तीर्थ और गंगा इत्यादि नदियें यह ब्राह्मणोंके दहिने कानमें स्थिति करतीहैं, यह वचन मनुजीका है ॥ ४० ॥

देशभंगे प्रवासे वा व्याधिषु व्यसनेष्वपि ॥ रक्षेदेव स्वदेहादि पश्चाद्धर्मं समाचरेत् ॥ ४१ ॥ येन केन च धर्मेण मृदुना दारुणेन वा ॥ उद्धरेद्दीनमात्मानं समर्थो धर्ममाचरेत् ॥ ४२ ॥ आपत्काले तु निस्तीर्णे शौचाऽऽचारं न चिंतयेत् ॥ शुद्धिं समुद्धरेत्पश्चात्स्वस्थो धर्मं समाचरेत् ॥ ४३ ॥

इति पराशरीये धर्मशास्त्रे सप्तमोऽध्यायः ॥७ ॥

देशका नाश होनेके समय, परदेशमें रोगयुक्त होनेपर और आपत्तियोंके आनेपर पहले सब प्रकारसे अपने शरीरकी रक्षा करनी उचित है इसके उपरान्त धर्माचरण करै ॥ ४१ ॥ अपने ऊपर विपत्ति आनेपर कोमल वा कठोर वा जिसकिसी उपायसे होसकै अपने दीन आत्माका उद्धार करै; इसके पीछे सामर्थ्ययुक्त होकर धर्मका अनुष्ठान करै ॥ ४२ ॥ आपत्तिकाल उपस्थित होनेपर शौचाचारका विचार न करै, पहले अपना उद्धार करै, इसके पीछे स्वस्थ होकर धर्माचरण करै ॥ ४३ ॥

इति पराशरीये धर्मशास्त्रे भाषाटीकायां सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अष्टमोऽध्यायः ८.

गवां बंधनयोक्त्रेषु भवेन्मृत्युरकामतः ॥ अकामकृतपापस्य प्रायश्चित्तं कथं भवेत् ॥ १ ॥ वेदवेदांगविदुषां धर्मशास्त्रं विजानताम् ॥ स्वकर्मरतविप्राणां स्वकं पापं निवेदयेत् ॥ २ ॥

(प्रश्न-) यदि कोई गौ खूँटेमें बँधीहुई अकामतः मृत्युको प्राप्त होजाय तौ उस अकामकृत पापका प्रायश्चित्त किसभांति होना उचित है? ॥ १ ॥ (उत्तर) जो वेद वेदांगके जाननेवाले धर्मशास्त्रके पारदर्शी और सर्वदा अपने कर्तव्य कर्ममें निरत ऐसे ब्राह्मणोंसे वह पापी पुरुष अपना पाप निवेदन करदे ॥ २ ॥

अत ऊर्ध्वं प्रवक्ष्यामि उपस्थानस्य लक्षणम् ॥ उपस्थितो हि न्यायेन व्रतादेशं समर्हति ॥ ३ ॥ सद्यो निःसंशये पापे न भुंजीतानुपस्थितः ॥ भुंजानो वर्द्धयेत्पापं पर्षद्यत्र न विद्यते ॥ ४ ॥ संशये तु न भोक्तव्यं यावत्कार्यविनिश्चयः ॥ प्रमादस्तु न कर्त्तव्यो यथैवासंशयस्तथा ॥ ५ ॥ कृत्वा पापं न गूहेत गूह्यमानं विवर्द्धते ॥ स्वल्पं वाथ प्रभूतं वा धर्मविद्भ्यो निवेदयेत् ॥ ६ ॥ तेऽपि पापकृतां वैद्या हंतारश्चैव पाप्मनाम् ॥ व्याधितस्य यथा वैद्या बुद्धिमंतो रुजापहाः ॥ ७ ॥

उस पापीको किस अवस्थासे उन ब्राह्मणोंके पास जाना होगा सो कहतेहैं, न्यायमार्गसे अपने पास आयेहुए उस पापीको ब्राह्मण व्रतकरनेकी आज्ञा दें ॥ ३ ॥ यदि निश्चयही पाप कियाहै, यह विदित होजाय तौ उस पापको धर्मज्ञ ब्राह्मणोंके अर्थ निवेदन किये विना भोजन न करै; यदि विना परिषद्के निकट गये भोजन करले तौ पापकी वृद्धि होतीहै ॥ ४ ॥ यदि पाप करनेमें सन्देह होजाय तौ उसका निश्चय विना हुए भोजन न करै; और जबतक उसका निश्चय न होजाय तबतक असावधानभी रहना उचित नहीं ॥ ५ ॥ कियेहुए पापको कभी न छिपावै, कारण कि छिपानेसे पापकी वृद्धि होतीहै, पाप थोडा हो चाहैं बहुत हो उसे धर्मके जाननेवाले ब्राह्मणोंके आगे निवेदन करदे ॥ ६ ॥ कारण कि उसके पापोंको जानकर जिसभांति बुद्धिमान् वैद्य रोगीकी पीडाको दूरकरताहै, उसी प्रकार ब्राह्मण उसके पापको नष्ट करदेनेका उपाय कहदेंगे ॥ ७ ॥

प्रायश्चित्ते समुत्पन्ने ह्रीमान्सत्यपरायणः ॥ मृदुरार्जवसंपन्नः शुद्धिं गच्छेत मानवः ॥ ८ ॥ सचैलं वाग्यतः स्नात्वा क्लिन्नवासाः समाहितः ॥ क्षत्रियो वाथ वैश्यो वा ततः पर्षदमाव्रजेत् ॥ ९ ॥ उपस्थाय ततः शीघ्रमार्तिमान्धरणिं व्रजेत् ॥ गात्रैश्च शिरसा चैव नच किंचिदुदाहरेत् ॥ १० ॥

(इसभांति परिषद्की आज्ञानुसार) पापका प्रायश्चित्त करनेपर लज्जाशील, सत्यपरायण, सरलस्वभाव, पुरुष शीघ्रही शुद्धि प्राप्त करतेहैं ॥ ८ ॥ चाहैं क्षत्रिय हो चाहे वैश्य हो पापका संसर्ग होतेही मौन धारणकर वस्त्रोंसहित स्नानकरै, और गीले वस्त्रोंको पहरेहुएही सावधानीसे परिषद्के निकट जाय ॥ ९ ॥ पापी इसभांति शीघ्रताके साथ परिषद्के समीप जाकर विनयपूर्वक साष्टांग प्रणामकरै, और कुछ न बोलै ॥ १० ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सावित्र्याश्चापि गायत्र्याः संध्योपास्त्यग्निकार्ययोः ॥ अज्ञानात्कृषिकर्तारो ब्राह्मणा नामधारकाः ॥ ११ ॥ अव्रतानाममंत्राणां जातिमात्रोपजीविनाम् ॥ सहस्रशः समेतानां परिषत्त्वं न विद्यते ॥ १२ ॥ यद्वदंति तमोमूढा मूर्खा धर्ममतद्विदः ॥ तत्पापं शतधा भूत्वा तद्वक्तॄनधिगच्छति॥ १३॥अज्ञात्वा धर्मशास्त्राणि प्रायश्चित्तं ददाति यः ॥ प्रायश्चित्ती भवेत्पूतः किल्बिषं पर्षदि व्रजेत् ॥ १४ ॥

जो ब्राह्मण वेद और गायत्रीको नहीं जानते, और सन्ध्योपासना तथा अग्निहोत्र नहीं करतेहैं; सर्वदा खेतीके कार्यमेंही लगे रहतेहैं वह केवल नाममात्रके ब्राह्मण हैं ॥ ११ ॥ ऐसे व्रतमन्त्रसे रहित और जातिके नाममात्रसे जीविका करनेवाले इकट्ठेहुए सहस्रों ब्राह्मणोंको परिषद् नहीं कहा जासकता ॥ १२ ॥ अज्ञानरूपी अन्धकारसे ढके मूढ धर्मशास्त्रको न जाननेवाले मूर्ख ब्राह्मण यदि प्रायश्चित्तकी व्यवस्था करदें तौ वह पापी पापसे छूट तौ जाताहै, परन्तु वह पाप सौगुना होकर उन व्यवस्था देनेवालोंके शरीरमें प्रवेश करताहै ॥ १३ ॥ जो विना धर्मशास्त्रके जानेहुए प्रायश्चित्तकी व्यवस्था देतेहैं पापी पुरुष तौ उस व्यवस्थाके अनुसार शुद्ध होजाताहै, परन्तु वह पाप व्यवस्था देनेवाले परिषद्के शरीरमें प्रवेश करताहै ॥ १४ ॥

चत्वारो वा त्रयो वापि यं ब्रूयुर्वेदपारगाः ॥ स धर्म इति विज्ञेयो नेतरैस्तु सहस्रशः ॥ १५ ॥ प्रमाणमार्गं मार्गंतो येऽधर्मं प्रवदंति वै ॥ तेषामुद्विजते पापं सद्भूतगुणवादिनाम् ॥ १६ ॥ यथाश्मनि स्थितं तोयं मारुतार्केण शुद्ध्यति ॥ एवं परिषदादेशान्नाशयेत्तत्र दुष्कृतम् ॥ १७ ॥ नैव गच्छति कर्तारं नैव गच्छति पर्षदम् ॥ मारुतार्कादिसंयोगात्पापं नश्यति तोयवत् ॥ १८ ॥ चत्वारो वा त्रयो वापि वेदवंतोऽग्निहोत्रिणः ॥ ब्राह्मणानां समर्था ये परिषत्सा विधीयते ॥ १९ ॥ अनाहिताग्नयो येन्ये वेदवेदांगपारगाः ॥ पंच त्रयो वा धर्मज्ञाः परिषत्सा प्रकीर्तिता ॥ २० ॥ मुनीनामात्मविद्यानां द्विजानां यज्ञयाजिनाम् ॥ वेदव्रतेषु स्नातानामेकोऽपि परिषद्भवेत् ॥ २१ ॥

चारजने या तीन जने वेदके जाननेवाले ब्राह्मण जो व्यवस्था देतेहैं उसीको यथार्थ धर्म जानै, अन्य सहस्रों मनुष्योंका वचनभी धर्मस्वरूप नहीं होसकता ॥ १५ ॥ जो प्रमाणके मार्गको ढूंढकर अर्थात् सम्पूर्ण वचनोंका प्रमाण संग्रहकर धर्मशास्त्रकी व्यवस्था देतेहैं उनसे पाप भयभीत होताहै, वास्तवमें वही धर्मके कहनेवाले हैं ॥ १६ ॥ जिसभांति पत्थरके ऊपर रक्खा हुआ जल वायु और सूर्यके उत्तापसे सूखजाताहै, उसी भांति परिषदकी आज्ञासे सम्पूर्ण पापोंका नाश होजाताहै ॥ १७ ॥ और न वह पापकर्ताके शरीरमें रहतेहैं और परिषद्के शरीरमेंभी प्रवेश नहीं करते वायु और सूर्यके संयोगसे सूखेहुए जलकी समान नष्ट हो जातेहैं ॥१८॥ वेदवेत्ता अग्निहोत्री ब्राह्मण तीन अथवा चार होनेसे परिषद् होतीहै॥१९॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जो ब्राह्मण वेद वेदांगके पारगामी धर्मज्ञ हैं और अग्निहोत्र करनेवाले नहीं हैं, तौ इन पांच वा तीन पुरुषोंके समूहकोभी परिषद् कहाहै ॥ २० ॥ ध्यानधारणादि द्वारा आत्मतत्त्वको जानने वाले मुनि, यज्ञ करनेंवाले तथा स्नातक इनमेंका एक पुरुषभी परिषद् हो सकताहै ॥ २१ ॥

पंच पूर्वं मया प्रोक्तास्तेषां चासंभवे त्रयः ॥
स्ववृत्तिपरितुष्टा ये परिषत्सा प्रकीर्तिता ॥ २२ ॥

ऊपर कह आयेहैं कि पाच वेदज्ञ ब्राह्मणोंकी एकत्रित होनेपर परिषद् होतीहै परन्तु यदि ऐसे पांच ब्राह्मण न मिलैं तौ शास्त्रोक्त निज वृत्तिमें संतुष्ट उनके मिलनेपर परिषद् होसकतीहै ॥ २२ ॥

अत ऊर्ध्वं तु ये विप्राः केवलं नामधारकाः ॥ परिषत्त्वं न तेष्वस्ति सहस्रगुणितेष्वपि ॥ २३ ॥ यथा काष्ठमयो हस्ती यथा चर्ममयो मृगः ॥ ब्राह्मणंस्त्वनधीयानस्त्रयस्ते नामधारकाः ॥ २४ ॥ ग्रामस्थानं यथा शून्यं यथा कूपस्तु निर्जलः ॥ यथा हुतमनग्नौ च अमंत्रो ब्राह्मणस्तथा ॥ २५ ॥ यथा षंढोऽफलः स्त्रीषु यथा गौरुषराऽफला ॥ यथा चाज्ञेऽफलं दानं तथा विप्रोऽनृचोऽफलः ॥ २६ ॥ चित्रकर्म यथानेकै रंगैरुन्मील्यते शनैः ॥ ब्राह्मण्यमपि तद्विद्धि संस्कारैर्मंत्रपूर्वकैः ॥ २७ ॥

इसके अतिरिक्त जो केवल नाममात्रके ब्राह्मण हैं वह सहस्रों एकत्रित होनेंपरभी परिषद् नहीं होसकती ॥ २३ ॥ जिसभांति काठका हाथी, जैसा चर्म का मृग, वेदको न जाननेवाला ब्राह्मणभी उसीप्रकार है, यह तीनों केवल नाममात्रके धारण करनेंवाले हैं ॥ २४ ॥ जिसभांति शून्य ग्राम, निर्जल कूप, और अग्निहीन भस्मके ढेरमें हवन करना निष्फल है उसी भांति विनामंत्रोंका जाननेवाला ब्राह्मणभी निष्फल है ॥ २५ ॥ जिसभांति नपुंसकका स्त्रीके साथ संभोग निष्फल होजाताहै, जिसभांति ऊषर भूमि निष्फल है, जिसभांति मूर्खको दान देना निष्फल है उसीभांति वेद मंत्रोंको न जाननेवाला ब्राह्मण निषिद्ध है ॥ २६ ॥ चित्रकारीके काम में नानाभांतिके रंग शनैः २ भरे जातेहैं उसीभांति अनेक संस्कारोंसे मन्त्रोंके द्वारा ब्राह्मणत्व होताहै ॥ २७ ॥

प्रायश्चित्तं प्रयच्छंति ये द्विजा नामधारकाः ॥
ते द्विजाः पापकर्माणः समेता नरकं ययुः ॥ २८ ॥

नाममात्रके ब्राह्मण प्रायश्चित्तकी व्यवस्था देतेहैं वह पापी हैं और उनको नरककी प्राप्ति हातीह ॥ २८ ॥

ये पठंति द्विजा वेदं पंचयज्ञरताश्च ये ॥ त्रैलोक्यं तारयंत्येव पंचेंद्रियरता अपि ॥ २९ ॥ संप्रणीतः श्मशानेषु दीप्तोऽग्निः सर्वभक्षकः ॥ तथा च वेदविद्विप्रः सर्वभक्षोऽपि दैवतम् ॥ ३० ॥ अमेध्यानि तु सर्वाणि प्रक्षिप्यंते यथोदके ॥ तथैव किल्बिषं सर्वं प्रक्षिपेच्च द्विजानले ॥ ३१ ॥

जो ब्राह्मण वेदको पढतेहैं, और जो नित्य पंचयज्ञ करनेमें तत्पर रहतेहैं ये यद्यपि पंचेन्द्रियपरायण हों तथापि त्रिलोकीको धारण करतेहैं ॥ २९ ॥ स्मशानमें प्रदीप्त हुई अग्नि

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मंत्रोंसे संस्कार होनेके कारण जिसभांति सर्वभोक्ता है उसीभांति ब्रह्मज्ञानको प्राप्तकर संस्कारको प्राप्तहुआ ब्राह्मण सर्वभुक् और देवरूप है ॥ ३० ॥ जिसभांति सम्पूर्ण अपवित्र वस्तुओंको जलमें डालदिया जाताहै, उसीप्रकार सम्पूर्ण पापोंको निर्मल ब्राह्मणोंके ऊपर डालदेना उचित है ॥ ३१ ॥

गायत्रीरहितो विप्रः शूद्रादप्यशुचिर्भवेत् ॥
गायत्रीब्रह्मतत्त्वज्ञाः संपूज्यंते जनैर्द्विजाः ॥ ३२ ॥

गायत्रीहीन ब्राह्मण शूद्रसेभी अधिक अपवित्र है; और जो ब्राह्मण गायत्रीनिष्ठ और ब्रह्मतत्त्वको जानतेहैं वह श्रेष्ठ और पूजनीय हैं ॥ ३२ ॥

दुःशीलोऽपि द्विजः पूज्यो न तु शूद्रो जितेंद्रियः ॥
कः परित्यज्य गां दुष्टां दुहेच्छीलवतीं खरीम् ॥ ३३ ॥

दुःशील होनेपरभी ब्राह्मण पूजनीय हैं; और शूद्र जितेन्द्रिय होनेपरभी पूजनीय नहीं होसकता, ऐसा कौन मनुष्य है जो देख भाल करभी दूषित अंग गोको त्यागकर शीलवती गधैयाको दुहैगा ? अर्थात् कोई भी नहीं ॥ ३३ ॥

धर्मशास्त्ररथारूढा वेदखड्गधरा द्विजाः ॥
क्रीडार्थमपि यद्ब्रूयुः स धर्मः परमः स्मृतः ॥ ३४ ॥

जो ब्राह्मण धर्म शास्त्ररूपी रथपर चढकर वेदरूपी खड्गको धारण करतेहैं वह यदि हँसीसेभी जोकुछ कहदें उसकोही परम धर्म जानना ॥ ३४ ॥

चातुर्वेद्योऽविकल्पी च अंगविद्धर्मपाठकः ॥
त्रयश्चाश्रमिणो मुख्याः पर्षदेषा दशावरा ॥ ३५ ॥

चारों वेदोंका जाननेवाला, निश्चिन्त ज्ञानयुक्त वेदके अंगोंका पारदर्शी और धर्मशास्त्र पढानेवाला इकलाही श्रेष्ठ परिषद होसकताहै, प्रधान आश्रमीके दश होंनेपरभी वह मध्यमही परिषद् होती है ॥ ३५ ॥

राज्ञश्चानुमते स्थित्वा प्रायश्चित्तं विनिर्दिशेत् ॥ स्वयमेव न कर्तव्यं कर्तव्या स्वल्पनिष्कृतिः ॥ ३६ ॥ ब्राह्मणांस्तानतिक्रम्य राजा कर्तुं यदीच्छति ॥ तत्पापं शतधा भूत्वा राजानमनुगच्छति ॥ ३७ ॥

इसकारण ब्राह्मण राजाकी आज्ञानुसारही प्रायश्चित्तकी व्यवस्था दे; अपने आपसे कदापि न दे ॥ ३६ ॥ यदि ब्राह्मणकी विना सम्मतिके लिये राजा कोई व्यवस्था देदे तौ उस पापीका पाप सौगुना बढकर राजाके शरीरमें प्रवेश करजाताहै ॥ ३७ ॥

प्रायश्चित्तं सदा दद्याद्देवतायतनाग्रतः ॥ आत्मकृच्छ्रं ततः कृत्वा जपेद्वै वेदमातरम् ॥ ३८ ॥ सशिखं वपनं कृत्वा त्रिसंध्यमवगाहनम् ॥ गवां मध्ये वसेद्रात्रौ दिवा गाश्चाप्यनुव्रजेत् ॥ ३९ ॥ उष्णे वर्षति शीते वा मारुते वाति वा भृशम् ॥ न कुर्वीतात्मनस्त्राणं गोरकृत्वा तु शक्तितः ॥ ४० ॥ आत्मनो यदि वाऽन्येषां गृहे क्षेत्रेथवा खले ॥ भक्षयंतीं न कथयेत्पिबंतं

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चैव वत्सकम् ॥ ४१ ॥ पिबंतीषु पिबेत्तोयं संविशंतीषु संविशेत् ॥ पतितां पंकलग्नां वा सर्वप्राणैः समुद्धरेत् ॥ ४२ ॥

यदि ब्राह्मण देवमंदिरके सन्मुख बैठकर व्यवस्था दे दे तौ वेदमाता गायत्रीका जप करनेसे शुद्ध होताहै ॥ ३८ ॥ प्रायश्चित्त करनेके समयमें पहले शिखासहित शिरका मुंडन करावै, त्रिकालमें स्नान करे और दिनमें गौके पीछे २ फिरै और रात्रिके समय गोशालामें शयन करै ॥ ३९ ॥ चाहै गरम पवन चलै; चाहै ठंडी हवा चलै चाहै आंधी चलतीहो, चाहै वर्षा होतीहो परन्तु अपनी रक्षाकी ओर ध्यान न देकर अपनी शक्तिके अनुसार गौकी रक्षा करनी अवश्य कर्तव्य है ॥ ४० ॥ अपने या दूसरेके घरमें अथवा खेतमें वा खलमें यदि गौ कुछ धान्यादिक खातीहो तौ कुछ न बोलै, और जो बछडा गौका दूध पीताहो तौ भी कुछ न कहै ॥ ४१ ॥ गौके जलपान करनेपर पीछे आप जलपिये, गौके शयन करनेपर पीछे आप शयन करै, और यदि गौ किसी भांति गिरपडै या कीचडमें फँसजाय तौ यथाशक्ति उसको उठावै ॥ ४२ ॥

ब्राह्मणार्थे गवार्थे वा यस्तु प्राणान्परित्यजेत् ॥
मुच्यते ब्रह्महत्याया गोप्ता गोब्राह्मणस्य च ॥ ४३ ॥

जो मनुष्य ब्राह्मण और गौके निमित्त अपने प्राण त्याग करताहै वह और ब्राह्मण और गौकी रक्षा करनेवाला पुरुष ब्रह्महत्याके पापसे छूट जाताहै ॥ ४३ ॥

गोवधस्यानुरूपेण प्राजापत्यं विनिर्दिशेत् ॥ प्राजापत्यं ततः कृच्छ्रं विभजेत चतुर्विधम् ॥ ४४ ॥ एकाहमेकभक्ताशी एकाहं नक्तभोजनः ॥ अयाचिताश्येकमहरेकाहं मारुताशनः ॥ ४५ ॥ दिनद्वयं चैकभक्तो द्विदिनं नक्तभोजनः ॥ दिनद्वयमयाची स्याद्विदिनं मारुताऽशनः ॥ ४६ ॥ त्रिदिनं चैकभक्ताशी त्रिदिनं नक्तभोजनः ॥ दिनत्रयमयाची स्यात्त्रिदिनं मारुताशनः ॥ ४७ ॥ चतुरहं त्वेकभक्ताशी चतुरहं नक्तभोजनः ॥ चतुर्दिनमयाची स्याच्चतुरहं मारुताशनः ॥४८॥ प्रायश्चित्ते ततस्तीर्णे कुर्याद्ब्राह्मणभोजनम् ॥ विप्राणां दक्षिणां दद्यात्पवित्राणि जपेद्द्विजः ॥४९॥ब्राह्मणान्भोजयित्वा तु गोघ्नः शुद्ध्येन्न संशयः॥५०॥

इति पराशरीये धर्मशास्त्रे अष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

गोवधके प्रायश्चित्तके निमित्त प्राजापत्यके व्रतकी व्यवस्थाकरै; और प्राजापत्यनामक कृच्छ्रव्रतको चारभागोंमें विभक्त करै ॥४४ ॥ एक दिन एक रात्रिमें एकभुक्त भोजन करै; अयाचित पदार्थका भोजन करै, और एक दिन केवल वायुकाही सेवन करै ॥ ४५ ॥ दूसरे प्राजापत्यकी यह विधि है; दो दिन एकभुक्त रहै; दो दिनरात्रिमें भोजन करै, दो दिन अयाचित वस्तुका भोजन करै, और दो दिन केवल वायुही भक्षण करै ॥ ४६ ॥ तीसरे प्रकारके प्राजापत्यका नियम यह है कि तीन दिन एकभुक्त रहै, तीन दिन रात्रिमें भोजन करै; तीन दिन अयाचित पदार्थका भोजन करै; और तीन दिनतक केवल वायुही सेवन करै ॥ ४७ ॥ चौथे प्रकारका प्राजापत्य यह है कि चार दिनतक रात्रिमें भोजन करै और चार दिनतक अयाचित वस्तुका भोजन करता रहै, और चार दिन केवल पवनही सेवन करके

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रहै ॥ ४८ ॥ इस भांति चार प्रकारके प्राजापत्य व्रतका अनुष्ठान पूर्ण होनेपर ब्राह्मणोंको भोजन करावै; और दक्षिणा देकर ब्राह्मण पवित्र मंत्रोंका जप करता रहै ॥ ४९ ॥ ब्राह्मणोंको भोजन करानेसेही गो वधकरनेवाला शुद्ध होजायगा इसमें किंचित्भी संदेह नहीं है ॥ ५० ॥

इति श्रीपराशरीये धर्मशास्त्रे भाषाटीकायामष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

नवमोऽध्यायः ९.

गवां संरक्षणार्थाय न दुष्येद्रोधबंधयोः ॥
तद्वधं तु न तं विद्यात्कामाकामकृतं तथा ॥ १ ॥

भलीभांति रक्षा करनेकी इच्छासे गौको बांधने या रोकनेमें यदि गोहत्या होजाय तौ इसमें दोष नहीं है और उस अवस्थामें वह कामकृत वा अकामकृत गोवध नहीं कहा जासकता ॥ १ ॥

दंडादूर्ध्वं यदान्येन प्रहाराद्यदि पातयेत् ॥
प्रायश्चित्तं तदा प्रोक्तं द्विगुणं गोवधे चरेत् ॥ २ ॥

इस दंडके अतिरिक्त जो पुरुष अन्य दंडसे गौको मारताहै उसको प्रायश्चित्त करना उचितहै और यदि इस प्रहारसे गौकी मृत्यु होजाय तौ दुगना प्रायश्चित्त करना कर्तव्य है ॥ २ ॥

रोधबंधनयोक्त्राणि घातश्चेति चतुर्विधम् ॥ एकपादं चरेद्रोधे द्वौ पादौ बंधने चरेत् ॥ ३ ॥ योक्त्रेषु तु त्रिपादं स्याच्चरेत्सर्वं निपातने ॥ गोघाटे वा गृहे वापि दुर्गेष्वप्यसमस्थले ॥ ४ ॥ नदीष्वथ समुद्रेषु त्वन्येषु च नदीमुखे ॥ दग्धदेशे मृता गावःस्तंभनाद्रोध उच्यते ॥ ५ ॥ योक्त्रदामकरारैश्च कंठाभरणभूषणैः ॥ गृहे चापि वने वापि बद्धा स्याद्गौर्मृता यदि ॥ ६ ॥ तदेव बंधनं विद्यात्कामाकामकृतं च यत् ॥ हले वा शकटे पंक्तौ पृष्ठे वा पीडितो नरैः ॥७ ॥ गोपतिर्मृत्युमाप्नोति योक्त्रो भवति तद्वधः ॥ मत्तः प्रमत्त उन्मत्तश्चेतनो वाऽप्यचेतनः ॥ ८ ॥ कामाकामकृतक्रोधो दंडैर्हन्यादथोपलैः ॥ प्रहता वा मृता वापि तद्धि हेतुर्निपातने ॥ ९ ॥

रोध, बन्धन, जोत और घात इन चारप्रकारसे गौको पीडा देनेंपर प्रायश्चित्त करै, रोकनेंपर एकपाद प्रायश्चित्त करै, बांधनेपर दो पाद प्रायश्चित्त करै, जोतनेमें तीनपाद प्रायश्चित्त करै, और प्रहारसे प्राण नाश करनेंपर समस्त चतुष्पाद प्रायश्चित्त करै। यदि गौकी मृत्यु गौओंके चरानेके स्थानमें, गृहमें, घेरमें, दुर्गम स्थानमें, नदीमें, गडहेमें, गुहामुखमें और जलतेहुए स्थानमें स्थित गौके रोकनेसे गोवध होजाय, तौ उसको रोध कहतेहैं ॥३॥४॥५॥ यदि रस्सी, जोतकी रस्सी आर और घंटे आदि कंठके भूषण बांधनेसे गौ या बैलकी मृत्यु घरमें अथवा वनमें होजाय तौ ॥ ६ ॥ उसे बंधन कहतेहैं, यह बंधन दो भांतिका होताहै, एकतौ कामकृत दूसरा अकामकृत हलमें चलानेसे वा गाडीमें जोतनेसे अथवा पंक्तिमें, पीठमें मनुष्योंद्वारा पीडाको प्राप्तहोकर ॥७ ॥ यदि बैल मरजाय तो उस वधको योक्त्र कहतेहैं यदि मत्त, प्रमत्त,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उन्मत्त, चेतन, वा अचेतन होकर कामकृत या अकामकृत क्रोधित हो दंड या पत्थरसे गौके ऊपर प्रहार करताहै, उससे अत्यन्त पीडित होनेके कारण यदि गौकी मृत्यु होजाय तो उसको निपातन वा प्रहारके द्वारा गोवध कहतेहैं ॥ ८ ॥ ९ ॥

अंगुष्ठमात्रस्थूलस्तु बाहुमात्रः प्रमाणतः ॥
आर्द्रस्तु सपलाशश्च दंड इत्यभिधीयते ॥ १० ॥

अंगूठेकी समान मोटी एकहाथकी लम्बी और गीली तथा पत्तोंसे युक्त वृक्षकी शाखाको दंड कहतेहैं ॥ १० ॥

मूर्छितः पतितो वापि दंडेनाभिहतः स तु ॥ उत्थितस्तु यदा गच्छेत्पंच सप्त दशाथ वा ॥ ११ ॥ ग्रासं वा यदि गृह्णीयात्तोयं वापि पिबेद्यदि ॥ पूर्वव्याध्युपसृष्टश्चेत्प्रायश्चित्तं न विद्यते ॥ १२ ॥

दंडके प्रहारसे पीडित होकर यदि गौ मूर्छित होजाय या गिरपडै और वह गौ फिर मूर्छासे जागकर पांच या सात पग चलसके ॥ ११ ॥ अथवा उठकर एकग्रास खा ले वा जल पीले या प्रथम उसे कोई रोग हो तो उसका प्रायश्चित्त नहीं कहाहै ॥ १२ ॥

पिंडस्थे पादमेकं तु द्वौ पादौ गर्भसंमिते ॥ पादोनं व्रतमुद्दिष्टं हत्वा गर्भमचेतनम् ॥ १३ ॥ पादेऽगरोमवपनं द्विपादे श्मश्रुणोऽपि च ॥ त्रिपादे तु शिखावर्जं सशिखं तु निपातने ॥ १४ ॥ पादे वस्त्रयुगं चैव द्विपादे कांस्यभाजनम् ॥ त्रिपादे गोवृषं दद्याच्चतुर्थे गोद्वयं स्मृतम् ॥ १५ ॥ निष्पन्नसर्वगात्रेषु दृश्यते वा सचेतनः ॥ अंगप्रत्यंगसंपूर्णो द्विगुणं गोव्रतं चरेत् ॥ १६ ॥

पिंडकी समान गौका गर्भ नष्ट करनेपर एकपाद, गर्भमें स्थित वछडे आदिके यदि अंग प्रत्यंग वन गये हों उसके नष्ट करनेपर दोपाद, और चैतन्यहीन पूरे गर्भके बच्चेको नष्ट करनेपर मनुष्यको तीनपाद व्रतका अनुष्ठान करना कर्तव्यहै ॥ १३ ॥ एकपादके व्रतमें तो शरीरके रोम दूर करदे, दोपादके प्रायश्चित्तमें डाढी मूंछतकको मुडादे और पादोन प्रायश्चित्तमें शिखाके अतिरिक्त समस्त मुंडन करावै; और निपातन अर्थात् चतुष्पादके प्रायश्चित्तमें शिखा सहित सम्पूर्ण मुंडन कराना चाहिये ॥ १४ ॥ वस्त्रका जोडा एकपादके प्रायश्चित्तमें और कांसीका पात्र दो पादके प्रायश्चित्तमें, एक बैल पादोन प्रायश्चित्तमें और सम्पूर्ण चतुष्पद प्रायश्चित्तमें दो गौओंको दे ॥ १५ ॥ जो मनुष्य अंग प्रत्यंगयुक्त गौके सम्पूर्ण चेतनयुक्त गर्भको गिराताहै वह मनुष्य गोवधसे दूना प्रायश्चित्त करै ॥ १६ ॥

पाषाणेनैव दंडेन गावो येनाभिघातिताः ॥ शृंगभंगे चरेत्पादं द्वौ पादौ नेत्रघातने ॥ १७ ॥ लांगूले पादकृच्छ्रं तु द्वौ पादावस्थिभंजने ॥ त्रिपादं चैव कर्णे तु चरेत्सर्वं निपातने ॥ १८ ॥ शृंगभंगेऽस्थिभंगे च कटिभंगे तथैव च ॥ यदि जीवति षण्मासान्प्रायश्चित्तं न विद्यते ॥ १९ ॥

जिस मनुष्यने पत्थरसे या दंडके प्रहारसे गौके सींगोंको तोड दियाहै वह एकपाद व्रतकरै और नेत्रको फोडनेवाला दोपाद व्रत करै ॥ १७ ॥ उसी प्रहारसे पूंछ तोडनेवाला

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एकपाद कृच्छ्र व्रत करै, हड्डी तोडनेवाला दोपाद कृच्छ्र व्रत करै, कानके टूटनेपर तीनपाद कृच्छ्र व्रत करै, और यदि समस्त शरीरही भग्न होजाय तौ पूर्ण चतुष्पाद व्रत करै ॥ १८ ॥ सींग टूटने, हड्डी टूटने या: कमरके टूटनेपर उसके उपरान्त यदि गौ छैः महीनेतक जीवित रहजाय तौ प्रायश्चित्त नहीं होताहै ॥ १९ ॥

व्रणभंगे च कर्तव्यः स्नेहाभ्यंगस्तु पाणिना ॥ यवसश्चोपहर्तव्यो यावद्दृढबलो भवेत् ॥ २० ॥ यावत्संपूर्णसर्वांगस्तावत्तं पोषयेन्नरः ॥ गोरूपं ब्राह्मणस्याग्रे नमस्कृत्वा विसर्जयेत् ॥ २१ ॥ यद्यसंपूर्णसर्वांगो हीनदेहो भवेत्तदा ॥ गोघातकस्य तस्यार्द्धं प्रायश्चित्तं विनिर्दिशेत् ॥ २२ ॥

यदि प्रहारसे गौके शरीरमें घाव होजाय तौ जबतक वह अच्छा नहो तबतक उस व्रणमें स्वयं अपने हाथसे घृत तेलादि लगाता रहै, जबतक वह गौ भली भांतिसे चंगी और बलवती न होजाय, तबतक उसके निमित्त हरी २ घास लाला कर खिलाना कर्तव्य है ॥ २०॥ जबतक गौ निरोगता प्राप्त न करे तबतक उसका भली भांतिसे पोषण करतारहै, इसके उपरान्त ब्राह्मणको नमस्कार कर उस नीरोग गौ को छोडदे ॥ २१ ॥ यदि वह गौ पहलेकी समान चंगी भली न हुई हो, शरीरके किसी अंगमें हानिहो तौ उस मनुष्यको गोहत्याके प्रायश्चित्तसे आधा प्रायश्चित्त करना कर्तव्य है ॥ २२ ॥

काष्ठलोष्टकपाषाणैः शस्त्रेणैवोद्धतो बलात् ॥ व्यापादयति यो गां तु तस्य शुद्धिं विनिर्दिशेत् ॥ २३ ॥ चरेत्सांतपनं काष्ठे प्राजापत्यं तु लोष्टके ॥ तप्तकृच्छ्रं तु पाषाणे शस्त्रेणैवातिकृच्छ्रकम् ॥ २४ ॥ पंच सांतपने गावः प्राजापत्ये तथा त्रयः ॥ तप्तकृच्छ्रे भवंत्यष्टावतिकृच्छ्रे त्रयोदश ॥ २५ ॥

यदि जो उद्धत पुरुष लकडी, लोष्ट, पत्थर अथवा शस्त्रसे बल करकै गौको मारताहै तौ उसकी शुद्धि किसप्रकार होती है, उसे कहते हैं ॥ २३ ॥ लकडीसे हत्याकरनेवाला मनुष्य सांतपन व्रत करै; लोष्टसे हत्या करनेवाला मनुष्य प्राजापत्य व्रत करै, पत्थरसे हत्या करनेवाला मनुष्य तप्तकृच्छ्र करै, और शस्त्रसे गोहत्या करनेवाला मनुष्य अतिकृच्छ्र व्रतका अनुष्ठान करनेसे शुद्ध होता है ॥ २४॥ सान्तपन व्रतमें पांच गौ दान करनी; तीन गौ प्राजापत्य व्रतमें दान करनी, आठ गौ तप्तकृच्छ्र में दान करनी उचित हैं, और अतिकृच्छ्र व्रतमें तेरह गौओंका दान करना कर्तव्य है ॥ २५ ॥

प्रमापणे प्राणभृतां दद्यात्तत्प्रतिरूपकम् ॥
तस्यानुरूपं मूल्यं वा दद्यादित्यब्रवीन्मनुः ॥ २६ ॥

गौआदिके प्रायश्चित्तके परिमाणके अनुसार उसकेही अनुरूप गौ आदिकोंको दान करै अथवा उसका मूल्य दे दे यह मनुजीका कथन है ॥ २६ ॥

अन्यत्रांकनलक्ष्मभ्यां वाहने मोचने तथा ॥
सायं संगोपनार्थं च न दुष्येद्रोधबंधयोः ॥ २७ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भार वा गाडी आदिको लेचलनेके लिये चरनेके लिये छोडनेके निमित्त और संध्याको रक्षाके निमित्त यदि गौके शरीरमें कोई विशेष चिह्न करनेको रोध अथवा बंधन कियाजाय तौ उसमें कोई दोष नहीं होताहै ॥ २७ ॥

अतिदाहेऽतिवाहे च नासिकाभेदने तथा ॥ नदीपर्वतसंचारे प्रायश्चित्तं विनिर्दिशेत् ॥ २८ ॥ अतिदाहे चरेत्पादं द्वौ पादौ वाहने चरेत् ॥ नासिक्ये पादहीनं तु चरेत्सर्वं निपातने ॥ २९ ॥ दहनात्तु विपद्येत अनड्वान्योक्त्रयंत्रितः ॥ उक्तं पराशरेणैव ह्येकंपादं यथाविधि ॥ ३० ॥

दागते समयमें यदि अधिक दग्ध होजाय, या अधिक बोझ लेजानेके निमित्त लादा जाय, नाथाजाय, या कष्ट देनेवाले नदी पर्वतके मार्गसे लेंजाया जाय तौ प्रायश्चित्त करना उचित है ॥२८॥ अधिक दग्ध करनेपर एकपाद प्रायश्चित्त करै बोझा अधिक लादनेपर दोपाद प्रायश्चित्त करै नासिकाके छेदनेपर तीनपाद, और मारनेमें पूर्ण चतुष्पादका प्रायश्चित्त करना चाहिये ॥ ॥ २९ ॥ यदि जोतमें बंधा बैल अग्निसे मरजाय तौ विधिसहित एकपाद प्रायश्चित्त करनेसे शुद्ध होताहै, यह पराशर मुनिका वचन है ॥ ३० ॥

रोधनं बंधनं चैव भारप्रहरणं तथा ॥
दुर्गप्रेरणयोक्त्रं च निमित्तानि वधस्य षट् ॥ ३१ ॥

जोत, बंधन, रोध, अधिक बोझा लादना, प्रहार और जोतकर नदी पर्वत इत्यादि दुर्गम मार्गोंमें लेजाना, यह छैं हौं, प्रत्येक वधका मूल है ॥ ३१ ॥

बंधपाशसुगुप्तांगो म्रियते यदि गोपशुः ॥
भुवने तस्य पापी स्यात्प्रायश्चित्तार्द्धमर्हति ॥ ३२ ॥

यदि रस्सीमें बंधनेके कारण जो गौ मरजाय तौ गृहस्थीको अर्द्धकृच्छ्र व्रत करना उचित है ॥ ३२ ॥

न नारिकेलैर्न च शाणवालैर्न चापि मौंजैर्न च वल्कशृंखलैः ॥
एतैस्तु गावो न निबंधनीया बद्धा तु तिष्ठेत्परशुं गृहीत्वा ॥ ३३ ॥

नारियलकी रस्सी, सनकी रस्सी, मूञ्जकी रस्सी, अथवा लोहेकी जंजीरसे गौ और बैलको कदापि न बांधै, और जो यदि बांध भी दे तौ फरसे को हाथमें लेकर सर्वदा उनके सन्मुख बैठा रहै ॥ ३३ ॥

कुशैः काशैश्च बध्नीयाद्गोपशुं दक्षिणामुखम् ॥
पाशलग्नाग्निदग्धेषु प्रायश्चित्तं न विद्यते ॥ ३४ ॥

गौ अथवा अन्य पशुको दक्षिणकी ओरको मुखकर कुश अथवा काशसे बाँधै, यदि किसी कारणसे उसमें अग्नि लगकर पशुका शरीर जलजाय; तौ इस स्थानपर प्रायश्चित्त करनेकी विधि नहींहै ॥ ३४ ॥

यदि तत्र भवेत्काष्ठं प्रायश्चित्तं कथं भवेत् ॥
जपित्वा पावनीं देवीं मुच्यते तत्र किल्बिषात् ॥ ३५ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust Funding IKS-MoE-Grant

बुलन्दशहर (उ०प्र०)

यदि उस स्थानके काष्ठमें तृणोंके रस्सीकी अग्नि लगकर पशुके प्राणोंका नाश करदे तौ पवित्र करनेवाली गायत्रीका जप करनेसे पापसे छूट सकताहै ॥ ३५ ॥

प्रेरयन्कूपवापीषु वृक्षच्छेदेषु पातयन् ॥
गवाशनेषु विक्रीणंस्ततः प्राप्नोति गोवधम् ॥ ३६ ॥

कूपं या बावडी या तालावमें गौको प्रेरण करनेपर, या वृक्षोंको काटकर गौके ऊपर डालनेपर, या किसी गोभक्षणकारी मनुष्यके हाथ गौको बेचनेपर पूरा गौहत्याका पाप होताहै ॥ ३६ ॥

आराधितस्तु यः कश्चिद्भिन्नकक्षो यदा भवेत् ॥ श्रवणं हृदयं भिन्नं मग्नो वा कूपसंकटे ॥ ३७ ॥ कूपादुत्क्रमणे चैव भग्नो वा ग्रीवपादयोः॥ स एव म्रियते तत्र त्रीन्पादांस्तु समाचरेत् ॥ ३८ ॥

यदि इस अवस्थामें गौको विपत्तिसे उद्धार करनेके लिये पूर्वोक्त किसी कारणसे वक्षःस्थल, कान, अथवा हृदयका कोई भाग भग्न होजाय या गौ कुएआदिमें गिरपडै और उसको कुएमेंसे निकालनेके समयमें, उस गौके पैर, गरदन आदि टूटजायँ इस विपत्तिमें उसी समय या कुछ समय उपरान्त उसकी मृत्यु होजाय तौ उस पापसे छूटनेके लिये तीनपाद प्रायश्चित्त करना उचित है ॥ ३७ ॥ ३८ ॥

कूपखाते तटावंधे नदीवंधे प्रपासु च ॥ पानीयेषु विपन्नानां प्रायश्चित्तं न विद्यते ॥ ३९ ॥ कूपखाते तटाखाते दीर्घखाते तथैव च ॥ स्वल्पेषु धर्मखातेषु प्रायश्चित्तं न विद्यते ॥ ४० ॥

कुएके निकटके चौवच्चेमें, सरोवरमें, नदीके बँधेहुए घाटपर पौके ऊपर यदि गौ जलपीनेके लिये गई हो और उसी स्थानपर उसकी मृत्यु होजाय तौ किसी भांतिका प्रायश्चित्त करना उचित नहीं है ॥ ३९ ॥ यदि कुएके निकटके चौवच्चेमें नदी या जलाशयके निकटके गड्डेमें दीर्घखात वा साधारण जल पीनेके गड्डेमें गिरकर यदि गौ मरजाय तौ उसके निमित्त कुछ प्रायश्चित्त न करै ॥ ४० ॥

वेश्मद्वारे निवासेषु यो नरः खातमिच्छति ॥
स्वकार्ये गृहखातेषु प्रायश्चित्तं विनिर्दिशेत् ॥ ४१ ॥

जिसने अपने घरके द्वारपर गड्डा खोदाहै या घरके भीतर खोदाहै, या अपने कार्यके लिये वा साधारणके निमित्त तथा स्थान बँधानेके लिये खोदाहै उसी गड्डेमें यदि गौ गिरकर मरजाय तब अवश्य प्रायश्चित्त करना चाहिये ॥ ४१ ॥

निशि बंधनिरुद्धेषु सर्पव्याघ्रहतेषु च ॥ अग्निविद्युद्विपन्नानां प्रायश्चित्तं न विद्यते ॥ ४२ ॥ ग्रामघाते शरौघेण वेश्मभंगनिपातने ॥ अतिवृष्टिहतानां च प्रायश्चित्तं न विद्यते ॥ ४३ ॥ संग्रामेऽपहृतानां च ये दग्धा वेश्मकेषु च ॥ दावाग्निग्रामघातेषु प्रायश्चित्तं न विद्यते ॥ ४४ ॥ यंत्रिता गौश्चिकित्सार्थं मूढगर्भविमोचने ॥ यत्ने कृते विपद्येत प्रायश्चित्तं न विद्यते ॥ ४५ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यदि रात्रिके समय रोक कर बांधनेपर, या सर्पके काटनेसे या अग्नि तथा बिजलीके गिरनेसे गौकी मृत्यु होजाय तौ प्रायश्चित्त करनेकी कुछ आवश्यकता नहीं है ॥ ४२ ॥ यदि ग्राम बाणोंसे पीडित होजाय; या घर टूटकर गिरपडै तथा अत्यन्त वर्षाहो इन तीनोंमें यदि किसी कारणसे गौकी मृत्यु होजाय, तौ इस समयमें प्रायश्चित्त नहीं होता ॥ ४३ ॥ संग्राममें, घरमें अग्नि लगनेके समय किसी ग्रामवासीके घेर लेनेपर वा. दावाग्निसे जो गौ भस्म होकर मरजाय तौ उसका प्रायश्चित्त नहीं होता ॥ ४४ ॥ यदि चिकित्सा करनेके समय में गौको पीडा दीजाय अथवा दूषित गर्भके गिरानेपर अनेक यत्न करनेपरभी गौकी मृत्युहो जाय तौ उसका प्रायश्चित्त नहीं होता ॥ ४५ ॥

व्यापन्नानां बहूनां च रोधने बंधनेऽपि वा ॥
भिषङ्मिथ्यापचारेण प्रायश्चित्तं विनिर्दिशेत् ॥ ४६ ॥

बहुतसी गौ और बैलोंको एकसाथ बांधकर रोकनेपर उनकी अनभिज्ञ चिकित्सकसे चिकित्सा करानेमें यदि गौ वा बैलकी मृत्यु हो जाय तौ गोवधका प्रायश्चित्त करना उचित है ॥ ४६ ॥

गोवृषाणां विपत्तौ च यावंतः प्रेक्षका जनाः ॥
अनिवारयतां तेषां सर्वेषां पातकं भवेत् ॥ ४७ ॥

गौ अथवा बैलकी अकालमृत्युको अपने नेत्रोंसे देखकर भी उसको उस आसन्न मृत्युसे छुटानेकी जो मनुष्य चेष्टा नहीं करते वह गोहत्या पापके भागी होतेहैं ॥ ४७ ॥

एको हतो यैर्बहुभिः समेतैर्न ज्ञायते यस्य हतोऽभिघातात् ॥
दिव्येन तेषामुपलभ्य हंता निवर्त्तनीयो नृपसन्नियुक्तैः ॥ ४८ ॥

यदि किसी गौ या बैलको बहुतसे पुरुष इकट्ठे होकर ईंट पत्थर मारकर उसको पीडित करैं तौ उससे पशुकी कदाचित् मृत्यु होजाय और यह निश्चय न होसकै कि किस पुरुषके प्रहारसे गौकी मृत्यु हुई तौ राजाको उचित है कि वह अपने कर्मचारियोंके द्वारा प्रत्येक पुरुषको सौगन्ध दिलाकर उस पशुकी हत्याकरनेवालेका निश्चय करले ॥ ४८ ॥

एका चेद्बहुभिः काचिद्दैवाद्व्यापादिता क्वचित् ॥
पादं पादं तु हत्यायाश्चरेयुस्ते पृथक्पृथक् ॥ ४९ ॥

यदि एक गौ बहुतसे पुरुषोंके आघातसे मरगई हो तौ उन प्रहार करनेवालोंमें प्रत्येकको गोवधका चतुर्थांश प्रायश्चित्त करना कर्तव्य है ॥ ४९ ॥

हते तु रुधिरं दृश्यं व्याधिग्रस्तः कृशो भवेत् ॥ लाला भवति दंष्ट्रेषु एवमन्वेषणं भवेत् ॥ ५० ॥ ग्रासार्थं चोदितो वापि अध्वानं नैव गच्छति ॥ मनुना चैवमेकेन सर्वशास्त्राणि जानता ॥ प्रायश्चित्तं तु तेनोक्तं गोघ्नश्चांद्रायणं चरेत् ॥ ५१ ॥

गौके मारनेपर उसके रुधिरके चिह्नसे हत्या करनेवालेको जानले, या उन सबमेंसे जो रोगी होजाय, दुर्बल होजाय या जिसके दाढोंमेंसे लार गिरनेलगे, जो प्रेरणा करनेपरभी ग्रासके निमित्त घरसे बाहर न जाय ऐसी हत्या करनेवालेकी खोज करले, सम्पूर्ण शास्त्रोंके

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जाननेवाले अद्वितीय भगवान् मनुजीने गोहत्यामात्रमें चांद्रायण व्रतको करनेकी व्यवस्था दीहै ॥ ५० ॥ ५१ ॥

केशानां रक्षणार्थाय द्विगुणं व्रतमाचरेत् ॥ द्विगुणे व्रत आदिष्टे दक्षिणा द्विगुणा
भवेत् ॥ ५२ ॥ राजा वा राजपुत्रो वा ब्राह्मणो वा बहुश्रुतः ॥ अकृत्वा
वपनं तेषां प्रायश्चित्तं विनिर्दिशेत् ॥ ५३ ॥ यस्य न द्विगुणं दानं केशश्च
परिरक्षितः ॥ तत्पापं तस्य तिष्ठेत त्यक्त्वा च नरकं व्रजेत् ॥ ५४ ॥

गोहत्याके प्रायश्चित्तके समयमें जो केश रखने चाहैं उसको दुगना प्रायश्चित्त करना उचितहै और दुगने प्रायश्चित्तकी दुगनीही दक्षिणा देनी चाहिये ॥ ५२ ॥ राजा, राजपुत्र अथवा वेदोंका जाननेवाला ब्राह्मण केशोंका मुंडन न कराकरभी प्रायश्चित्त कर सकताहै ॥ ५३ ॥ जिस पुरुषने केशोंकी रक्षा कीहै और दुगना प्रायश्चित्त वा दुगनी दक्षिणा नहीं दीहै उसका पाप पहलेकी समान होगा वह अपने पापसे मुक्त नहीं होगा और जो इस भांति व्यवस्था करनेकी अनुमति देगा वहभी नरकको जायगा इसमें सन्देह नहीं ॥ ५४ ॥

यत्किंचित्क्रियते पापं सर्वं केशेषु तिष्ठति ॥ सर्वान्केशान्समुद्धृत्य च्छेदयेदंगु-
लिद्वयम् ॥ ५५ ॥ एवं नारीकुमारीणां शिरसो मुंडनं स्मृतम् ॥ न स्त्रियां
केशवपनं न दूरे शयनासनम् ॥ ५६ ॥

प्राणिमात्रके सम्पूर्ण किये हुए पाप केशोंमेंही निवास करतेहैं इस कारण बालोंको हाथमें पकडकर उनके अग्रभागके भागको दो २ अंगुल कटवादे ॥ ५५ ॥ यह रीति केवल कुमारी कन्या और सुहागिन स्त्रियोंके लिये है, कारण कि, इन स्त्रियोंको मुंडन और स्वतंत्र शयन अथवा स्वतंत्र भोजनका विधान नहीं है ॥ ५६ ॥

न च गोष्ठे वसेद्रात्रौ न दिवा गा अनुव्रजेत् ॥ नदीषु संगमे चैव अरण्येषु वि-
शेषतः ॥ ५७ ॥ न स्त्रीणामजिनं वासो व्रतमेवं समाचरेत् ॥ त्रिसंध्यं स्नान-
मित्युक्तं सुराणामर्चनं तथा ॥ ५८ ॥ बंधुमध्ये व्रतं तासां कृच्छ्रचांद्रायणा-
दिकम् ॥ गृहेषु सततं तिष्ठेच्छुचिर्नियममाचरेत् ॥ ५९ ॥

इन स्त्रियोंको रात्रिके समय गोशालामें शयन और दिनके समय गौके पीछे २ जाना उचित नहीं, और विशेष करके नदीके ऊपर, जनसमूहके स्थानमें और जंगलमेंभी इनके जानेका निषेध है ॥ ५७ ॥ स्त्रियोंको मृगचर्म ओढनेकी आवश्यकता नहीं वह तीनों कालमें स्नान कर देवताओंका पूजन करती रहैं ॥ ५८ ॥ स्त्रियोंको कृच्छ्र चांद्रायण व्रत अपने बंधु बांधवोंके बीचमें ही करना उचित है वह अपने घरमें स्थित रह कर सर्वदा पवित्र नियमोंका पालन करती रहैं ॥ ५९ ॥

इह यो गोवधं कृत्वा प्रच्छादयितुमिच्छति ॥ स याति नरकं घोरं कालसूत्रम-
संशयम् ॥ ६० ॥ विमुक्तो नरकात्तस्मान्मर्त्यलोके प्रजायते ॥ क्लीबो दुःखी
च कुष्ठी च सप्तजन्मानि वै नरः ॥ ६१ ॥ तस्मात्प्रकाशयेत्पापं स्वधर्मं सततं
चरेत् ॥ स्त्रीबालभृत्यरोगार्तेष्वतिकोपं विवर्जयेत् ॥ ६२ ॥

इति पराशरीये धर्मशास्त्रे नवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जो मनुष्य इस लोकमें गोवध करकै उस पापको छिपानेकी इच्छा करता है वह निश्चयही कालसूत्रनामक घोर नरकमें जाताहै ॥ ६० ॥ इसके उपरान्त उस भयानक नरकसे छूटकर फिर इसी मृत्यु लोकमें मनुष्ययोनिमें जन्म लेताहै और फिर जन्म लेकर बहिरा, दुःखी, कोढी होकर क्रमानुसार सातजन्म उसको व्यतीत करने पडतेहैं ॥ ६१ ॥ इस कारण पाप करकै उसको छिपानेकी चेष्टा कदापि न करै प्रकाश करदे, और स्त्री, बालक, सेवक, गौ तथा इनके ऊपर क्रोध कदापि न करै ॥ ६२ ॥

इति श्रीपराशरीये धर्मशास्त्रे भाषाटीकायां नवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥

दशमोऽध्यायः १०.

चातुर्वर्ण्येषु सर्वेषु हितां वक्ष्यामि निष्कृतिम् ॥
अगम्यागमने चैव शुद्धौ चांद्रायणं चरेत् ॥ १ ॥

इसके उपरान्त ब्राह्मण क्षत्रिय आदि चारों वर्णोंके पापसे छूटनेका उपाय कहते हैं, अगम्य स्त्रीमें गमन करनेसे जो पाप होताहै वह चांद्रायणव्रतके करनेसे मुक्त होताहै ॥ १ ॥

एकैकं ह्रासयेद्ग्रासं कृष्णे शुक्ले च वर्द्धयेत् ॥ अमावस्यां न भुंजीत ह्येष चांद्रायणो विधिः ॥ २ ॥ कुक्कुटांडप्रमाणं तु ग्रासं वै परिकल्पयेत् ॥ अन्यथा जातदोषेण न धर्मो न च शुद्ध्यते ॥ ३ ॥ प्रायश्चित्ते ततश्चीर्णे कुर्याद्ब्राह्मणभोजनम् ॥ गोद्वयं वस्त्रयुग्मं च दद्याद्विप्रेषु दक्षिणाम् ॥ ४ ॥

कृष्णपक्षमें प्रतिदिन एक ग्रास कमती करता रहै, और शुक्ल पक्षमें प्रतिदिन एक२ग्रासको बढावै और अमावस्याके दिन कुछभी न खाय यह चांद्रायण व्रतकी विधि है ॥ २ ॥ एक २ ग्रासको मुरगीके अंडोंकी समान बडा बनावै, इसके अन्यथा करनेसे न धर्म है और न शुद्धिही होतीहै ॥ ३ ॥ प्रायश्चित्तका अनुष्ठान शेष होजानेपर ब्राह्मणभोजन करावै, और दो गौ और एक जोडा वस्त्र ब्राह्मणोंको दक्षिणामें दे ॥ ४ ॥

चंडालीं वा श्वपाकीं वा अनुगच्छति यो द्विजः ॥ त्रिरात्रमुपवासी च विप्राणामनुशासनात् ॥ ५ ॥ सशिखं वपनं कृत्वा प्राजापत्यद्वयं चरेत् ॥ ब्रह्मकूर्चं ततः कृत्वा कुर्याद्ब्राह्मणतर्पणम् ॥ ६ ॥ गायत्रीं च जपेन्नित्यं दद्याद्गोमिथुनद्वयम् ॥ विप्राय दक्षिणां दद्याच्छुद्धिमाप्नोत्यसंशयम् ॥ ७ ॥ गोद्वयं दक्षिणां दद्याच्छुद्धिं पाराशरोऽब्रवीत् ॥

जो ब्राह्मण चांडाली वा श्वपचीमें गमन करताहै वह ब्राह्मण ब्राह्मणोंकी आज्ञानुसार तीनरात्रि उपवास करै ॥ ५ ॥ इसके पीछे शिखासहित सम्पूर्ण केशोंका मुंडन करावै और दो प्राजापत्य व्रत करै, इसके पीछे ब्रह्मकूर्चका पान करकै भोजनादिद्वारा ब्राह्मणोंको संतुष्ट करै ॥ ६ ॥ इसपीछे वह नित्य गायत्रीका जपकरता रहै, फिर एक गौ और एक बैल ब्राह्मणोंको दक्षिणामें दे, तौ वह निस्संदेह शुद्धि प्राप्त कर सकताहै ॥ ७ ॥ यह पाराशरजीका वचन है कि दो गौ दक्षिणामें देनेसे शुद्धि होतीहै,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

क्षत्रियो वाथ वैश्यो वा चण्डालीं गच्छतो यदि ॥ ८ ॥
प्राजापत्यद्वयं कुर्याद्दद्याद्गोमिथुनद्वयम् ॥

यदि कोई क्षत्रिय वा वैश्य किसी चांडालीमें गमन करै तौ ॥ ८ ॥ वह दो प्राजापत्य व्रत करै और ब्राह्मणोंको एक गौ और एक बैल दक्षिणामें दे;

श्वपाकीं वाथ चण्डालीं शूद्रो वा यदि गच्छति ॥ ९ ॥
प्राजापत्यं चरेत्कृच्छ्रं चतुर्गोमिथुनं ददेत् ॥ १० ॥

यदि शूद्र श्वपाकी और चांडालीके साथ गमन करै तौ ॥ ९ ॥ एक प्राजापत्य व्रतकर ब्राह्मणोंको चार गोमिथुन दक्षिणामें दे ॥ १० ॥

मातरं यदि गच्छेत्तु भगिनीं स्वसुतां तथा ॥ एतास्तु मोहितो गत्वा त्रीणि कृच्छ्राणि संचरेत् ॥ ११ ॥ चांद्रायणत्रयं कुर्याच्छिश्नच्छेदेन शुद्ध्यति ॥

अपनी माता, बहन और पुत्रीमें जो मनुष्य अज्ञानतासे गमन करताहै वह तीन कृच्छ्रव्रत करै ॥ ११ ॥ वा तीन चांद्रायण करै पीछे शिर छेदन करनेसे शुद्धि होतीहै;

मातृष्वसृगमे चैव आत्ममेढ्रनिकृंतनम् ॥ १२ ॥ अज्ञानेन तु यो गच्छेत्कुर्याच्चांद्रायणद्वयम् ॥ दशगोमिथुनं दद्याच्छुद्धिं पाराशरोब्रवीत् ॥ १३ ॥

और माताकी बहनके साथ गमन करनेवाला अपनी लिङ्गेन्द्रिय काटनेपरही शुद्ध होताहै ॥ १२ ॥ यदि जो पुरुष अज्ञानतासे मौसीके विषय गमन करताहै वह दो चांद्रायण व्रत करै, और दस गौ और दश बैल ब्राह्मणोंको दान करै तब शुद्ध होताहै, यह पराशरजीका कथन है ॥ १३ ॥

पितृदारान्समारुह्य मातुराप्तां च भ्रातृजाम् ॥ गुरुपत्नीं स्नुषां चैव भ्रातृभार्यां तथैव च ॥ १४ ॥ मातुलानीं सगोत्रां च प्राजापत्यत्रयं चरेत् ॥ गोद्वयं दक्षिणां दत्त्वा मुच्यते नात्र संशयः ॥ १५ ॥

जो पुरुष सौतेली मातामें, माताकी सखीमें, भाईकी लडकीमें, गुरुकी स्त्रीमें, पुत्रकी स्त्रीमें, भ्राताकी स्त्रीमें ॥ १४ ॥ मामाकी स्त्रीमें या अपने गोत्रकी कन्याके साथ गमन करताहै वह तीन प्राजापत्यव्रत कर दो गौ दक्षिणामें देनेसे निःसन्देह शुद्ध हो जाताहै ॥ १५ ॥

पशुवेश्यादिगमने महिष्युष्ट्रौ कपीं तथा ॥
खरीं च शूकरीं गत्वा प्राजापत्यं समाचरेत् ॥ १६ ॥

पशु, वेश्या, महिषी (भैंस) ऊंटनी, वानरी, गर्दभी, शूकरीके साथ गमन करनेवाला प्राजापत्यव्रत करै ॥ १६ ॥

गोगामी च त्रिरात्रेण गामेकां ब्राह्मणे ददेत् ॥
महिष्युष्ट्रीखरीगामी त्वहोरात्रेण शुद्ध्यति ॥ १७ ॥

गौके साथ गमन करनेवाला तीनरात्रि उपवास कर ब्राह्मणोंको एक गौ दान करै। महिषी, ऊंटनी और गर्दभीके साथ गमन करनेवाला एक रात्रिदिन उपवास करनेसे शुद्ध हो जाताहै ॥ १७ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डामरे समरे वापि दुर्भिक्षे वा जनक्षये ॥
बंदिग्राहे भयार्तो वा सदा स्वस्त्रीं निरीक्षयेत् ॥ १८ ॥

मारामारी वा काटाकाटीके समयमें, युद्धके समय, दुर्भिक्षके समय, जनक्षयके समय, भय प्राप्त होनेके समय, कोई आक्रमण करनेवाला यदि पकडकर या वन्दी करके लेजाय तो उस समय सर्वदा अपनी स्त्रीकी ओर दृष्टि रखनी उचित है ॥ १८ ॥

चण्डालैः सह संपर्कं या नारी कुरुते ततः ॥ विप्रान्दशवरान्कृत्वा स्वयं दोषं प्रकाशयेत् ॥ १९ ॥ आकंठसंमिते कूपे गोमयोदककर्दमे ॥ तत्र स्थित्वा निराहारा त्वहोरात्रेण निष्क्रमेत् ॥ २० ॥ सशिखं वपनं कृत्वा भुंजीयाद्यावकौदनम् ॥ त्रिरात्रमुपवासित्वा त्वेकरात्रं जले वसेत्॥ २१ ॥ शंखपुष्पीलतामूलं पत्रं वा कुसुमं फलम् ॥ सुवर्णं पंचगव्यं च क्वाथयित्वा पिबेज्जलम् ॥ २२ ॥ एकभक्तं चरेत्पश्चाद्यावत्पुष्पवती भवेत् ॥ व्रतं चरति तद्यावत्तावत्संवसते बहिः ॥ २३ ॥ प्रायश्चित्ते ततश्चीर्णे कुर्याद्ब्राह्मणभोजनम् ॥ गोद्वयं दक्षिणां दद्याच्छुद्धिं पाराशरोऽब्रवीत् ॥ २४ ॥

जो स्त्री चांडालके साथ सहवास करै; तौ वह अपने पापको श्रेष्ठ दस ब्राह्मणोंके निकट प्रकाशित करदे ॥ १९ ॥ गोवरके जल व कीचसे भरेहुए कूपमें गलेतक मग्न होकर विना भोजन करे एक रातदिन रहकर निकल आवै ॥ २० ॥ फिर शिखासहित सारे शिरका मुंडन कराकर अधपके हुए यवका भोजन करै, इसके उपरान्त तीन रात्रि उपवास कर एकरात्रि जलमें निवास करै ॥ २१ ॥ पीछे शंखपुष्पी औषधीकी जड, पत्ते, फूल, फल और सुवर्ण तथा पंचगव्य इन सबको एकत्र पीसके औटाकर उसका जलपान करै ॥ २२ ॥ इसके उपरान्त जबतक ऋतुमती हो तबतक पकेहुए अन्नका भोजन दिनमें एक वार करै, जबतक यह व्रत समाप्त न होजाय तबतक घरकृत्यसे बाहर रहै ॥ २३ ॥ इस भांति प्रायश्चित्तके समाप्त होजानेपर ब्राह्मण भोजन कराकर दो गौ दक्षिणामें दे तब शुद्धि होतीहै यह पाराशरजीका वचनहै ॥ २४ ॥

चातुर्वर्ण्यस्य नारीणां कृच्छ्रं चांद्रायणव्रतम् ॥
यथा भूमिस्तथा नारी तस्मात्तां न तु दूषयेत् ॥ २५ ॥

यदि चारों वर्णोंकी स्त्रियें दोषयुक्त होजायँ तौ कृच्छ्र चांद्रायण व्रत करैं; पृथ्वी और स्त्री दोनोंही समान हैं इसकारण उनको दूषित न करै ॥ २५ ॥

बंदिग्राहेण या भुक्ता हत्वा बद्ध्वा बलाद्भयात् ॥ कृत्वा सांतपनं कृच्छ्रं शुद्ध्येत्पाराशरोऽब्रवीत ॥ २६ ॥ सकृद्भुक्ता तु या नारी नेच्छंती पापकर्मभिः ॥ प्राजापत्येन शुद्ध्येत ऋतुप्रस्रवणेन च ॥ २७ ॥

जिस स्त्रीको वंदी करकै अन्य पुरुष भोगतेहैं, अथवा जिस स्त्रीको प्रहार कर कैद करकै भय दिखाकर बलात्कार करकै भोगाहै पराशरजीका कथनहै कि, वह स्त्री कृच्छ्र सांतपन व्रतके करनेसे शुद्ध होतीहै ॥ २६ ॥ जिस स्त्रीकी विना इच्छाके पापी पुरुषोंने बलपूर्वक एकवारभी भोगाहै वह प्राजापत्य व्रत करकै ऋतुमती होनेपर शुद्ध होजातीहै ॥ २७ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2-

पं० गंगा दत्त शास्त्री जहांगीराबाद (८३१) बुलन्दशहर (उ०प्र०)

पतत्यर्द्धं शरीरस्य यस्य भार्या सुरां पिबेत् ॥ पतितार्द्धशरीरस्य निष्कृतिर्न विधीयते ॥ २८ ॥ गायत्रीं जपमानस्तु कृच्छ्रं सांतपनं चरेत् ॥ २९ ॥ गोमूत्रं गोमयं क्षीरं दधि सर्पिः कुशोदकम् ॥ एकरात्रोपवासश्च कृच्छ्रं सांतपनं स्मृतम् ॥ ३० ॥

जो स्त्री मदिरा पान करतीहै उसका आधा शरीर पतित होजाताहै; इस प्रकारसे जिसका शरीर पतित होगयाहै उसकी शुद्धि नहीं है, वह नरकको जाती है इसमें संदेह नहीं ॥ २८ ॥ कृच्छ्र सांतपन व्रतके आचरण करनेके समय निरन्तर गायत्रीका जप करता रहै ॥ २९ ॥ गोमूत्र, गौका गोबर, दूध, दही, घृत, और कुशका जल, यह पंचगव्य पानकर एकरात्रि उपवास करै, यह सांतपन कहाताहै ॥ ३० ॥

जारेण जनयेद्गर्भं मृते त्यक्ते गते पतौ ॥
तां त्यजेदपरे राष्ट्रे पतितां पापकारिणीम् ॥ ३१ ॥

पतिके त्याग करनेसे या पतिके मरजानेसे स्त्री अन्य पुरुषके संयोगसे गर्भवती होजाय तो उस पापिनी पतित स्त्रीको अन्यराज्यमें छोड आवे ॥ ३१ ॥

ब्राह्मणी तु यदा गच्छेत्परपुंसा समन्विता ॥ सा तु नष्टा विनिर्दिष्टा न तस्या गमनं पुनः ॥ ३२ ॥ कामान्मोहाच्च या गच्छेत्त्यक्त्वा बंधून्सुतान्पतिम् ॥ सापि नष्टा परे लोके मानुषेषु विशेषतः ॥ ३३ ॥

यदि कोई ब्राह्मणी पर पुरुषके साथ निकलजाय तौ उसको नष्ट हुई जानो, उसको किसी प्रकारभी घरमें रखना उचित नहीं ॥ ३२ ॥ यदि कोई स्त्री काम या मोहके वशीभूत होकर पति, पुत्र, तथा बंधु बांधवोंको त्याग कर घरसे चलीजाय, तौ वह परलोकमें तथा मनुष्य समाजमें नष्ट होजातीहै ॥ ३३ ॥

मदमोहगता नारी क्रोधाद्दंडादिताडिता ॥
अद्वितीयं गता चैव पुनरागमनं भवेत् ॥ ३४ ॥

जो स्त्री मद वा मोहसे अथवा क्रोधसे दंडके ताडन करनेसे विना किसीके पास गये घर लौट आवै ॥ ३४ ॥

दशमे तु दिने प्राप्ते प्रायश्चित्तं न विद्यते ॥ दशाहं न त्यजेन्नारीं त्यजेद्दृष्टश्रुतां तथा ॥ ३५ ॥ भर्त्ता चैव चरेत्कृच्छ्रं कृच्छ्रार्द्धं चैव बांधवाः ॥ तेषां भुक्त्वा च पीत्वा च अहोरात्रेण शुद्ध्यति ॥ ३६ ॥

यदि उस स्त्रीको गये हुए घरसे दश दिन बीत जायँ तौ प्रायश्चित्त नहीं वह पतितही होती है कारण कि, दश दिनतक स्त्रीका त्याग न करै, परन्तु यदि उसको नष्टा सुनाजाय तौ उसका त्याग करदे ॥ ३५ ॥ और उसके पतिको कृच्छ्र व्रत और उसके बंधु बांधवोंको अर्द्धकृच्छ्र व्रत करना चाहिये, और उनके घरका जिसने भोजन कियाहो वा जलपान किया हो वह अहोरात्र उपवास करनेसे शुद्ध होजाताहै ॥ ३६ ॥

ब्राह्मणी तु यदा गच्छेत्परपुंसा विवर्जिता ॥
गत्वा पुंसां शतं याति त्यजेयुस्तां तु गोत्रिणः ॥ ३७ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यदि कोई ब्राह्मणी निषेध करनेपर भी परपुरुषके संग चलीजाय वह स्त्री यदि दूसरे पुरुषका संग करके शीघ्र अपने पतिके निकट चली आवै तौ सगोत्रियोंको उसको त्यागदेना उचित है ॥ ३७ ॥

पुंसो यदि गृहं गच्छेत्तदाऽशुद्धं गृहं भवेत् ॥ पितृमातृगृहं यच्च जारस्यैव तु तद्गृहम् ॥ ३८ ॥ उल्लिख्य तद्गृहं पश्चात्पंचगव्येन सेचयेत् ॥ त्यजेच्च मृन्मयं पात्रं वस्त्रं काष्ठं च शोधयेत् ॥ ३९ ॥ संभाराञ्छोधयेत्सर्वान्गोकेशैश्च फलोद्भवान् ॥ ताम्राणि पंचगव्येन कांस्यानि दशभस्मभिः ॥ ४० ॥ प्रायश्चित्तं चरेद्विप्रो ब्राह्मणैरुपपादयेत् ॥ गोद्वयं दक्षिणां दद्यात्प्राजापत्यद्वयं चरेत् ॥ ४१ ॥ इतरेषामहोरात्रं पंचगव्यं च शोधनम् ॥ उपवासैर्व्रतैः पुण्यैः स्नानसंध्यार्चनादिभिः ॥ ४२॥ जपहोमदयादानैः शुद्ध्यन्ते ब्राह्मणादयः ॥ आकाशं वायुरग्निश्च मेध्यं भूमिगतं जलम् ॥ ४३ ॥ न दुष्यंति च दर्भाश्च यज्ञेषु चमसा यथा ॥ ४४ ॥

इति पराशरीये धर्मशास्त्रे दशमोऽध्यायः ॥ १० ॥

यदि वह स्त्री जारपुरुषके घरमेंसे चली आवै तौ पतिका घर और उस स्त्रीके पिता और माताका घर अशुद्ध होजाताहै ॥ ३८ ॥ उस घरको खोदकर पीछे पंचगव्यको छिडके, और मिट्टीके पात्रोंको फैंकदे और वस्त्र तथा काष्ठके पात्रोंकी शुद्धि करै ॥ ३९ ॥ फलकी सामग्रियोंको तौ गौके चँवरासे शुद्ध करै और ताँबेकी वस्तुओंको पंचगव्यसे शुद्ध करै और काँसीकी वस्तुको दशवार भस्मसे मांजकर शुद्ध करना उचित है ॥ ४० ॥ ब्राह्मणोंके कहे हुए प्रायश्चित्तको वह ब्राह्मण करै, और दो गौ दक्षिणामें दे और दो प्राजापत्यव्रत करै ॥ ४१ ॥ और उसके अन्यान्य बंधु अहोरात्र व्रतकर पंचगव्य पान करके तथा, उपवास, व्रत, पुण्य, स्नान, सन्ध्या, पूजनआदिसे ॥ ४२ ॥ और जप होम दया दान इनसे ब्राह्मणआदि शुद्ध होजातेहैं ॥ आकाश, पवन, अग्नि, और पृथ्वीमें पडा हुआ जल ॥ ४३ ॥ तथा कुशा यह किसी भांति अशुद्ध नहीं होते, जिस भांति यज्ञमें चमसा अशुद्ध नहीं होताहै॥४४॥

इति श्रीपराशरीये धर्मशास्त्रे भाषाटीकायां दशमोऽध्यायः ॥ १० ॥

एकादशोऽध्यायः ११.

अमेध्यरेतो गोमांसं चंडलान्नमथापि वा ॥ यदि भुक्तं तु विप्रेण कृच्छ्रं चांद्रायणं चरेत् ॥ १ ॥ क्षत्रियो वाथ वैश्यश्चेदर्धकृच्छ्रं च कायिकम् ॥ २ ॥ पंचगव्यं पिबेच्छूद्रो ब्रह्मकूर्चं पिबेद्द्विजः ॥ एकद्वित्रिचतुर्गावो दद्याद्विप्राद्यनुक्रमात् ॥ ३ ॥

यदि ब्राह्मणने अशुद्ध पदार्थ, वीर्य, गौका मांस, और चांडालके यहांका अन्न भक्षण करलियाहो तौ चांद्रायण व्रतके करनेसे उसकी शुद्धि होतीहै ॥ १ ॥ और यदि क्षत्रीने इन वस्तुओंको खालिया हो तौ वह अर्द्धकृच्छ्र चांद्रायण व्रत करनेसे शुद्ध होताहै; और वैश्य इन वस्तुओंके खानेसे प्राजापत्य व्रतके करनेसे शुद्ध होताहै ॥ २ ॥ और शूद्र तौ पंचगव्यका पान

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

करै, और ब्राह्मण ब्रह्मकूर्चको पीले, फिर ब्राह्मणआदि चारोंवर्ण क्रमानुसार एक, दो, तीन और चार गौओंका दान करैं ॥ ३ ॥

शूद्रान्नं सूतकान्नं च अभोज्यस्यान्नमेव च ॥ शंकितं प्रतिषिद्धान्नं पूर्वोच्छिष्टं तथैव च ॥ ४ ॥ यदि भुक्तं तु विप्रेण अज्ञानादापदापि वा ॥ ज्ञात्वा समाचरे-त्कृच्छ्रं ब्रह्मकूर्चं तु पावनम् ॥ ५ ॥

शूद्रका अन्न, सूतकका अन्न, अभोज्यका अन्न, शंकित अन्न, निषिद्ध अन्न, उच्छिष्ट अन्न ॥ ४ ॥ इन अन्नोंको यदि कोई ब्राह्मण अज्ञानतासे या विपत्ति आनेके समय खाले तौ उसको जानकर कृच्छ्रव्रत करै और पवित्र करनेवाले ब्रह्मकूर्चका पान करैं ॥ ५ ॥

व्यालैर्नकुलमार्जारैरन्नमुच्छिष्टितं यदा ॥
तिलदर्भोदकैः प्रोक्ष्य शुद्ध्यते नात्र संशयः ॥ ६ ॥

जिसे सर्प, नौला, बिलावआदिने जूंठा करदिया हो वह तिल और कुशाका जल छिडक-नेसे निःसन्देह उस अन्नकी शुद्धि होजातीहै ॥ ६ ॥

शूद्रोऽप्यभोज्यं भुक्त्वान्नं पंचगव्येन शुद्ध्यति ॥
क्षत्रियो वापि वैश्यश्च प्राजापत्येन शुद्ध्यति ॥ ७ ॥

अभोज्य अन्नको खानेवाला शूद्रभी पंचगव्यके पीनेसे शुद्ध होजाताहै; यदि अभोज्य अन्नको क्षत्रिय तथा वैश्य खाले तौ वह प्राजापत्य व्रत करनेसे शुद्ध होजातेहैं ॥ ७ ॥

एकपंक्त्युपविष्टानां विप्राणां सहभोजने ॥ यद्येकोऽपि त्यजेत्पात्रं शेषमन्नं न भोजयेत् ॥ ८ ॥ मोहाद्भुंजीत यस्तत्र पंक्तावुच्छिष्टभोजने ॥ प्रायश्चित्तं चरे-द्विप्रः कृच्छ्रं सांतपनं तथा ॥ ९ ॥

एक पंक्तिमें एकसाथ भोजन करते हुए ब्राह्मणोंमेंसे यदि कोई ब्राह्मण भोजन करनेसे खडा होजाय तौ उस शेष अन्नको कोई ब्राह्मण भी न खाय ॥ ८ ॥ यदि इस अवस्थामें कोई ब्राह्मण अज्ञानतासे उस पंक्तिमें उच्छिष्टको खाले; तौ उस ब्राह्मणको सांतपन कृच्छ्रका प्रायश्चित्त करना उचित है ॥ ९ ॥

पीयूषं श्वेतलशुनं वृंताकफलगृंजने ॥ पलांडुं वृक्षनिर्यासान्देवस्वं कवकानि च ॥ १० ॥ उष्ट्रीक्षीरमवीक्षीरमज्ञानाद्भुंजते द्विजः ॥ त्रिरात्रमुपवासेन पंचगव्ये-न शुद्ध्यति ॥ ११ ॥

पेवची, श्वेतलहसन, बैंगन, गाजर, प्याज, वृक्षका गोंद, देवताका द्रव्य, कवक (पृथ्वी-की ढाल) ॥ १० ॥ ऊंटनी, तथा भेडका दूध, जो ब्राह्मण इन वस्तुओंको अज्ञानतासे खाता है वह तीनरात्रि उपवासकर पंचगव्यके पीनेसे शुद्ध होजाताहै ॥ ११ ॥

मंडूकं भक्षयित्वा तु मूषिकामांसमेव च ॥
ज्ञात्वा विप्रस्त्वहोरात्रं यावकान्नेन शुद्ध्यति ॥ १२ ॥

जो ब्राह्मण जानबूझ कर मेंडक और मूंसेके मांसको खाताहै वह अहोरात्रमें: जौके खा-नेसे शुद्ध होजाताहै ॥ १२ ॥

क्षत्रियश्चापि वैश्यश्च क्रियावंतौ शुचिव्रतौ ॥
तद्गृहेषु द्विजैर्भोज्यं हव्यकव्येषु नित्यशः ॥ १३ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

क्षत्री हो या वैश्य हो जब कि वह क्रियाकरनेवाले धर्माचरणकारी और पवित्रात्मा हैं तब उनके यहां हव्य कव्यमें सर्वदा भोजन करसकता है ॥ १३ ॥

घृतं क्षीरं तथा तैलं गुडं तैलेन पाचितम् ॥ गत्वा नदीतटे विप्रो भुंजीयाच्छूद्रभाजने ॥ १४ ॥ मद्यमांसरतं नित्यं नीचकर्मप्रवर्तकम् ॥ तं शूद्रं वर्जयेद्विप्रः श्वपाकमिव दूरतः ॥ १५ ॥ द्विजशुश्रूषणरतान्मद्यमांसविवर्जितान् ॥ स्वकर्मनिरतान्नित्यं ताञ्छूद्रान्न त्यजेद्द्विजः ॥ १६ ॥

ब्राह्मण नदीके किनारे जाकर शूद्रके पात्रमें घी, दूध, तेल, और तेलसे पके हुए गुडको खाले ॥ १४॥ जो शूद्र मदिरा मांस खाता, नीचकर्म करताहो उस शूद्रको श्वपाककी समान दूरसेही त्यागदे ॥ १५ ॥ जो शूद्र ब्राह्मणोंकी सेवा करताहो, मदिरा मांसको न खानेवाला अपने कर्ममें तत्पर हो उस शूद्रका ब्राह्मणोंको त्याग करना उचित नहीं॥ १६ ॥

अज्ञानाद्भुंजते विप्राः सूतके मृतकेऽपि वा ॥ प्रायश्चित्तं कथं तेषां वर्णे वर्णे विनिर्दिशेत् ॥ १७ ॥ गायत्र्यष्टसहस्रेण शुद्धिः स्याच्छूद्रसूतके ॥ वैश्ये पंचसहस्रेण त्रिसहस्रेण क्षत्रिये ॥ १८॥ ब्राह्मणस्य यदा भुंक्ते द्विसहस्रं तु दापयेत् ॥ अथवा वामदेव्येन साम्ना चैकेन शुद्ध्यति ॥ १९ ॥

(प्रश्न) यदि जो ब्राह्मण अज्ञानतासे सूतक वा मृतकमें भोजन करतेहैं तौ वर्ण वर्णके प्रति उनका किस प्रकारसे प्रायश्चित्त कहाहै? ॥१७॥ (उत्तर) शूद्रके यहां सूतकमें भोजन करनेसे आठहजार गायत्री जपकरनेसें शुद्धि होतीहै, वैश्यके यहां सूतकमें भोजन करनेसे पांचहजार गायत्रीका जपकरै, और क्षत्रियके यहां सूतकमें भोजन करनेसे तीनहजार गायत्रीका जपकरनेसे शुद्धि होजातीहै ॥ १८॥ परन्तु ब्राह्मणके यहां सूतकमें खानेसे दोहजार गायत्रीका जप करै अथवा वामदेव ऋषिके कहेहुए साममंत्रसेही शुद्धि होजातीहै ॥ १९ ॥

शुष्कान्नं गोरसं स्नेहं शूद्रवेषेण आहृतम् ॥ पक्वं विप्रगृहे भुंक्ते भोज्यं तं मनुरब्रवीत् ॥ २० ॥ आपत्काले तु विप्रेण भुंक्ते शूद्रगृहे यदि ॥ मनस्तापेन शुद्ध्येत द्रुपदां वा सकृज्जपेत् ॥ २१ ॥

शूद्रके यहांका अन्न, गोरस, और स्नेह (घीआदि) यह यदि शूद्रके यहांसे लाकर ब्राह्मण घर पकाकर खाले तौ वह भोजनके योग्य है, यह मनुजीका वचन है ॥ २० ॥ यदि आपत्तिके समयमें ब्राह्मणने शूद्रके यहां भोजन करलिया हो तौ वह मनके पश्चात्तापसेही शुद्ध होजाताहै, और फिर एकवार द्रुपदा मन्त्रका जप करै ॥ २१ ॥

दासनापितगोपालकुलमित्रार्द्धसीरिणः ॥
एते शूद्रेषु भोज्यान्ना यश्चात्मानं विधीयते ॥ २२॥

दास, नाई, गोपाल कुलका मित्र अर्द्धसीरी इन सबके यहांका और अपने आप स्वयं इस भांति कहदे कि मैं आपका हूं, उसके यहांका अन्न भोजन करनेके योग्य है ॥ २२ ॥

शूद्रकन्यासमुत्पन्नो ब्राह्मणेन तु संस्कृतः ॥ असंस्काराद्भवेद्दासः संस्कारादेव नापितः ॥ २३॥ क्षत्रियाच्छूद्रकन्यायां समुत्पन्नस्तु यः सुतः ॥ स गोपाल इति ख्यातो भोज्यो विप्रैर्न संशयः ॥ २४ ॥ वैश्यकन्यासमुद्भूतो ब्राह्मणेन तु संस्कृतः ॥ स ह्यार्द्धिक इति ज्ञेयो भोज्यो विप्रैर्न संशयः ॥ २५ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जो सन्तान ब्राह्मणसे शूद्रकी कन्यामें उत्पन्न हो यदि उसका संस्कार न हो तौ वह दास कहाता है, और जो यदि संस्कार होजाय तौ वह नाई होताहै ॥ २३ ॥ जो पुत्र शूद्रकी कन्यामें क्षत्रियसे उत्पन्न हो, वह गोपाल कहाताहै, उसके यहां ब्राह्मण निस्संदेह भोजन करे ॥ २४ ॥ जो पुत्र ब्राह्मणसे वैश्यकी कन्यामें उत्पन्न हो और उसका संस्कार होजाय उसे आर्द्धिक कहते हैं, उसके यहांभी ब्राह्मणको भोजन करनेमें कुछ दोष नहीं है ॥ २५ ॥

भांडास्थितमभोज्येषु जलं दधि घृतं पयः ॥ अकामतस्तु यो भुंक्ते प्रायश्चित्तं कथं भवेत् ॥ २६ ॥ ब्राह्मणः क्षत्रियो वैश्यः शूद्रो वा उपसर्पति ॥ ब्रह्मकूर्चोपवासेन याज्यवर्णस्य निष्कृतिः ॥ २७ ॥ शूद्राणां नोपवासः स्याच्छूद्रो दानेन शुद्ध्यति ॥ ब्रह्मकूर्चमहोरात्रं श्वपाकमपि शोधयेत् ॥ २८ ॥

(प्रश्न) जिनके यहांका भोजनकरना अनुचित है उनके पात्रमें रक्खा जल, दही, घी, दूध इनको जो मनुष्य खाता है उसका प्रायश्चित्त किस भांति से हो ? ॥ २६ ॥ (उत्तर) ब्राह्मण क्षत्रिय, वैश्य, और शूद्र यदि यह खालें तौ यज्ञके योग्य तीनों वर्णोंका प्रायश्चित्त ब्रह्मकूर्च उपवास करनेसे शुद्ध होजाता है ॥ २७ ॥ शूद्रको उपवास करना उचित नहीं शूद्र तो दान करनेसेही शुद्ध होजाता है श्वपाक अहोरात्रका उपवास करनेसेही शुद्ध होसकता है ॥ २८ ॥

गोमूत्रं गोमयं क्षीरं दधि सर्पिः कुशोदकम् ॥ निर्दिष्टं पंचगव्यं च पवित्रं पापशोधनम् ॥ २९ ॥ गोमूत्रं कृष्णवर्णायाः श्वेतायाश्चैव गोमयम् ॥ पयश्च ताम्रवर्णाया रक्ताया गृह्यते दधि ॥ ३० ॥ कपिलाया घृतं ग्राह्यं सर्वं कापिलमेव वा ॥ मूत्रमेकपलं दद्यादंगुष्ठार्धं तु गोमयम् ॥ ३१ ॥ क्षीरं सप्तपलं दद्याद्दधि त्रिपलमुच्यते ॥ घृतमेकपलं दद्यात्पलमेकं कुशोदकम् ॥ ३२ ॥ गायत्र्यादाय गोमूत्रं गंधद्वारेति गोमयम् ॥ आप्यायस्वेति च क्षीरं दधिक्राव्णस्तथा दधि ॥ ३३ ॥ तेजोसि शुक्रमित्याज्यं देवस्य त्वा कुशोदकम् ॥ पंचगव्यमृचा पूतं स्थापयेदग्निसन्निधौ ॥ ३४ ॥ आपोहिष्ठेति चालोड्य मानस्तोकेति मंत्रयेत् ॥ सप्तावरास्तु ये दर्भा अच्छिन्नाग्राः शुकत्विषः ॥ ३५ ॥ एतैरुद्धृत्य होतव्यं पंचगव्यं यथाविधि ॥ इरावती इदंविष्णुर्मानस्तोके च शंवती ॥ ३६ ॥ एताभिश्चैव होतव्यं हुतशेषं पिबेद्द्विजः ॥ आलोड्य प्रणवेनैव निर्मंथ्य प्रणवेन तु ॥ ३७ ॥ उद्धृत्य प्रणवेनैवं पिबेच्च प्रणवेन तु ॥ यत्त्वगस्थिगतं पापं देहे तिष्ठति देहिनाम् ॥ ३८ ॥ ब्रह्मकूर्चं दहेत्सर्वं यथैवाग्निरिंधनम् ॥ पवित्रं त्रिषु लोकेषु देवताभिरधिष्ठितम् ॥ ३९ ॥ वरुणश्चैव गोमूत्रे गोमये हव्यवाहनः ॥ दध्नि वायुः समुद्दिष्टः सोमः क्षीरे घृते रविः ॥ ४० ॥

गोमूत्र, गोबर, दूध, दही, घी, कुशाका जल यही सम्पूर्ण पापोंका नाशकारी पवित्र पंचगव्य कहाता है ॥ २९ ॥ काली गौका मूत्र, सफेद गौका गोबर, तांबेके रंगकी गौका दूध, लाल गौका दही, ॥ ३० ॥ कपिला गौका घी, अथवा सम्पूर्ण वस्तुऐं कपिलाहीकी लेले; एक पल गोमूत्र, आधे अंगूठेभर गोमय, ॥ ३१ ॥ सात पल दूध, तीन पल दही, एक पल घी और एक पल कुशाका जल हो ॥ ३२ ॥ गायत्री पढकर गोमूत्र ग्रहण करै, "गंधद्वारां" इस मंत्रसे गोबर "आप्यायस्व" इस मंत्रसे दूध "दधिक्राव्ण" इससे दही ले ॥ ३३ ॥ "तेजोसिशुक्रं" इस मंत्रसे घी ले "देवस्य त्वा" इस मंत्रसे कुशाका जल ले इसभाँति ऋचाद्वारा पवित्रकिये

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पंचगव्यको अग्नि के सन्मुख रक्खै ॥ ३४ ॥ "आपोहिष्ठा" इस मंत्रसे चलावे "मानस्तोके" इस मंत्रसे मथै, क्रमसे कम सात, और तोतेके समान रंगवाली अग्रभागयुक्त ॥ ३५ ॥ उन कुशाओंसे विधिसहित उठाकर पंचगव्यका हवन करै "इरावती" "इदंविष्णु" "मानस्तोके" "शंवती" ॥ ३६ ॥ इन ऋचाओंसे हवन करै और शेषको ब्राह्मण पान करै, ओंकारसेही चलाकर और ओंकारसेही मथकर ॥ ३७ ॥ ओंकारसेही उठावै और ओंकारसेही पिये । जो त्वचा और अस्थियोंमें देहधारियोंका पाप स्थित है ॥ ३८ ॥ ब्रह्मकूर्च उसको इस भांति दग्ध करदेता है जिसभांति ईंधनको अग्नि भस्म करदेती है; यह पंचगव्य तीनों लोकोंको पवित्र करनेवाला और देवताओंसे अधिष्ठित है कारण कि ॥ ३९ ॥ वरुण गोमूत्रमें, अग्नि गोवरमें, पवन दहीमें, चंद्रमा दूधमें, और सूर्य घीमें निवास करते हैं ॥ ४० ॥

पिबतः पतितं तोयं भाजने मुखनिःसृतम् ॥
अपेयं तद्विजानीयाद्भुक्त्वा चांद्रायणं चरेत् ॥ ४१ ॥

यदि मनुष्यके जल पीतेहुए समयमें मुँहमेंसे जल निकलकर पात्रमें गिरपडै तौ वह जल पीने योग्य नहीं रहता;और जो यदि उसे पीभी ले तौ वह चांद्रायण व्रतकरनेसे शुद्ध होता है॥४१॥

कूपे च पतितं दृष्ट्वा श्वसृगालौ च मर्कटम् ॥ अस्थिचर्मादिपतितः पीत्वाऽमेध्या अपो द्विजः ॥ ४२ ॥ नारं तु कुणपं काकं विड्वराहं खरोष्ट्रकम् ॥ गावयं सौप्रतीकं च मायूरं खड्गकं तथा ॥४३॥ वैयाघ्रमार्क्षं सैंहं वा कूपे यदि निमज्जति॥ तडागस्याऽप्यदुष्टस्य पीतं स्यादुदकं यदि ॥ ४४ ॥ प्रायश्चित्तं भवेत्पुंसः क्रमेणैतेन सर्वशः ॥ विप्रः शुध्येत्त्रिरात्रेण क्षत्रियस्तु दिनद्वयात् ॥ ४५ ॥ एकाहेन तु वैश्यस्तु शूद्रो नक्तेन शुद्ध्यति ॥

जिस कुएमें कुत्ता, गीदड, बंदर, अस्थि, चर्म यह गिरगई हो उस कुएके अपवित्र जलको पीनेवाला ब्राह्मण ॥ ४२ ॥ और मनुष्यका शरीर, कौआ, विष्ठा खानेवाला सूकर, गधा, ऊंट, गाय (नीलगाय) हाथी, मोर, गैंडा, ॥ ४३ ॥ भेडिया, रीछ, सिंह, यदि यह कुएमें डूबजायँ, और निषिद्ध तालावके जलको पीनेवाला मनुष्य ॥ ४४ ॥ इन सबका क्रमानुसार प्रायश्चित्त इस भांति है, ब्राह्मण तीनरात्रि उपवास करनेसे शुद्ध होताहै, क्षत्रिय दो दिनके उपवास करनेसे शुद्ध होजाताहै ॥ ४५॥ वैश्य एकही दिन उपवास करनेसे शुद्ध होताहै, शूद्र नक्तव्रतके करनेसे शुद्ध होजाता है ॥

परपाकनिवृत्तस्य परपाकरतस्य च ॥ ४६ ॥ अपचस्य च भुक्त्वान्नं द्विजश्चांद्रायणं चरेत् ॥ अपचस्य तु यद्दानं दातुरस्य कुतः फलम् ॥ ४७ ॥ दाता प्रतिगृहीता च द्वौ तौ निरयगामिनौ ॥

जो परपाकनिवृत्त (इसका लक्षण आगे कहेंगे) हो उसका अन्न, और जल परपाकरत (इसका लक्षण आगे कहेंगे) हो उसका अन्न ॥४६॥ और अपच (लक्षण आगे कहेंगे) का अन्न खानेसेब्राह्मणको चांद्रायण व्रत करना उचित है, जो मनुष्य अपचको दान देताहै उसका फल दाताको नहीं होता ॥ ४७ ॥ उसका देनेवाला और लेनेवाला यह दोनों नरकको जातेहैं;

गृहीत्वाग्निं समारोप्य पंचयज्ञान्न निर्वपेत् ॥ ४८ ॥परपाकनिवृत्तोऽसौ मुनिभिः परिकीर्तितः ॥ पंचयज्ञान्स्वयं कृत्वा परान्नेनोपजीवति ॥ ४९ ॥ सततं प्रातरुत्थाय परपाकरतस्तु सः ॥ गृहस्थधर्मों यो विप्रो ददाति परिवर्जितः ॥५०॥ ऋषिभिर्धर्मतत्त्वज्ञैरपचः परिकीर्तितः ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अग्निहोत्रका नियम करकै पंचयज्ञ न करै ॥ ४८ ॥ दूसरेके पकायेहुए अन्नको भोजन करै, मुनियोंने इसे परपाकनिवृत्त कहाहै; और जो स्वयं पंचयज्ञ करकै पराये अन्नसे जीवन व्यतीत करतेहैं ॥ ४९ ॥ और नित्य प्रति प्रभातकालको उठकर परपाकमें रत हो उसको परपाकरत कहते हैं गृहस्थ धर्ममें जो ब्राह्मण हो और दान न देता हो ॥ ५० ॥ धर्म तत्त्वके जाननेवाले ऋषियोंने उसे अपच कहाहै,

युगे युगे तु ये धर्मास्तेषु तेषु च ये द्विजाः ॥ ५१ ॥
तेषां निंदा न कर्त्तव्या युगरूपा हि ते द्विजाः ॥

जो धर्म युग २ में स्थित हैं; और जो ब्राह्मण युग २ में हैं ॥ ५१ ॥ उनकी निन्दाकरनी उचित नहीं कारण कि वह ब्राह्मण युगकेही अनुरूप हैं;

हुंकारं ब्राह्मणस्योक्त्वा त्वंकारं च गरीयसः ॥ ५२ ॥ स्नात्वा तिष्ठन्नहःशेषम-भिवाद्य प्रसादयेत् ॥ ताडयित्वा तृणेनापि कंठे बद्धापि वाससा ॥ ५३ ॥ विवादेनापि निर्जित्य प्रणिपत्य प्रसादयेत् ॥ अवगूर्य त्वहोरात्रं त्रिरात्रं क्षिति-पातने ॥ ५४ ॥ अतिकृच्छ्रं च रुधिरे कृच्छ्रोऽभ्यंतरशोणिते ॥

अत्यन्त बडे ब्राह्मणको हुंकार और त्वंकार कहकर ॥ ५२ ॥ जितना दिन शेष हो उतने दिन स्नानकरकै बैठारहै; और उन्हैं नमस्कार कर प्रसन्न करै, यदि कोई तिनुकेसे ब्राह्मणको ताडन करै, या उसके गलेमें वस्त्र बाँधै ॥५३॥ अथवा विद्याके द्वारा उसको पराजित कर दे तौ प्रणामादि द्वारा उस ब्राह्मणको प्रसन्न करना उचित है; और यदि ब्राह्मणको झटकदे तब अहोरात्र उपवास करै, और पृथ्वीपर गिरानेसे तीनरात्रि उपवासकरना उचित है ॥ ५४ ॥ रुधिर निकालनेपर अतिकृच्छ्र व्रत करै और रुधिरके न निकलनेपर कृच्छ्र करना उचित है ॥

नवाहमतिकृच्छ्री स्यात्पाणिपूरान्नभोजनः ॥ ५५ ॥
त्रिरात्रमुपवासः स्यादतिकृच्छ्रः स उच्यते ॥

एक अंजुलीभर अन्नको नौ दिन तक खाय वह अतिकृच्छ्र कहाताहै ॥ ५५ ॥ और तीन रात्रि उपवास करै उसे कृच्छ्र कहतेहैं ॥

सर्वेषामेव पापानां संकरे समुपस्थिते ॥
दशसाहस्रमभ्यस्ता गायत्री शोधनं परम् ॥ ५६ ॥
इति पराशरीये धर्म्मशास्त्रे एकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥

यदि एकहीसमय सम्पूर्ण पापोंका सम्मिलन होजाय तौ॥दश हजार गायत्रीका जप करनेसे परमशुद्धि प्राप्त होतीहै ॥ ५६ ॥इति श्रीपराशरीये धर्मशास्त्रे. भाषाटीकायामेकादशोऽध्यायः ॥११ ॥

द्वादशोऽध्यायः १२.

दुःस्वप्नं यदि पश्येत्तु वांते वा क्षुरकर्मणि ॥
मैथुने प्रेतधूम्रे च स्नानमेव विधीयते ॥ १ ॥

वमन, क्षौरकर्म,मैथुन, प्रेतका धुंआ, इनके स्वप्न देखनेके उपरान्त स्नान करना कहाहै॥१॥

अज्ञानात्प्राश्य विण्मूत्रं सुरासंस्पृष्टमेवच ॥ पुनः संस्कारमर्हंति त्रयो वर्णा द्विजातयः ॥ २ ॥ अजिनं मेखला दंडो भैक्षचर्या व्रतानि च॥निवर्त्तंते द्विजा-तीनां पुनःसंस्कारकर्मणि ॥ ३ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यदि ब्राह्मण अज्ञानतासे विष्ठा, मूत्र, और जिसमें मदिरा मिलीहो इनको खाले तौ तीनों वर्ण फिर संस्कारके योग्य होजातेहैं ॥ २ ॥ द्विजातियोंको पुनर्वार संस्कारके कर्ममें मृगछाला, कौंधनी, दंड, भिक्षाका मांगना यह सम्पूर्ण निवृत्त होजातेहैं ॥ ३ ॥

विण्मूत्रस्य च शुद्ध्यर्थं प्राजापत्यं समाचरेत् ॥
पंचगव्यं च कुर्वीत स्नात्वा पीत्वा शुचिर्भवेत् ॥ ४ ॥

विष्ठा मूत्रका खानेवाला प्राजापत्य करै, और पंचगव्य बनाकर स्नान करकै पंचगव्यके पीनेसे शुद्ध होजाताहै ॥ ४ ॥

जलाग्निपतने चैव प्रव्रज्यानाशकेषु च ॥ प्रत्यवसितवर्णानां कथं शुद्धिर्विधीयते ॥ ५ ॥ प्राजापत्यद्वयेनैव तीर्थाभिगमनेन च ॥ वृषैकादशदानेन वर्णाः शुद्ध्यंति ते त्रयः ॥ ६ ॥

(प्रश्न) जल और अग्निमें पडकर संन्यास धर्मको नष्टकरनेवाले उन धर्मसे पतितहुए वर्णोंकी शुद्धि किसभाँति होतीहै? ॥ ५॥ (उत्तर) दो प्राजापत्यके करनेसे, तीर्थयात्रा करनेसे ग्यारह बैलोंका दानकरनेसे क्रमानुसार तीनोंवर्ण शुद्ध होजातेहैं ॥ ६ ॥

ब्राह्मणस्य प्रवक्ष्यामि वनं गत्वा चतुष्पथे ॥ सशिखं वपनं कृत्वा प्राजापत्यद्वयं चरेत् ॥ ७ ॥ गोद्वयं दक्षिणां दद्याच्छुद्धिं पाराशरोऽब्रवीत् ॥ मुच्यते तेन पापेन ब्राह्मणत्वं च गच्छति ॥ ८ ॥

अब ब्राह्मणका प्रायश्चित्त कहतेहैं; वह ब्राह्मण वनमें जाकर चौराहेमें शिखासमेत मुंडन कराकर दो प्राजापत्य व्रतकरै ॥ ७ ॥ और दक्षिणामें दो गौ दे तब शुद्ध होताहै यह पराशरमुनिका वचन है. और उस पापसे छूटकर फिर ब्राह्मणही होजाताहै ॥ ८ ॥

स्नानानि पंच पुण्यानि कीर्तितानि मनीषिभिः ॥ आग्नेयं वारुणं ब्राह्मं वायव्यं दिव्यमेव च ॥ ९ ॥ आग्नेयं भस्मना स्नानमवगाह्य तु वारुणम् ॥ आपोहिष्ठेति च ब्राह्मं वायव्यं गोरजः स्मृतम् ॥ १० ॥ यत्तु सातपवर्षेण स्नानं तद्दिव्यमुच्यते ॥ तत्र स्नात्वा तु गंगायां स्नातो भवति मानवः ॥ ११ ॥

बुद्धिमानोंने पांच स्नानोंको पवित्र कहाहै १ आग्नेय,२ वारुण,३ ब्राह्म, ४ वायव्य, ५ दिव्य ॥ ९ ॥ जो भस्मसे मार्जन कियाजाताहै वह आग्नेय स्नान कहाताहै, जलसे जो स्नान किया जाताहै वह वारुण कहाताहै, 'आपो हिष्ठा' इन तीन ऋचाओंसे जो स्नान है उसे ब्राह्म कहतेहैं, और जो गौओंकी रजसे स्नान कियाजाताहै उसे वायव्य कहतेहैं ॥ १० ॥ धूंपके निकलनेपर भी जो वर्षा होतीहो उस मेघोंकी बूंदोंसे जो स्नान कियाजाताहै उसे दिव्य स्नान कहतेहैं इस दिव्य स्नानसे मनुष्य गंगास्नानके फलको पाताहै ॥ ११ ॥

स्नातुं यांतं द्विजं सर्वे देवाः पितृगणैः सह ॥ वायुभूतास्तु गच्छंति तृषार्ताः सलिलार्थिनः ॥ १२ ॥ निराशास्ते निवर्त्तंते वस्त्रनिष्पीडने कृते ॥ तस्मान्न पीडयेद्वस्त्रमकृत्वा पितृतर्पणम् ॥ १३ ॥

जिस समय ब्राह्मण स्नान करनेके लिये जाताहै,उस समय पितर और देवता तृष्णासे आतुर हो जलपीनेके लिये वायुरूप धारणकर उसके संगसंग जातेहैं ॥ १२ ॥ यदि वह ब्राह्मण स्नानकर विना तर्पण कियेही वस्त्र निचोड डालै तब वह निराश होकर लौट आतेहैं, इसकारण पितरोंका तर्पण विना किये वस्त्रको पहले कभी न निचोडै ॥ १३ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रोमकूपेष्ववस्थाप्य यस्तिलैस्तर्पयेत्पितॄन् ॥ तर्पितास्तेन ते सर्वे रुधिरेण मलेन च ॥ १४ ॥ अवधूनोति यः केशान्स्नात्वा प्रस्रवतो द्विजः ॥ आचामेद्वा जलस्थोपि स बाह्यः पितृदैवतैः ॥ १५ ॥

जो मनुष्य रोमोंके छिद्रोंको पोंछकर पितरोंका तर्पण करताहै उसनें मानों रुधिर और मलसे पितरोंको तृप्तक्रिया ॥ १४ ॥ जो ब्राह्मण स्नान करनेके पीछे केशोंकों झाडताहै या उनमेंसे जल टपकाताहै, या जो जलमें बैठकर वा खडे होकर आचमन करताहै, वह मनुष्य पितर औरं देवताओंके कर्म करने योग्य नहींहै ॥ १५ ॥

शिरः प्रावृत्य कंठं वा मुक्तकक्षशिखोऽपि वा ॥
विना यज्ञोपवीतेन आचांतोऽप्यशुचिर्भवेत् ॥ १६ ॥

जो मनुष्य शिर वा कंठको फेरकर और लम्बी शिखाको खोलकर, या जनेऊके विना आचमन करता है वह आचमन करकैभी शुद्ध नहीं होता, अर्थात् अशुद्धही रहताहै ॥ १६ ॥

जले स्थलस्थो नाचामेज्जलस्थश्चेद्बहिः स्थले ॥
उभे स्पृष्ट्वा समाचामेदुभयत्र शुचिर्भवेत् ॥ १७ ॥

मनुष्य स्थलमें बैठकर जल में और जलमें बैठकर स्थलमें आचमन न करै परन्तु दोनों जगह बैठा दोनों जगहही आचमन करनेसे शुद्ध होताहै ॥ १७ ॥

स्नात्वा पीत्वा क्षुते सुप्ते भुक्त्वा रथ्योपसर्प्पणे ॥
आचांतः पुनराचामेद्वासो विपरिधाय च ॥ १८ ॥

आचमनकरनेके पीछे, स्नानकरनेके उपरान्त जलपीनेके पीछे, छींकनेके उपरान्त सो कर उठनेके पीछे, खानेके पीछे, या गलीमें चलनेके पीछे वा वस्त्र पहननेके पीछे फिर आचमन करले ॥ १८ ॥

क्षुते निष्ठीवने चैव दंतोच्छिष्टे तथाऽनृते ॥
पतितानां च संभाषे दक्षिणं श्रवणं स्पृशेत् ॥ १९ ॥

छींकना, थूकना, दांतोंका उच्छिष्ट, अथवा झूठ बोलना, व पतितोंके साथ संभाषणकरना इन कर्मोंके करनेसे दाहिने कानका स्पर्श करले ॥ १९ ॥

भास्करस्य करैः पूतं दिवा स्नानं प्रशस्यते ॥
अप्रशस्तं निशि स्नानं राहोरन्यत्र दर्शनात् ॥ २० ॥

दिनका स्नान सूर्यकी किरणोंसे पवित्र है, और राहुके दर्शनोंको छोडकर रात्रिका स्नान अधम कहाता है ॥ २० ॥

मरुतो वसवो रुद्रा आदित्याश्चाथ देवताः ॥
सर्वे सोमे प्रलीयंते तस्माद्दानं तु संग्रहे ॥ २१ ॥

मरुत, आठ वसु, ग्यारह रुद्र और बारह सूर्य और देवता यह ग्रहणके समयमें सब चंद्रमा में लीन होजाते हैं, इससे ग्रहणके समय में दानदेना अवश्य कर्तव्य है ॥ २१ ॥

खलयज्ञे विवाहे च संक्रांतौ ग्रहणे तथा ॥ शर्वर्य्यां दानमस्त्येव नाऽन्यत्र तु विधीयते ॥ २२ ॥ पुत्रजन्मनि यज्ञे च तथा चात्ययकर्मणि ॥ राहोश्च दर्शने दानं प्रशस्तं नान्यदा निशि ॥ २३ ॥ महानिशा तु विज्ञेया मध्यस्थं प्रहरद्वयम् ॥ प्रदोषपश्चिमौ यामौ दिनवत्स्नानमाचरेत् ॥ २४ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खलयाग, विवाह, संक्रांति और ग्रहण इन अवसरोंमें रात्रिके समय में दानकरै; अन्यसमय में न करै ॥ २२ ॥ पुत्रका जन्म, यज्ञ, मृतकका कर्म, राहुका दर्शन इनमें रात्रि के समय में दान उत्तम कहाहै, और कर्मों में नहीं कहा ॥ २३ ॥ रात्रि के बीचमें दो पहरोंको महानिशा कहते हैं, इसकारण सूर्यास्तके और पिछले पहरमें दिनकी समान स्नानकरै ॥ २४ ॥

चैत्यवृक्षश्चितिः पूयश्चंडालः सोमविक्रयी ॥
एतांस्तु ब्राह्मणः स्पृष्ट्वा सवासा जलमाविशेत् ॥ २५ ॥

चैत्यका वृक्ष (इसकी पूजा बौद्धमतवाले करतेहैं) चितारोध, चांडाल, सोमलताका वेचनेवाला; इन सबका स्पर्शकरनेसे ब्राह्मण वस्त्रों सहित स्नान करै ॥ २५ ॥

अस्थिसंचयनात्पूर्वं रुदित्वा स्नानमाचरेत् ॥
अंतर्दशाहे विप्रस्य ह्यूर्ध्वमाचमनं स्मृतम् ॥ २६ ॥

अस्थिसंचयनके पहले रुदनकरकै स्नानकरना उचित है और ब्राह्मणोंको मरनेसे दसदिन उपरान्त आचमनकरना उचित है ॥ २६ ॥

सर्वं गंगासमं तोयं राहुग्रस्ते दिवाकरे ॥
सोमग्रहे तथैवोक्तं स्नानदानादिकर्मसु ॥ २७ ॥

सूर्य या चंद्रमाको जिससमय राहु ग्रसले उससमय सभी जल, स्नान, दान आदि कर्मोंमें गंगाकी समान होजाते हैं ॥ २७ ॥

कुशैः पूतं भवेत्स्नानं कुशेनोपस्पृशेद्द्विजः ॥
कुशेन चोद्धृतं तोयं सोमपानसमं भवेत् ॥ २८ ॥

कुशासे पवित्रहुए जलसे स्नानकरै, और कुशाओंसेही ब्राह्मण आचमनकरै, कारण कि कुशासें उठायाहुआ जल अमृतपानकरनेकी समान होजाताहै ॥ २८ ॥

अग्निकार्यात्परिभ्रष्टाः संध्योपासनवर्जिताः ॥ वेदं चैवानधीयानाः सर्वे ते वृषलाः स्मृताः ॥ २९ ॥ तस्माद्वृषलभीतेन ब्राह्मणेन विशेषतः ॥ अध्येतव्योऽप्येकदेशो यदि सर्वं न शक्यते ॥ ३० ॥ शूद्रान्नरसपुष्टस्याधीयमानस्य नित्यशः ॥ जपतो जुह्वतो वापि गतिरूर्ध्वा न विद्यते ॥ ३१ ॥

जो ब्राह्मण अग्निहोत्रसे भ्रष्ट होगये हैं और जो संध्याउपासनासे वर्जित हैं; जो वेदको नहीं पढते उनको शूद्र कहाहै॥२९ ॥ इसकारण शूद्रहोनेके भयसे यदि ब्राह्मण सब वेदोंको न पढसकै तौ एक वेदको तौ अवश्यही पढै ॥ ३० ॥ शूद्रके अन्नसे पुष्टहोकर जो ब्राह्मण नित्य वेदपाठ हवन और जप करता है परन्तु तौभी उसको सद्गति नहीं प्राप्तहोती ॥ ३१ ॥

शूद्रान्नं शूद्रसंपर्कः शूद्रेण तु सहासनम् ॥ शूद्राज्ज्ञानागमश्चापि ज्वलंतमपि पातयेत् ॥ ३२ ॥ यः शूद्र्या पाचयेन्नित्यं शूद्री च गृहमेधिनी ॥ वर्जितः पितृदेवेभ्यो रौरवं याति स द्विजः ॥ ३३ ॥ मृतसूतकपुष्टांगं द्विजं शूद्रान्नभोजिनम् ॥ अहं तं न विजानामि कां कां योनिं गमिष्यति ॥३४॥ गृध्रो द्वादशजन्मानि दशजन्मानि सूकरः॥श्वयोनौ सप्तजन्मानि इत्येवं मनुरब्रवीत्॥३५॥

शूद्रका अन्न, शूद्रके साथ मेल, शूद्रके साथ एकजगह बैठना, शूद्रसे ज्ञान लेना, यह प्रतापवान मनुष्यकोभी पतित करदेते हैं॥३२॥जो ब्राह्मण शूद्रीसे भोजन बनवाताहै,या जिस्की स्त्री शूद्रीहो;वह ब्राह्मण पितर और देवताओंसे वर्जित है,और अन्तमें रौरव नरकको जाताहै॥३३॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

॥ ३३ ॥ मृतकके सूतकमें खानेसे जिसका अंग पुष्टहुआहो, और जो शूद्रके यहांका न भोजन करता हो वह न जाने किस २ योनिमें जन्म लेताहै ॥ ३४ ॥ परन्तु मनुने इस ति कहाहै कि बाहर जन्मोंतक गीध, दश जन्मोंतक सूकर सात जन्मतक वह मनुष्य की योनिमें जन्म लेताहै ॥ ३५ ॥

दक्षिणार्थं तु यो विप्रः शूद्रस्य जुहुयाद्धविः ॥
ब्राह्मणस्तु भवेच्छूद्रः शूद्रस्तु ब्राह्मणो भवेत् ॥ ३६ ॥

जो ब्राह्मण दक्षिणाके निमित्त शूद्रकी हविका हवन करताहै; वह ब्राह्मण शूद्र होताहै; र वह शूद्र ब्राह्मण होताहै ॥ ३६ ॥

मौनव्रतं समाश्रित्य आसीनो न वदेद्द्विजः ॥ भुंजानो हि वदेद्यस्तु तदन्नं परिवर्जयेत् ॥ ३७ ॥ अर्द्धभुक्ते तु यो विप्रस्तस्मिन्पात्रे जलं पिबेत् ॥ हतं दैवं च पित्र्यं च आत्मानं चोपघातयेत् ॥ ३८ ॥ भुंजानेषु तु विप्रेषु योऽग्रे पात्रं विमुंचति ॥ स मूढः स च पापिष्ठो ब्रह्मघ्नः स खलूच्यते ॥ ३९ ॥ भाजनेषु च तिष्ठत्सु स्वस्ति कुर्वंति ये द्विजाः ॥ न देवास्तृप्तिमायांति निराशाः पितरस्तथा ॥ ४० ॥ अस्नात्वा वै न भुंजीत तथैवाग्निमपूज्य च ॥ न पर्णपृष्ठे भुंजीत रात्रौ दीपं विना तथा ॥ ४१ ॥

मौन व्रतको धारणकर जो ब्राह्मण बैठे वह न बोलै; और जो भोजन करतेमें बोलै तौ उस न्न को त्याग दे ॥ ३७ ॥ आधा भोजन करनेके उपरान्त जो ब्राह्मण उसी भोजनके पात्रमें ल पीताहै; उसके देवता और पितरोंके किये हुए सम्पूर्ण कर्म नष्ट होजाते हैं;और वह स्वयं पनी आत्माकोभी नष्ट करताहै ॥ ३८ ॥ जो ब्राह्मणोंके भोजन करते समयमें पहले पात्र डकर खडा होजाताहै; वह मूढ महापापी और ब्रह्महत्यारा कहाताहै ॥ ३९ ॥ जो ब्राह्मण जन करते समयमें स्वस्ति कहते हैं उनपर देवता तृप्त नहीं होते, और उसके पितरभी राश होजातेहैं ॥ ४० ॥ स्नान विना किये, और विना अग्निका पूजन किये भोजन करना चित नहीं और रात्रिके समयमें पत्तेकी पीठपर दीपक के विना भोजन न करै ॥ ४१ ॥

गृहस्थस्तु दयायुक्तो धर्ममेवानुचिंतयेत् ॥ पोष्यवर्गार्थसिद्ध्यर्थं न्यायवर्ती स बुद्धिमान् ॥ ४२ ॥ न्यायोपार्जितवित्तेन कर्त्तव्यं ह्यात्मरक्षणम् ॥ अन्यायेन तु यो जीवेत्सर्वकर्मबहिष्कृतः ॥ ४३ ॥ अग्निचित्कपिला सत्री राजा भिक्षुर्महोदधिः ॥ दृष्टमात्राः पुनंत्येते तस्मात्पश्येत्तु नित्यशः ॥ ४४ ॥ अरणिं कृष्णमार्जारं चन्दनं सुमणिं घृतम् ॥ तिलान्कृष्णाजिनं छागं गृहे चैतानि रक्षयेत् ॥ ४५ ॥

दयावान् गृहस्थ सर्वदा धर्मकी चिन्ताकरै, और अपने पुत्र वा भृत्यआदिके प्रयोजनकी सिद्धिके लिये बुद्धिमान् सर्वदा न्यायका वर्ताव करता रहै ॥ ४२ ॥ न्यायसे उपार्जन किये ए धनसे अपनी रक्षाकरै, जो अन्यायसे जीवन व्यतीत करताहै,वह धर्मोंसे रहित है॥ ४३॥ ग्निसे हवन करनेवाला, कपिलागौ, यज्ञकरनेवाला, राजा, भिक्षुक, समुद्र; यह देखनेसेही वित्र करतेहैं, इसकारण इनका दर्शन सर्वदा करै ॥ ४४ ॥ अरणि, काला विलाव, चन्दन; त्तम मणि, घी, तिल, काली मृगछाला, बकरी इनकी रक्षा अपने घरमें करै ॥ ४५ ॥

गवां शतं सैकवृषं यत्र तिष्ठत्ययंत्रितम् ॥ तत्क्षेत्रं दशगुणितं गोचर्म परिकीर्तितम् ॥ ४६ ॥ ब्रह्महत्यादिभिर्मर्त्यो मनोवाक्कायकर्मभिः ॥ एतद्गोचर्मदानेन मुच्यते सर्वकिल्बिषैः ॥ ४७ ॥ कुटुंबिने दरिद्राय श्रोत्रियाय विशेषतः ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यद्दानं दीयते तस्मै तद्दानं शुभकारकम् ॥ ४८ ॥ वापीकूपतडागाद्यैर्वाजपेय-शतैर्मखैः ॥ गवां कोटिप्रदानेन भूमिहर्ता न शुद्धयति ॥ ४९ ॥

जिस स्थानपर सौ गौ और एक बैल यह दशगुने अर्थात् दशहजार गौ और सौ बैल यह विना बाँधे टिकैं उस क्षेत्रको गोचर्म कहते हैं ॥ ४६ ॥ जो मनुष्य इस गोचर्ममात्र पृथ्वीका दानकरताहै वह मनुष्य मन वचन देह और कर्मोंसे कियेहुए ब्रह्महत्याइत्यादि पापोंसे छूटजाताहै ॥४७॥ जो मनुष्य कुटुंबी, दरिद्री विशेष करकै वेदपाठी इनको दान देताहै, वह शुभका करनेवाला है ॥ ४८ ॥ जो मनुष्य पृथ्वीहरण करताहै वह बावडी, कूप ताला‍व और सौ२ वाजपेय यज्ञोंके करनेसे और कोटि गौओंके दान करनेसे भी शुद्ध नहीं होता ॥ ४९ ॥

अष्टादशदिनादर्वाक्स्नानमेव रजस्वला ॥ अत ऊर्ध्वं त्रिरात्रं स्यादुशना मुनि-रब्रवीत् ॥ ५० ॥ युगं युगद्वयं चैव त्रियुगं च चतुर्युगम् ॥ चण्डालसूतिकोद-क्यापतितानामधः क्रमात् ॥ ५१ ॥ ततः सन्निधिमात्रेण सचैलं स्नानमाच-रेत् ॥ स्नात्वावलोकयेत्सूर्यमज्ञानात्स्पृशते यदि ॥ ५२ ॥

यदि जो रजस्वला स्त्री रजोदर्शनसे अठारहदिन पहले पूर्व कहे हुए चांडालआदिका स्पर्श करले तौ स्नानही करै; और अठारह दिनसे आगे तीनरात उपवास करै यह उशना मुनिका वचनहै ॥ ५० ॥ यदि क्रमानुसार चार दिन,आठदिन बारह दिन सोलहदिन चांडाल सूतिका रजस्वला पतित इनके ॥ ५१ ॥ निकट रहजाय तौ उसको वस्त्रोंसहित स्नानकरना उचित है, और यदि अज्ञानसे स्पर्शभी करलियाहो तौ स्नान करकै सूर्यका दर्शन करै ॥ ५२ ॥

विद्यमानेषु हस्तेषु ब्राह्मणो ज्ञानदुर्बलः ॥
तोयं पिबति वक्त्रेण श्वयोनौ जायते ध्रुवम् ॥ ५३ ॥

जो ब्राह्मण हाथोंके होतेहुएभी पात्रमें मुखलगाकर जल पीताहै उसको अवश्यही कुत्तेकी योनि मिलतीहै ॥ ५३ ॥

यस्तु क्रुद्धः पुमान्ब्रूयाज्जायायास्तु ह्यगम्यताम् ॥ पुनरिच्छति चेदेनां विप्रमध्ये तु श्रावयेत् ॥ ५४ ॥ श्रांतः क्रुद्धस्तमोंऽधो वा क्षुत्पिपासाभयार्दितः ॥ दानं पुण्य-मकृत्वा वा प्रायश्चित्तं दिनत्रयम् ॥ ५५ ॥ उपस्पृशेत्त्रिषवणं महानद्युपसंगमे ॥ चीर्णांते चैव गां दद्याद्ब्राह्मणान्भोजयेद्दश ॥ ५६ ॥

जो मनुष्य क्रोधित होकर अपनी स्त्रीसे इसभांति कहताहै कि तू मेरे गमनकरने योग्य नहीं है, और फिर किसी समय उस स्त्रीकी इच्छा करै, तौ वह अपनी यह बात ब्राह्मणोंके निकट प्रकाश करदे ॥ ५४ ॥ थका, या क्रोधी, अथवा अज्ञानतासे अंधा; क्षुधातृष्णासे दुःखी उस ब्राह्मणको दान पुण्यकरना उचित नहीं वह केवल तीनदिनतकही प्रायश्चित्त करै ॥ ५५ ॥ और तीनों समयमें महानदीके संगममें स्नानकर आचमन करै, और प्रायश्चित्त करनेके उपरान्त त्रिकाल गोदान करै, और दश ब्राह्मणोंको जिमावै ॥ ५६ ॥

दुराचारस्य विप्रस्य निषिद्धाचरणस्य च ॥
अन्नं भुक्त्वा द्विजः कुर्याद्दिनमेकमभोजनम् ॥ ५७ ॥

जो ब्राह्मण दुराचारी और निषिद्ध आचरण करनेवाले ब्राह्मणके अन्नको खाताहै वह एकदिन भोजन न करै ॥ ५७ ॥

सदाचारस्य विप्रस्य तथा वेदांगवेदिनः ॥
भुक्त्वान्नं मुच्यते पापादहोरात्रांतरान्नरः ॥ ५८ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant 2

और जो मनुष्य उत्तम आचरण करनेवाले वेद वेदांतके जाननेमें निपुण ब्राह्मणके अन्नको खाताहै वह मनुष्य अहोरात्रके उपरान्त सम्पूर्ण पापोंसे मुक्त होजाताहै ॥ ५८ ॥

ऊर्ध्वोच्छिष्टमधोच्छिष्टमंतरिक्षमृतौ तथा ॥ कृच्छ्रत्रयं प्रकुर्वीत अशौचमरणे तथा ॥ ५९ ॥ कृच्छ्रं देव्ययुतं चैव प्राणायामशतद्वयम् ॥ पुण्यतीर्थे नार्द्रशिराः स्नानं द्वादशसंख्यया ॥ ६० ॥ द्वियोजनं तीर्थयात्रा कृच्छ्रमेकं प्रकल्पितम् ॥

यदि कोई ऊर्ध्वोच्छिष्ट अवस्थामें मरजाय, या अधोच्छिष्ट अवस्थामें मरजाय, या अन्तरिक्षमें मरजाय उसके अशौचके अन्नको और मृतकके अशौचके भोजनको जो मनुष्य खाताहै वह तीनकृच्छ्र व्रतकरनेसे शुद्ध होताहै ॥ ५९ ॥ दशहजार गायत्री, दोसौ प्राणायाम, और पवित्र तीर्थमें बारहबार शिर भिगोकर स्नान, यह एककृच्छ्रका फल देतेहैं ॥ ६० ॥ और दो योजनतक तीर्थकी यात्राकोभी एक कृच्छ्र कहाहै;

गृहस्थः कामतः कुर्याद्रेतसः स्खलनं यदि ॥ ६१ ॥
सहस्रं तु जपेद्देव्याः प्राणायामैस्त्रिभिः सह ॥

जो गृहस्थी पुरुष अपने वीर्यको जानकर गिराताहै ॥ ६१ ॥ वह तीन प्राणायामकर एक हजार गायत्रीका जप करै.

चतुर्विद्योपपन्नस्तु विधिवद्ब्रह्मघातके ॥ ६२ ॥ समुद्रसेतुगमनं प्रायश्चित्तं समादिशेत् ॥ सेतुबंधपथे भिक्षां चातुर्वर्ण्यात्समाचरेत् ॥ ६३ ॥ वर्जयित्वा विकर्मस्थांश्छत्रोपानहवर्जितः ॥ अहं दुष्कृतकर्मा वै महापातककारकः ॥ ६४ ॥ गृहद्वारेषु तिष्ठामि भिक्षार्थी ब्रह्मघातकः ॥ गोकुलेषु वसेच्चैव ग्रामेषु नगरेषु च ॥ ६५ ॥ तपोवनेषु तीर्थेषु नदीप्रस्रवणेषु च ॥ एतेषु ख्यापयन्नेनः पुण्यं गत्वा तु सागरम् ॥ ६६ ॥ दशयोजनविस्तीर्णं शतयोजनमायतम् ॥ रामचंद्रसमादिष्टं नलसंचयसंचितम् ॥ ६७ ॥ सेतुं दृष्ट्वा समुद्रस्य ब्रह्महत्यां व्यपोहति ॥ सेतुं दृष्ट्वा विशुद्धात्मा त्ववगाहेत सागरम् ॥ ६८ ॥ यजेत वाश्वमेधेन राजा तु पृथिवीपतिः ॥ पुनः प्रत्यागतो वेश्म वासार्थमुपसर्पति ॥ ६९ ॥ सपुत्रः सहभृत्यश्च कुर्याद्ब्राह्मणभोजनम् ॥ गाश्चैवैकशतं दद्याच्चातुर्विद्येषु दक्षिणाम् ॥ ॥ ७० ॥ ब्राह्मणानां प्रसादेन ब्रह्महा तु विमुच्यते ॥

जो चारों विद्याओंसे युक्त हो यदि उसने ब्रह्महत्या की हो ॥ ६२ ॥ उसे सेतुबंध रामेश्वर जानेका प्रायश्चित्त बताना कर्तव्य है;और वह सेतुबंध जानेके समय चारों वर्णोंसे भिक्षा मांगै ॥ ६३ ॥ केवल कुकर्म करनेवाले मनुष्योंसे भिक्षा न मांगै, उससमय जूता और छत्रीको न रक्खै और वह भिक्षाके समयमें यह कहै कि मैंने अत्यन्त दुष्कर्म कियाहै, मैं महापापी हूं ॥ ६४ ॥ मैंने ब्रह्महत्या कीहै भिक्षाके निमित्त "तुम्हारे द्वारपर खडाहूं" और गोशाला, ग्राम, नगर इनमें निवास करै ॥ ६५ ॥ तपोवनके तीर्थोंमें वसै; और जहां नदीके प्रवाह हैं वहां इनसे अपने पापोंको प्रगट करताहुआ पवित्र समुद्रपर जाय ॥ ६६ ॥ दश योजन चौडे और सौ योजन लम्बे श्रीरामचंद्रजीकी आज्ञासे नल वानरके बनायेहुए ॥ ६७ ॥ समुद्रके दर्शनकरै तब उसीसमय ब्रह्महत्याके पापसे मुक्त होजाता है इसके उपरान्त समुद्रके पुलका दर्शनकर पवित्रमन हो स्नानकरै ॥ ६८ ॥ और यदि पृथ्वीपति राजाही ब्रह्महत्या करै तौ वह अश्वमेध यज्ञको करै, इसके उपरान्त घर लौटकर आवै और निवासकरै ॥ ६९ ॥ इसके पीछे पुत्र और भृत्योंसमेत ब्राह्मणोंको भोजन करावै; और चारों विद्याओंके जाननेवाले ब्राह्मणोंको सौ गौ दक्षिणामें दे ॥ ७० ॥ ब्राह्मणोंकी प्रसन्नतासेही मनुष्य ब्रह्महत्याके पापसे छूटजाताहै;

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विंध्यादुत्तरतो यस्य संवासः परिकीर्तितः ॥ ७१ ॥
पराशरमतं तस्य सेतुबंधस्य दर्शनात् ॥

जो विंध्याचलसे उत्तरमें निवास करताहै ॥ ७१ ॥ उसे पराशर ऋषिने सेतुबंधका दर्शन करना कहाहै;

सवनस्थां स्त्रियं हत्वा ब्रह्महत्याव्रतं चरेत् ॥ ७२ ॥

जो मनुष्य प्रसूता स्त्रीको मारताहै; वह ब्रह्महत्यामें कहेहुए व्रतका आचरण करै ॥ ७२ ॥

सुरापश्च द्विजः कुर्यान्नदीं गत्वा समुद्रगाम् ॥ चांद्रायणं ततश्चीर्णे कुर्याद्ब्राह्मणभोजनम् ॥ ७३ ॥ अनडुत्सहितां गां च दद्याद्विप्रेषु दक्षिणाम् ॥

जो ब्राह्मण मदिरा पीताहै वह समुद्रगामिनी नदीके तटपर जाकर चांद्रायण व्रतकर ब्राह्मणोंको भोजन करावै ॥ ७३ ॥ और एक बैल और एक गौ ब्राह्मणोंको दक्षिणामें दे;

सुरापानं सकृत्कृत्वा अग्निवर्णां सुरां पिबेत् ॥ ७४ ॥
स पावयेदिहात्मानमिह लोके परत्र च ॥

एकवार मदिराको पीकर, अग्निके समान रंगवाली मदिराका जो पान करताहै ॥ ७४ ॥ वह इस लोक और परलोकमें अपने आत्माको पवित्रकरताहै;

अपहृत्य सुवर्णं तु ब्राह्मणस्य ततः स्वयम् ॥ ७५ ॥ गच्छेन्मुशलमादाय राजानं स्ववधाय तु ॥ हतः शुद्धिमवाप्नोति राज्ञाऽसौ मुक्त एव च ॥ ७६ ॥ कामतस्तु कृतं यत्स्यान्नान्यथा वधमर्हति ॥

ब्राह्मणके सुवर्णको चुरानेवाला स्वयंही ॥ ७५ ॥ मूसलको अपने मारनेके लिये लेकर राजाके निकट जाय, फिर राजासे प्रहार खाकर वह शुद्ध होजाताहै, और इसके उपरान्त उसकी मुक्ति भी होजातीहै ॥ ७६ ॥ यदि जानकर अपराध कियाहै तब तौ वह मारनेके योग्य है, इसके अतिरिक्त नहीं;

आसनाच्छयनाद्यानात्संभाषात्सहभोजनात् ॥ ७७ ॥ संक्रामंतीह पापानि तैलबिंदुरिवांभसि ॥ चांद्रायणं यावकं च तुलापुरुष एव च ॥ ७८ ॥ गवां चैवानुगमनं सर्वपापप्रणाशनम् ॥

एक आसनपर बैठनेसे, सोनेसे, गमन करनेसे, बोलनेसे, भोजनसे ॥ ७७ ॥ पाप इसभांति लिप्त होतेहैं जिसभांति जलमें पडीहुई तेलकी बूंद; चांद्रायण, यावकभोजन, तुलापुरुषव्रत ॥ ७८ ॥ और गौओंके पीछे जाना, इससे सम्पूर्ण पाप नाश होजातेहैं;

एतत्पाराशरं शास्त्रं श्लोकानां शतपंचकम् ॥ ७९ ॥ द्विनवत्या समायुक्तं धर्मशास्त्रस्य संग्रहः ॥ यथाध्ययनकर्माणि धर्मशास्त्रमिदं तथा ॥ ८० ॥ अध्येतव्यं प्रयत्नेन नियतं स्वर्गकामिना ॥

इति श्रीपराशरीये धर्मशास्त्रे सकलप्रायश्चित्तनिर्णयो नामद्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥

यह पांचसौ बानवे श्लोकयुक्त पराशर मुनिके कहेहुए धर्मशास्त्रका संग्रह है ॥७९ ॥ जिसभांति अध्ययनके कर्म हैं उसी भांति यह धर्मशास्त्र है ॥ ८० ॥ स्वर्गकी अभिलाषा करनेवाले पुरुषोंको इसका पाठ यत्नसहित करना कर्तव्य है ॥

इति पराशरीये धर्मशास्त्रे सकलप्रायश्चित्तनिर्णये पं० श्यामसुन्दरलालत्रिपाठिकृत भाषाटीकायां द्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥

पाराशरस्मृतिः समाप्ता ॥ ११ ॥

खेमराज श्रीकृष्णदास, "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेस–मुंबई.
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विक्रय पुस्तकें-(धर्मशास्त्रग्रंथाः)

मनुस्मृति-सटीक कुल्लूकभट्टकृत संस्कृतटीकासहित .... १।।

मनुस्मृति-सान्वय भाषाटीकासहित इसमें भगवान् मनुजीके कहे हुए ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्रोंके यथोचित धर्म और गृहस्थ, ब्रह्मचर्य, वानप्रस्थ और संन्यास आश्रमके कर्म और राजाओंके, नीतियुक्त, प्रजापालन और अधर्मियोंके दंड इत्यादिका निर्णय अशौच-निर्णय आदि अनेक विषय संयुक्त है ग्लेज कागद ... .

,, तथा रफ् ....

याज्ञवल्क्यस्मृति-पं० मिहिरचंद्रकृत मिताक्षरानाम पद योजना भावार्थ और तात्पर्यार्थ टिप्पणी तथा भाषाटीकासहित जिसमें आचाराध्याय, व्यवहाराध्याय, प्रायश्चित्ताध्याय आदि तीन अध्यायमें राजाओंके नीतियुक्त प्रजापालन करनेके धर्म और अधर्मियोंके दंड देने और ब्राह्मणादि चारों वर्णोंके और गृहस्थादिचारों आश्रमके धर्म और व्रतादिकोंके धर्म इत्यादि अनेकविषयसे संयुक्तहै ....

अष्टादशस्मृति-मूलमात्र उपरोक्तविषयमें सर्वधर्मनिरूपण किया गयाहै ....

,, तथा भा० टी० छपके तयार है ... ...

निर्णयामृत-मूलमात्र बारहों मासके तिथिव्रत, श्राद्धादिका निर्णयहै ....

धर्मसिंधु-मूलमात्र ....

धर्मसिंधु-पं० मिहिरचन्द्रजीकृत भाषाटीका समेत इसके तीन परिच्छेदहैं और संक्रांति मास तिथि आदिका सामान्यनिर्णय, चैत्रादिबारहों मासोंमें आनेवाली तिथियोंके व्रतादिका निर्णय गर्भाधानादि सोलह संस्कारोंका विधान आदिक विधि देवप्रतिष्ठादि श्राद्ध विचार अशौचनिर्णय आदि कहा गया है ....

निर्णयसिंधु-टिप्पणीसहित अत्युत्तम ग्लेज ... .

तथा रफ् कागज ... .

निर्णयसिंधु-पं० ज्वालाप्रसादजीकृत भाषाटीका सहित इसमें तिथिव्रत, व्रतोंका उद्यापन इत्यादिका निर्णय लिखा गया है धर्मसिंधुके समस्त विषय इसमें हैं निर्णय विषय इससे उत्तम दूसरा ग्रंथ नहीं है ग्लेज ....

,, ,, तथा रफ् ....

स्मृतिरत्नाकर-धर्मनिरूपण, आदिक अभ्युक्षणादि सप्रमाण निर्णय ... ..

धर्मप्रदीप-सप्रमाण बारह मासके तिथ्यादि निर्णय ....

जहांगी : : : २३६४
बुलन्दशहर (उ०प्र०)

खेमराज श्रीकृष्णदा

"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-मुद्रणालयाध्यक्षः-मुंबयी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh